इलेक्ट्रॉनिकी एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय
MINISTRY OF ELECTRONICS AND INFORMATION TECHNOLOGY
सत्यमेव जयते

Digital India
Power To Empower

NIC एनआईसी National Informatics Centre

जागृति

एक कदम सृजन की ओर ...

सुश्री दीपशिखा रथ

सूचीपत्र

प्रबंध विभाग

क्र. सं.	विषय	लेखक / लेखिका	पृष्ठ
1.	श्री सत्य साई बाबा के संदेश : मानवता के लिए मार्गदर्शन	डॉ अशोक कुमार होता	2
2.	भाषाएँ : मानव जुड़ाव के पुल	श्री जयंत कुमार मिश्र	4
3.	मिट्टी से मेधा तक: राज की कहानी	श्री जागेश्वर साहू	6
4.	राजा, प्रजा और भक्त रानी	श्री सरोज कुमार साहु	7
5.	ईमानदारी ही सर्वश्रेष्ठ नीति	डॉ आशीष कुमार महापात्र	8
6.	संतों के साथ दो दिन	श्री किरणचान्द सामन्तराय	10
7.	जागृति	डॉ. अजय केतन सारंगी	14
8.	एक तोते की कहानी	श्री मुहम्मद मुजीबुल्लाह ख़ान	15
9.	डीएनए डेटा स्टोरेज तकनीक: भविष्य की डेटा संग्रहण क्रांति	श्री तपन कुमार बेहेरा	16
10.	अपनी दुनिया की कहानी	श्री विश्वरंजन भुक्ता	18
11.	आधा गिलास पानी	श्री क्षीरोद कुमार साहु	20
12.	केरल: प्रकृति, संस्कृति और यादों से भरी एक अविस्मरणीय यात्रा	श्री सिद्धार्थ कुमार मंडल	23
13.	API दीवानी “बबली” और Security वाला “बंटी” पागल कौन?	श्री राहुल कुमार सिन्हा	25
14.	माइक्रोसॉफ्ट 365 कॉपायलट (Microsoft 365 Copilot): कार्यक्षमता और नवाचार का एक नया युग	श्री सत्यजीत दाश	27
15.	प्राकृतिक भाषा प्रसंस्करण: नेचुरल लैंग्वेज प्रोसेसिंग या एनएलपी कैसे कंप्यूटर हमारी भाषा समझते हैं	सुश्री ज्योति गुप्ता	28
16.	भविष्य की आवाज़	श्री आदित्य राघव	30
17.	पागल कौन?	सुश्री बिप्साराणी दाश	32
18.	सात्विक आहार का महत्व	श्री शिबाजी राणासिंह	34

सूचीपत्र

प्रबंध विभाग

क्र. सं.	विषय	लेखक / लेखिका	पृष्ठ
19.	सूचना का युद्ध: सच और झूठ के बीच इंसान	श्री दीपक शर्मा	36
20.	विज्ञान और प्रौद्योगिकी	श्री विजय कुमार	37
21.	आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और इसके विभिन्न क्षेत्रों में उपयोग	श्री रजनीश कांत पाण्डेय	40

कविता विभाग

क्र. सं.	विषय	लेखक / लेखिका	पृष्ठ
1.	झुर्रियाँ	सुश्री ममता खमारी	43
2.	कहानी – मृत्यु के बाद	डॉ आशीष कुमार महापात्र	44
3.	दुनिया की है रीत पुरानी	सुश्री संजुक्ता प्रधान	45
4.	एक एल्गोरिथम की मृत्यु	श्री रणजीत कुमार दास	46
5.	कविता	श्री गौरव सिंह	47
6.	जीवन की राह	श्री राहुल पाल	48
7.	पिता का संघर्ष	श्री विजय कुमार	49
8.	कितनी अनमोल है ज़िन्दगी	श्री कमलाकांत बारिक	50
9.	ए. आई. की कहानी, कविता की जुबानी	श्री अजीत कुमार	51
10.	जीवन की राह	श्री बिभूति प्रसाद सतपथी	52
11.	घर की बड़ी बेटी	सुश्री स्वाति स्निग्धा बेहेरा	53
12.	माझी	डॉ. अलका प्रधान	54
13.	कृतज्ञता	सुश्री सुजाता दास	55

राज्य सूचना-विज्ञान अधिकारी का संदेश

हिंदी राष्ट्रभाषा के रूप में न केवल अभिव्यक्ति का माध्यम है, बल्कि यह हमारी सांस्कृतिक पहचान और एकता का सशक्त प्रतीक भी है। तकनीक और सूचना के युग में मातृभाषा के महत्व को और भी गहराई से महसूस किया जा सकता है, क्योंकि भाषा ही वह पुल है जो ज्ञान को जन-जन तक पहुँचाता है।

राष्ट्रीय सूचना विज्ञान केन्द्र, ओड़िशा की वार्षिक हिंदी पत्रिका "जागृति" इसी उद्देश्य को साकार करती है। यह पत्रिका हमारे अधिकारियों एवं कर्मचारियों की सृजनात्मक प्रतिभा को अभिव्यक्त करने का मंच प्रदान करती है। साहित्य, लेख, तकनीकी आलेख और अनुभव-साझा जैसे विविध आयामों के माध्यम से यह पत्रिका न केवल भाषा-प्रेम को प्रोत्साहित करती है, बल्कि रचनात्मकता और नवाचार की चेतना को भी जागृत करती है।

मुझे विश्वास है कि "जागृति" अपनी विविधता, विषय-वस्तु की गहराई और अभिव्यक्ति की संवेदनशीलता से पाठकों को प्रेरित करेगी और हिंदी के प्रचार-प्रसार में महत्त्वपूर्ण योगदान देगी।

मैं इस पत्रिका के संपादकीय मंडल, लेखकों और सभी सहयोगियों को हार्दिक बधाई और शुभकामनाएँ देता हूँ।

हिंदी की मधुर धारा, रचनाओं का संग,
'जागृति' के पन्नों में, झलके नव उमंग।

शब्दों में है शक्ति, विचारों में है उजास,
'जागृति' का संदेश है, हिंदी का ही विकास।

डॉ. अशोक कुमार होता
उप महानिदेशक एवं राज्य सूचना विज्ञान अधिकारी
(एन आई सी) भुवनेश्वर

संपादिका की कलम से ......

हमारे लिए अत्यंत हर्ष का विषय है कि कार्यालय में 'जागृति' एक कदम सृजन की ओर.... पत्रिका का तृतीय अंक प्रकाशित होने जा रहा है। इस पत्रिका में कार्यालय के पदाधिकरियों ने अपनी अभिव्यक्ति को शब्दों में पिरोने की कोशिश की है और प्रत्येक रचना/लेख अपने आप में अनूठा है, इस अर्थ में अनूठा है कि इसमें लेखक के सोच, विचार और भावनाओं का एक समन्वय देखने को मिलता है। अतः यह हमारे रचनाकारों की अभिव्यक्ति का माध्यम होने के साथ साथ व्यक्ति के सोच -विचार को एक नए आयाम प्रदान करती है। इसके अलावा पत्रिका में कार्यालय में हुए साल भर के विभिन्न कार्यक्रमों की झलकियों का समावेश है । हम आशा करते हैं कि यह पत्रिका राजभाषा गति को निरंतर आगे बढ़ाने में मदद करेगी एवं भाषा के रूप में हिन्दी के समृद्ध विरासत को गौरवान्वित महसूस कराएगी।

मैं पुनः सभी रचनाकारों एवं सम्पादन से जुड़े सभी सदस्यों को उनके सराहनीय प्रयास एवं योगदान के लिए बधाई एवं धन्यवाद देती हूँ क्योंकि यह पत्रिका हमारी, आपकी या कहें हम सभी की चेष्टा, निष्ठा एवं प्रतिबद्धता का परिणाम है । भविष्य में पत्रिका को और अधिक स्तरीय बनाने में हम आपकी प्रतिक्रिया और सुझाव की कामना करते हैं।

डॉ. अलका प्रधान

जागृति

एक कदम सृजन की ओर ...

प्रबंध विभाग

श्री सत्य साई बाबा के संदेश : मानवता के लिए मार्गदर्शन

(प्रेम के अवतार के 100 वर्ष पूरे होने के अवसर पर एक भेंट)

डॉ अशोक कुमार होता
उप महानिदेशक एवं राज्य सूचना विज्ञान अधिकारी

मानव जीवन का वास्तविक उद्देश्य केवल भौतिक उपलब्धियों तक सीमित नहीं है, बल्कि आत्मा की शांति, दिव्यता और करुणा की ओर बढ़ना है। बीसवीं शताब्दी में ऐसे अनेक संत और महापुरुष हुए जिन्होंने मानवता को इन शाश्वत सत्यों की याद दिलाई। उनमें से एक प्रमुख नाम है श्री सत्य साई बाबा। उनका जीवन और शिक्षाएँ आज भी करोड़ों अनुयायियों को दिशा दिखा रही हैं। वे न केवल भारत में, बल्कि विश्व के अनेक देशों में सत्य, धर्म, शांति, प्रेम और अहिंसा के संदेशवाहक के रूप में पूजित और सम्मानित हैं।

जीवन परिचय

श्री सत्य साई बाबा का जन्म 23 नवम्बर 1926 को आंध्र प्रदेश के पुट्टपर्थी गाँव में हुआ। उनका वास्तविक नाम था सत्यनारायण राजू। बाल्यकाल से ही उनमें असाधारण आध्यात्मिकता, करुणा और दैवी गुण दिखाई देने लगे। किशोरावस्था में ही उन्होंने स्वयं को शिरडी साई बाबा का अवतार घोषित किया और मानवता की सेवा को अपना धर्म बना लिया।

पुट्टपर्थी जैसा छोटा गाँव उनके जीवन और उपदेशों के कारण विश्व मानचित्र पर विशेष स्थान पा सका। बाबा ने अपना पूरा जीवन निःस्वार्थ सेवा, शिक्षा और स्वास्थ्य के उत्थान को समर्पित किया।

उनके संदेशों का आधार

सत्य साई बाबा ने बार-बार यह बताया कि मनुष्य केवल शरीर नहीं है, बल्कि आत्मा का प्रकाश है। उनका कहना था कि हर इंसान के भीतर दिव्यता विद्यमान है और उसे पहचानकर ही जीवन का उद्देश्य पूरा हो सकता है। उनके उपदेश पाँच मूल्यों पर आधारित थे, जिन्हें उन्होंने "पाँच मानव मूल्य" कहा – सत्य (Truth), धर्म (Righteousness), शांति (Peace), प्रेम (Love), अहिंसा (Non-violence).

ये पाँच सिद्धांत न केवल धार्मिक, बल्कि सामाजिक और व्यावहारिक जीवन के लिए भी आवश्यक हैं।

सेवा ही साधना

श्री सत्य साई बाबा ने कहा – "हाथ सेवा में और मन प्रार्थना में।"

उनके अनुसार ईश्वर की सच्ची उपासना मंदिर या पूजा तक सीमित नहीं है, बल्कि मानवता की सेवा में है।

- अधिक से अधिक लोगों से प्रेम करो, उन्हें और अधिक तीव्रता से प्रेम करो, प्रेम को सेवा में बदलो, सेवा को पूजा के रूप में प्रस्तुत करो ।
- उन्होंने निःस्वार्थ सेवा (Selfless Service) को भक्ति का सर्वोच्च रूप बताया।
- उनके प्रेरणा से लाखों स्वयंसेवक "सेवा दल" के रूप में गरीबों, रोगियों और जरूरतमंदों की मदद करते हैं।
- अस्पताल, विद्यालय और जल-प्रोजेक्ट जैसे उनके कार्य सेवा के आदर्श उदाहरण हैं।

धार्मिक सौहार्द का संदेश

सत्य साई बाबा ने सभी धर्मों को समान रूप से स्वीकार किया। वे कहा करते थे – "धर्म अनेक हैं, परंतु ईश्वर एक ही है।"

- एक धर्म है, प्रेम का धर्म। एक भाषा है, हृदय की भाषा। एक जाति है, मानवता की जाति। ईश्वर एक है, जो सर्वव्यापी है।
- उनके आश्रम में हर धर्म के प्रतीक चिन्हों और ग्रंथों का सम्मान किया जाता है।
- वे अपने अनुयायियों को प्रेरित करते थे कि वे अपने-अपने धर्म का पालन करें, लेकिन दूसरों के धर्म का भी आदर करें।
- इस प्रकार उन्होंने सर्वधर्म समभाव का व्यावहारिक रूप दिखाया।

शिक्षा और स्वास्थ्य क्षेत्र में योगदान

बाबा का मानना था कि केवल उपदेश देना पर्याप्त नहीं है, बल्कि उन्हें व्यवहार में लाना चाहिए। इसी भावना से उन्होंने अनेक सेवा-परियोजनाएँ शुरू कीं।

शिक्षा

- “सत्य साई शिक्षा संस्थान” के अंतर्गत विद्यालय, महाविद्यालय और विश्वविद्यालय स्थापित किए गए।
- यहाँ केवल अकादमिक ज्ञान ही नहीं, बल्कि चरित्र निर्माण और मानव मूल्य शिक्षा पर बल दिया जाता है।

स्वास्थ्य

- उन्होंने “सुपर स्पेशलिटी अस्पताल” और “जनरल अस्पताल” स्थापित किए जहाँ निःशुल्क उपचार उपलब्ध कराया गया।
- इन अस्पतालों ने लाखों गरीब और जरूरतमंद मरीजों को जीवनदान दिया।

जल-परियोजनाएँ

- आंध्र प्रदेश, चेन्नई और कर्नाटक में शुद्ध पेयजल उपलब्ध कराने के लिए विशाल जल परियोजनाएँ प्रारंभ कीं।
- इससे ग्रामीणों के जीवन में क्रांतिकारी परिवर्तन आया।

अंतरराष्ट्रीय प्रभाव

श्री सत्य साई बाबा के अनुयायी केवल भारत में ही नहीं, बल्कि अमेरिका, यूरोप, अफ्रीका और एशिया के अनेक देशों में फैले हैं।

- उनके शिक्षाओं पर आधारित सत्य साई संगठन 100 से अधिक देशों में सक्रिय है।
- वहाँ भी सेवा, शिक्षा और स्वास्थ्य से जुड़े प्रकल्प चलाए जाते हैं।
- इस प्रकार उनका संदेश वैश्विक स्तर पर मानवता को जोड़ा है।

निष्कर्ष

श्री सत्य साई बाबा का जीवन और उपदेश किसी एक समुदाय या देश तक सीमित नहीं हैं। वे सार्वभौमिक हैं और संपूर्ण मानवता को दिशा देने वाले हैं। उनके संदेश हमें यह सिखाते हैं कि सच्चा धर्म मानवता की सेवा, प्रेम और नैतिकता में निहित है।

उनका जीवन हमें याद दिलाता है कि हम सभी के भीतर दिव्यता विद्यमान है और उसका अनुभव तभी संभव है जब हम सत्य, धर्म, शांति, प्रेम और अहिंसा के मार्ग पर चलें।

आज जब मानव समाज अनेक चुनौतियों से जूझ रहा है, तब सत्य साई बाबा के संदेश दीपक की तरह मार्ग आलोकित करते हैं। यदि हम इन्हें अपने जीवन में अपनाएँ, तो न केवल हमारा व्यक्तिगत जीवन सुखमय होगा, बल्कि संपूर्ण समाज में शांति और समृद्धि का संचार होगा।

मैं आप सभी से 2026 नवंबर तक प्रशांतिनिलयम की यात्रा करने का अनुरोध करूंगा क्योंकि दुनिया उनका शताब्दी जन्मदिन मना रही है।

भाषाएँ : मानव जुड़ाव के पुल

श्री जयंत कुमार मिश्र
वरिष्ठ निदेशक (आई टी)

विजय बिहार के एक छोटे से कस्बे में पला-बढ़ा एक शांत स्वभाव का लड़का था। उसे किताबें पढ़ना, दादी की लोककथाएँ सुनना और मोहल्ले में गूंजती अलग-अलग आवाज़ें सुनना बहुत भाता था— चाचा जी की मैथिली, मामा की कोमल भोजपुरी, बगल के बुज़ुर्ग शायर की मधुर उर्दू, सब्ज़ीवाले की मीठी ओड़िया और स्कूल के प्रिंसिपल की दृढ़ अंग्रेज़ी।

विजय के लिए भाषाएँ चित्रकार की तूलिका के रंगों जैसी थीं। हर भाषा की अपनी सुंदरता, अपनी लय और अपना स्वाद था। लेकिन धीरे-धीरे उसे समझ आने लगा कि भाषा केवल ध्वनि और लिपि नहीं होती, बल्कि यह जुड़ाव, संस्कृति और जीवन का सहारा होती है।

एक दिन स्कूल में वाद-विवाद प्रतियोगिता की घोषणा हुई— विषय था "हमारे जीवन में भाषाओं का महत्व"। विजय ने भाग लेने का निश्चय किया। वह न तो अंग्रेज़ी का सबसे अच्छा वक्ता था, न ही सबसे आत्मविश्वासी वादक, लेकिन उसे लगा कि उसके पास कहने के लिए कुछ है।

वाद-विवाद से एक रात पहले वह दादी के साथ नीम के पेड़ के नीचे बैठा। "दादी," उसने पूछा, "भाषाएँ इतनी ज़रूरी क्यों होती हैं? क्या लोग एक ही भाषा से नहीं रह सकते?" दादी मुस्कुराई, उनका झुर्रियों भरा चेहरा दीपक की लौ में चमक रहा था।

"बेटा," उन्होंने कहा, "भाषा सिर्फ़ शब्द नहीं है। इसमें सदियों की बुद्धि, त्योहारों के गीत, बड़ों की सीख और बच्चों की हँसी समाई होती है। भाषा के बिना स्मृति खो जाती है, और स्मृति के बिना इंसान खुद को खो देता है।" ये बातें विजय के दिल को छू गई। उसने सोचा—अंग्रेज़ी उसकी पढ़ाई और नौकरी का साधन है; माँ उससे हिंदी में बात करती हैं और वही उसकी भावनाओं की भाषा है; दादी की कहानियाँ बुंदेली बोली में होती हैं, जो उसे अपनी जड़ों से जोड़ती है।

अगले दिन जब वह मंच पर पहुँचा तो बोला—
"कल्पना कीजिए, अगर भाषा न हो। आप भूखे हैं पर खाना माँग नहीं सकते। आप खुश हैं पर हँसी बाँट नहीं सकते। आपके पास ज्ञान है पर आगे नहीं पहुँचा सकते। भाषा के बिना जीवन अधूरा है। भाषाएँ ही जीवन के पुल हैं।"

पूरा हाल शांत हो गया। शिक्षक भी ध्यान से सुनने लगे।
विजय आगे बोला—
"भाषाएँ हमारे विचार गढ़ती हैं। ये हमें संवाद करना, रिश्ते बनाना, संस्कृति बाँटना और इतिहास सँभालना सिखाती हैं। हर भाषा दुनिया को देखने का नया दृष्टिकोण देती है। भारत सौ से भी अधिक भाषाओं और बोलियों से समृद्ध है, और इनमें हिंदी का विशेष स्थान है।"

वह गर्व से बोला—
"हिंदी केवल भाषा नहीं, यह एक सूत्र है जो हमें बाँधता है। मेरे घर में त्योहारों, प्रार्थनाओं, गीतों, फ़िल्मों और रोज़मर्रा की बातों की भाषा हिंदी है। यह मुझे पड़ोसियों, अलग-अलग राज्यों के लोगों और ट्रेन में मिले अनजान यात्रियों से भी जोड़ती है। कुछ हिंदी शब्द कहीं भी दोस्ती करा देते हैं।"

उसने सभी को छू लेने वाले उदाहरण दिए—
"सोचिए, प्रेमचंद की कहानियाँ हमें इंसानियत सिखाती हैं, कबीर के दोहे आध्यात्मिक ज्ञान देते हैं, हरिवंश राय बच्चन की कविताएँ आशा जगाती हैं। और बॉलीवुड के हिंदी गीत-संवाद हमारी संस्कृति को पूरी दुनिया में फैलाते हैं। हिंदी हमारी पहचान है, धरोहर है और पीढ़ियों को जोड़ने वाला पुल है।"

अंत में उसने कहा "हर भाषा अनमोल है। अंग्रेज़ी वैश्विक अवसर देती है, मातृभाषाएँ सांस्कृतिक गौरव बचाती हैं और हिंदी करोड़ों भारतीयों को जोड़ने का काम करती है। अगर हम सब भाषाओं का सम्मान करेंगे, तो हम अपनी मानवता का सम्मान करेंगे।"

हाल तालियों से गूंज उठा। विजय की बातें सबसे चमकीली नहीं थीं, लेकिन सबसे सच्ची थीं। वह वाद-विवाद जीत गया, और उससे भी महत्वपूर्ण यह कि उसने अपनी आवाज़ खोज ली।

साल बीत गए। विजय दिल्ली में पढ़ा, फिर विदेश गया। न्यूयॉर्क की सड़कों पर उसने स्पेनिश, चीनी, अरबी और फ्रेंच सुनीं। उसे फिर लगा—भाषाएँ अदृश्य धागों की तरह हैं, जो इंसानी ज़िंदगियों को बुनती हैं।

एक दिन एक सामुदायिक आयोजन में उसने एक बुज़ुर्ग को देखा जो अंग्रेज़ी में अटक रहे थे। विजय ने कहा—"नमस्ते, आप कैसे हैं?" बुज़ुर्ग की आँखें चमक उठीं। वह उत्तरप्रदेश से थे। परदेस में हिंदी सुनना परिवार मिलने जैसा था। दोनों घंटों बातें करते रहे—कहानियाँ, हँसी, यहाँ तक कि व्यंजन भी साझा किए।

उस रात विजय को दादी की बातें याद आईं—"भाषा के बिना स्मृति खो जाती है, और स्मृति के बिना हम खुद खो जाते हैं।" उसे समझ आया कि हिंदी बोलना केवल संवाद नहीं, बल्कि पहचान और अपनापन बचाने का साधन है।

भारत लौटने पर विजय ने अध्यापक बनने का निर्णय लिया। कक्षा में वह बच्चों को कई भाषाएँ सीखने के लिए प्रेरित करता—अंग्रेज़ी वैश्विक अवसरों के लिए, मातृभाषा सांस्कृतिक गर्व के लिए, और हिंदी राष्ट्रीय जुड़ाव के लिए।

वह कहता—"भाषाएँ प्रतिद्वंदी नहीं, साथी हैं। हर भाषा आपको दुनिया देखने की नई आँखें देती है।"

एक बार स्कूल के सांस्कृतिक उत्सव में छात्रों ने नाटक प्रस्तुत किया—संवाद अंग्रेज़ी में, गीत हिंदी में और कहावतें अपनी-अपनी बोलियों में। दर्शक हँसे, ताली बजाई, भावुक हुए। विजय ने गर्व से देखा कि उसके छात्र वही जी रहे हैं जो वह मानता है—भाषाएँ बाधा नहीं, पुल हैं, और हिंदी उन सबमें सबसे मजबूत सेतु है।

उस रात घर लौटते समय उसने सोचा—बचपन में मोहल्ले की आवाज़ें सुनने वाले विजय से लेकर वाद-विवाद में अपनी आवाज़ पाने वाले विजय तक, और अब बच्चों का मार्गदर्शन करने वाले शिक्षक विजय तक — उसका जीवन शब्दों ने ही गढ़ा है।

उसने धीरे से कहा—
"भाषाएँ जीवन की धुन हैं, और हिंदी उस ढोल की तरह है जो पूरे देश की लय को जीवित रखती है।भाषा जीवन की धड़कन है और हिन्दी उस धड़कन की मधुरतम लय है।"

यह सोचकर वह मुस्कुराया, क्योंकि जब तक लोग अपनी भाषाओं में बोलते, गाते और सपने देखते रहेंगे—विशेषकर हिंदी में—मानव जुड़ाव के पुल कभी नहीं टूटेंगे।

एनआईसी ओडिशा में 8 से 12 मार्च, 2025 तक अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस को उत्साहपूर्वक मनाया गया। "सभी महिलाओं और लड़कियों के लिए: अधिकार, समानता और सशक्तिकरण" विषय पर आधारित इस कार्यक्रम में समावेशिता और लैंगिक समानता के महत्व पर प्रकाश डाला गया।

मिट्टी से मेधा तक: राज की कहानी

श्री जागेश्वर साहू
वरिष्ठ निदेशक (आई टी)

राज, ओड़िशा के एक छोटे से गाँव में पैदा हुआ था। उसके पिता एक किसान थे जिनके पास खेती की काफी ज़मीन थी, लेकिन खेती करना आसान नहीं था । मज़दूरों की कमी, बारिश पर निर्भर फसल, और फसल बेचकर पैसे जुटाना — सब कुछ एक चुनौती था। माँ एक गृहिणी थीं, जो सीमित संसाधनों में परिवार को संभालती थीं। जीवन सरल था, लेकिन चुनौतियाँ कठिन। परिवार बड़ा था और आमदनी कम। गाँव में न बिजली नियमित थी, न पक्की सड़कें, और न कोई तकनीकी साधन ।

लेकिन राज में कुछ खास था — सीखने की गहरी ललक। वह स्कूल में हमेशा सबसे आगे रहता। जब उसने गाँव के प्राथमिक विद्यालय में पढ़ाई शुरू की, तो उसे सरिता मैडम जैसी समर्पित शिक्षिका मिलीं। उन्होंने राज की प्रतिभा को पहचाना और उसे आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने न केवल उसे पढ़ने का सही तरीका सिखाया, बल्कि हर मोड़ पर उसका उत्साह बढ़ाया। उनकी प्रेरणा और मार्गदर्शन से राज ने राज्य स्तरीय छात्रवृत्तियाँ (स्कॉलरशिप) प्राप्त कीं ।"

"हालात कुछ भी हों, ज्ञान सबसे बड़ी दौलत है ।"

परंतु जब वह माध्यमिक विद्यालय (मिडिल स्कूल) में पहुँचा, तो वहाँ अच्छे शिक्षकों की कमी के कारण उसकी पढ़ाई प्रभावित होने लगी। किताबें तो थीं, पर कोई मार्गदर्शन नहीं। राज का मन पढ़ाई से भटकने लगा ।

लेकिन किस्मत ने फिर एक मौका दिया। हाई स्कूल में शिवप्रसाद सर जैसे प्रेरणादायक शिक्षक मिले - एक ऐसे शिक्षक जिन्होंने राज को फिर से जगाया। जिन्होंने राज में दोबारा आत्मविश्वास भरा।उन्होंने पुराने संसाधनों, ब्लैकबोर्ड और अपने अनुभव से राज को विज्ञान और गणित में गहरी रुचि दिलाई ।

शिवप्रसाद सर ने राज की दिशा बदल दी। उन्होंने पुराने चार्ट्स, मॉडल्स और खुद बनाए नोट्स से राज को विज्ञान समझाया। राज स्कूल में घंटों रुककर उनसे सवाल पूछता रहता । शिवप्रसाद सर ने ही पहली बार राज को "कंप्यूटर" शब्द से परिचित कराया — जब उन्होंने बताया कि आने वाला युग तकनीक का होगा। राज ने उस समय कंप्यूटर देखा नहीं था, लेकिन उसके सपनों में वह एक वैज्ञानिक बन चुका था । धीरे-धीरे मेहनत और शिक्षकों के सहयोग से राज ने राज्य स्तर की प्रतियोगिताएँ जीतीं। पढ़ाई में उत्कृष्टता के कारण उसे स्कॉलरशिप मिली ।राज ने जी-जान से मेहनत की और हाई स्कूल सर्टिफिकेट परीक्षा में शानदार अंक प्राप्त किए ।इसके बाद वह अपने गाँव से दूर ज़िला मुख्यालय गया, जहाँ रहकर उसने विज्ञान की पढ़ाई जारी रखी। कठिनाइयाँ रहीं—रहने की जगह, खाने की व्यवस्था, लेकिन उसके हौसले बुलंद थे।सीमित साधनों के बावजूद उसने ग्रेजुएशन पूरी की।

आख़िरकार, उसने राज्य के एक प्रतिष्ठित संस्थान में मास्टर इन कंप्यूटर एप्लीकेशन में दाखिला लिया। यह एक बड़ी उपलब्धि थी, लेकिन मन अब भी आशंकाओं से भरा हुआ था — "क्या मेहनत रंग लाएगी? क्या उसका सपना सच होगा? क्या कोई अच्छी नौकरी मिलेगी?"

लेकिन राज ने हार नहीं मानी। दिन-रात मेहनत की, खुद से अभ्यास किया, और हर छोटी सफलता को सीढ़ी बनाया। आखिरकार, उसकी मेहनत रंग लाई और उसे भारत सरकार में वैज्ञानिक की प्रतिष्ठित नौकरी मिली । आज राज भारत सरकार के एक वरिष्ठ वैज्ञानिक है — देश की डिजिटल क्रांति में योगदान दे रहा है ।

सपने अकेले नहीं उड़ते, उन्हें उड़ान देने वाले होते हैं
— शिक्षक

राजा, प्रजा और भक्त रानी

श्री सरोज कुमार साहु
वरिष्ठ निदेशक (आई टी)

बहुत समय पहले की बात है। एक राज्य था—सुंदर, समृद्ध और शांतिपूर्ण। वहां के राजा, वीरवर्मा, न्यायप्रिय और बुद्धिमान थे, लेकिन उनमें ईश्वर के प्रति आस्था नहीं थी। उनका मानना था कि शक्ति केवल तलवार और सत्ता से आती है।

उनकी रानी, सौभाग्यवती देवी, ईश्वर की अनन्य भक्त थीं। हर सुबह मंदिर में आरती करतीं, अनाथों की सेवा करतीं और राजा से हमेशा कहतीं, "राजा जी, भगवान में आस्था रखिए, वही सच्चा बल देते हैं।"

राजा अक्सर मुस्कुराकर कहते, "रानी, यह सब भावनाएँ हैं। असली दुनिया में तीर और तलवार काम आते हैं।"

प्रजा की पुकार
एक दिन राज्य में भीषण अकाल पड़ा। फसलें सूख गईं, नदियाँ सूख चलीं और जनता दुखी हो उठी। राजा ने सेनापति बुलाकर उपाय पूछे—तालाब खुदवाए, अनाज बाँटा, लेकिन हालात नहीं सुधरे।

रानी ने कहा, "राजा जी, चलिए मंदिर में प्रार्थना करें। प्रजा की आशा अब केवल ऊपरवाले से है।" राजा ने पहले इनकार किया, लेकिन जनता की पीड़ा देखकर मान गए।

चमत्कार
रानी सौभाग्यवती ने उपवास रखकर सात दिन तक पूजा की। सातवें दिन आकाश में बादल छा गए, बिजली चमकी और जोरदार बारिश हुई। खेत फिर से हरे हो गए, नदियाँ लबालब भर गईं।

राजा स्तब्ध थे। उन्होंने पहली बार रानी के साथ मंदिर में सिर झुकाया और कहा, "आज मैं मानता हूँ, सच्ची शक्ति न केवल तलवार में है, बल्कि श्रद्धा में भी।"

अंतिम संदेश
उस दिन से राजा ने ईश्वर में विश्वास करना शुरू किया और अपनी नीति में भक्ति और करुणा को स्थान दिया। प्रजा ने उन्हें और भी अधिक सम्मान देना शुरू किया, और राज्य पहले से कहीं अधिक समृद्ध बन गया।

एनआईसी स्पोर्ट्स मीट 2024 का आयोजन 14 से 17 दिसंबर, 2024 तक तीन दिवसीय ई-गवर्नेंस सम्मेलन 2024 के साथ किया गया। डीआईओ और एडीआईओ सहित अधिकारियों ने क्रिकेट, बैडमिंटन, टेबल टेनिस, कैरम, शतरंज, म्यूज़िकल चेयर्स और लेमन रेस जैसे विभिन्न खेल आयोजनों में उत्साहपूर्वक भाग लिया।

ईमानदारी ही सर्वश्रेष्ठ नीति

डॉ आशीष कुमार महापात्र
वरिष्ठ निदेशक (आई टी)

काम की तलाश में इधर-उधर धक्के खाने के बाद निराश होकर जब वह घर वापस लौटने लगा तो पीछे से आवाज आयी, ऐ भाई! यहाँ कोई मजदूर मिलेगा क्या?

उसने पीछे मुड़कर देखा तो पाया कि एक झुकी हुई कमर वाला बूढ़ा तीन गठरियाँ उठाए हुए खड़ा है। उसने कहा, हाँ बोलो क्या काम है? मैं ही मजदूरी कर लूँगा।

मुझे रामगढ़ जाना है..। दो गठरियाँ में उठा लूँगा, पर..मेरी तीसरी गठरी भारी है, इस गठरी को तुम रामगढ़ पहुँचा दो, मैं तुम्हें दो रुपये दूँगा। बोलो काम मंजूर है।

ठीक है। चलो ..आप बुजुर्ग हैं। आपकी इतनी मदद करना तो यूँ भी मैं अपना फर्ज समझता हूँ। इतना कहते हुए गठरी उठाकर अपने सिर पर रख ली। किन्तु गठरी रखते ही उसे इसके भारीपन का अहसास हुआ। उसने बूढ़े से कहा- ये गठरी तो काफी भारी लगती है।

हाँ.. इसमें एक-एक रुपये के सिक्के हैं। बूढ़े ने लगभग फुसफुसाते हुए कहा।

उसने सुना तो सोचा, होंगे मुझे क्या? मुझे तो अपनी मजदूरी से मतलब है। ये सिक्के भला कितने दिन चलेंगे? तभी उसने देखा कि बूढ़ा उस पर नजर रखे हुए है। उसने सोचा कि ये बूढ़ा जरूर ये सोच रहा होगा, कहीं ये भाग तो नहीं जाएगा। पर मैं तो ऐसी बेईमानी और चोरी करने में विश्वास नहीं करता। मैं सिक्कों के लालच में फँसकर किसी के साथ बेईमानी नहीं करूँगा।

चलते-चलते आगे एक नदी आ गयी। वह तो नदी पार करने के लिए झट से पानी में उतर गया, पर बूढ़ा नदी के किनारे खड़ा रहा। उसने बूढ़े की ओर देखते हुए पूछा- क्या हुआ? आखिर रुक क्यों गए? बूढ़ा आदमी हूँ। मेरी कमर ऊपर से झुकी हुई है। दो-दो गठरियों का बोझ नहीं उठा सकता.... कहीं मैं नदी में डूब ही न जाऊँ। तुम एक गठरी और उठा लो। मजदूरी की चिन्ता न करना, मैं तुम्हें एक रुपया और दे दूँगा।

ठीक है लाओ।
पर इसे लेकर कहीं तुम भाग तो नहीं जाओगे?
क्यों, भला मैं क्यों भागने लगा?

भाई आजकल किसी का क्या भरोसा? फिर इसमें चाँदी के सिक्के जो हैं। मैं आपको ऐसा चोर-बेईमान दिखता हूँ क्या? बेफिक्र रहें मैं चाँदी के सिक्कों के लालच में किसी को धोखा देने वालों में नहीं हूँ। लाइए, ये गठरी मुझे दे दीजिए।

दूसरी गठरी उठाकर उसने नदी पार कर ली। चाँदी के सिक्कों का लालच भी उसे डिगा नहीं पाया। थोड़ी दूर आगे चलने के बाद सामने पहाड़ी आ गयी।

वह धीरे - धीरे पहाड़ी पर चढ़ने लगा। पर बूढ़ा अभी तक नीचे ही रुका हुआ था। उसने कहा-आइए ना, फिर से रुक क्यों गए? बूढ़ा आदमी हूँ। ठीक से चल तो पाता नहीं हूँ। ऊपर से कमर पर एक गठरी का बोझ और, उसके भी ऊपर पहाड़ की दुर्गम चढ़ाई।

तो लाइए ये गठरी भी मुझे दे दीजिए बेशक और मजदूरी भी मत देना। पर कैसे दे दूँ? इसमें तो सोने के सिक्के हैं और अगर तुम इन्हें लेकर भाग गए तो मैं बूढ़ा तुम्हारे पीछे भाग भी नहीं पाऊँगा।

कहा न मैं ऐसा आदमी नहीं हूँ। ईमानदारी के चक्कर में ही तो मुझे मजदूरी करनी पड़ रही है, वरना पहले मैं एक सेठजी के यहाँ मुनीम की नौकरी करता था। सेठजी मुझसे हिसाब में गड़बड़ करके लोगों को ठगने के लिए दबाव डालते थे। तब मैंने ऐसा करने से मना कर दिया और नौकरी छोड़कर चला आया। उसने यूँ अपना बड़प्पन जताने के लिए गप्प हाँकी। पता नहीं तुम सच कह रहे हो या..। खैर उठा लो ये सोने के सिक्कों वाली तीसरी गठरी भी। मैं धीरे-धीरे आता हूँ। तुम मुझसे पहले पहाड़ी पार कर लो, तो दूसरी तरफ नीचे रुककर मेरा इंतजार करना।

वह सोने के सिक्कों वाली गठरी उठाकर चल पड़ा। बूढ़ा बहुत पीछे रह गया था। उसके दिमाग में आया, अगर मैं भाग जाऊँ, तो ये बूढ़ा तो मुझे पकड़ नहीं सकता और मैं एक ही झटके में मालामाल हो जाऊँगा। मेरी पत्नी जो मुझे रोज कोसती रहती है, कितना खुश हो जाएगी? इतनी आसानी से मिलने वाली दौलत ठुकराना भी बेवकूफी है..। एक ही झटके में धनवान हो जाऊँगा। पैसा होगा, तो इज्जत-ऐश-आराम सब कुछ मिलेगा मुझे..।

उसके दिल में लालच आ गया और बिना पीछे देखे भाग खड़ा हुआ। तीन-तीन भारी गठरियों का बोझ उठाए भागते-भागते उसकी साँस फूल गयी।

घर पहुँचकर उसने गठरियाँ खोल कर देखीं, तो अपना सिर पीटकर रह गया। गठरियों में सिक्कों जैसे बने हुए मिट्टी के ढेले ही थे। वह सोच में पड़ गया कि बूढ़े को इस तरह का नाटक करने की जरूरत ही क्या थी? तभी उसकी पत्नी को मिट्टी के सिक्कों के ढेर में से एक कागज मिला, जिस पर लिखा था, “यह नाटक इस राज्य के खजाने की सुरक्षा के लिए ईमानदार सुरक्षा मंत्री खोजने के लिए किया गया। परीक्षा लेने वाला बूढ़ा और कोई नहीं स्वयं महाराजा ही थे। अगर तुम भाग न निकलते तो तुम्हें मंत्री पद और मान-सम्मान सभी कुछ मिलता। पर...”

हम सभी को सचेत रहना चाहिए, न जाने जीवन देवता कब हममें से किसकी परीक्षा ले ले। प्रलोभनों में न डिगकर सिद्धान्तों को पकड़े रखने में ही दूरदर्शिता है..!!

इलेक्ट्रॉनिक्स एवं सूचना प्रौद्योगिकी, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण, सार्वजनिक कल्याण मंत्री डॉ. मुकेश महालिंग ने उच्च शिक्षा, खेल एवं सामाजिक सेवा, ओडिया भाषा साहित्य एवं संस्कृति मंत्री श्री सूर्यबंशी सूरज की उपस्थिति में “द एसेंडर” पत्रिका का जनवरी 2025 अंक विमोचन किया।

ओडिशा विधानसभा ने 12 फरवरी 2025 को *वन नेशन, वन एप्लीकेशन* पहल के तहत एनआईसी द्वारा विकसित नेवा (NeVA) को लॉन्च करके अपने "डिजिटल हाउस" का उद्घाटन किया, जो कागज रहित विधायिका की दिशा में एक बड़ा कदम है।

ई-पंचायत सभा को 15वें नेशनल डिजिटल ट्रांसफॉर्मेशन अवार्ड्स 2024 में मान्यता मिली ।

जीआईईटी में डेटा साइंस और मैनेजमेंट पर इंटरनेशनल कॉन्फ्रेंस ICDSM-2024: डॉ. ए. के. होता, DDG और SIO चीफ गेस्ट के तौर पर शामिल हुए, साथ में NIC की सीनियर डायरेक्टर (IT) सुश्री सुजाता दास और दूसरे गणमान्य लोग भी मौजूद रहे।

संतों के साथ दो दिन
(आचार्य विनोबा भावे)

श्री किरणचान्द सामन्तराय
वरिष्ठ निदेशक (आई टी)

आज दिनांक 16 सितंबर 2025 है, और मेरा एन.डी.सी. की रात्रि ड्यूटी है। रात को दफ्तर में बैठे-बैठे अचानक याद आया कि हमारी हिंदी पत्रिका "जागृति" के लिए कुछ लिखना है। समय कम है, इसलिए मैंने अपने बचपन के कुछ अनुभवों को लिखने का फैसला किया। यह मैंने कुछ वर्ष पहले ओड़िआ में लिखा था। आशा है, यह आपको पसंद आएगा ।

आज से लगभग 44 वर्ष पहले, मैं आठवीं कक्षा में पढ़ता था। यह सन् 1981 की बात है। मैं उस समय ढेंकानाल के बी.बी. हाई स्कूल में पढ़ता था। उस समय देश की स्थिति कुछ इस प्रकार थी— पंजाब में सिख चरमपंथी बहुत उत्पात मचा रहे थे। दिल्ली और चंडीगढ़ जैसे शहरों में आतंकवादी भीड़-भाड़ वाली जगहों पर ट्रांजिस्टर बम या रेडियो बम के जरिए विस्फोट कराते थे, जिससे कई निर्दोष लोग मारे जाते या घायल हो जाते थे। ये सिख चरमपंथी, पाकिस्तान के प्रत्यक्ष और परोक्ष समर्थन में, "खालिस्तान" नामक अलग देश की मांग कर भारत से अलग होना चाहते थे। वास्तव में, इन चरमपंथियों को पंजाब की जनता का पूर्ण समर्थन नहीं था। लोग डर या धर्म के नाम पर दबाव के कारण इनका साथ देने को मजबूर थे। इनकी संख्या कम थी, लेकिन इन्होंने सभी गुरुद्वारों पर अपना प्रभाव जमा लिया था।

उसी समय असम में भी छात्र आंदोलन तेज हो गया था। वहां असमियों और बंगालियों के बीच भेदभाव की भावना प्रबल थी। बंगाली मुख्यतः 1961-62 में बांग्लादेश से आए शरणार्थी थे, जो बाद में स्थायी असमियों के लिए समस्या बन गए।

इसी दौरान श्रीलंका में तमिल समस्या उभर रही थी। यद्यपि श्रीलंका एक अलग देश है, लेकिन इसका प्रभाव भारत पर पड़ रहा था। हालांकि, असम और श्रीलंका की समस्याएं उतनी जटिल नहीं थीं, जितनी पंजाब की स्थिति, जो बहुत गंभीर हो चुकी थी। उस समय श्रीमती इंदिरा गांधी प्रधानमंत्री थीं और कांग्रेस की सरकार थी। उल्लेखनीय है कि सिख चरमपंथियों को तैयार करने में कांग्रेस सरकार की अप्रत्यक्ष रूप से बड़ी भूमिका थी।

मैंने अपने बड़ों से सुना था कि संजय गांधी (श्रीमती इंदिरा गांधी के छोटे पुत्र) भिंडरनवाले जैसे चरमपंथियों को समर्थन देते थे और उन्हें अपने राजनीतिक लाभ के लिए बाहुबल के रूप में इस्तेमाल करते थे। इस तरह कांग्रेस सरकार ने अप्रत्यक्ष रूप से इन उग्रवादियों को बढ़ावा दिया, जो बाद में उनके लिए ही संकट बन गए।

उदाहरण के लिए, अमेरिका ने ओसामा बिन लादेन को समर्थन, हथियार और धन देकर तत्कालीन सोवियत रूस के ख़िलाफ़ अफ़ग़ानिस्तान में चरमपंथी गतिविधियों के लिए प्रोत्साहित किया था। इसमें कई निर्दोष लोग मारे गए थे। अमेरिका उस समय इसमें सफल भी हुआ, लेकिन बाद में बिन लादेन उनके लिए "भस्मासुर" बन गया, जिसके परिणामस्वरूप 11 सितंबर 2001 (9/11) की घटना हुई। उसी तरह भारत में भी भिंडरनवाले जैसे लोग आगे चलकर देशद्रोही उग्रवादी बन गए।

देश की इस अराजक स्थिति को देखकर सरकार ने भूदान कार्यकर्ताओं से अनुरोध किया कि वे इसका समाधान सुझाएं। बाद में भूदान कार्यकर्ताओं ने पंजाब में एक पदयात्रा आयोजित की। आगे बढ़ने से पहले भूदान के बारे में दो शब्द कहना चाहूंगा। आजकल भूदान और सर्वोदय जैसे शब्द सुनने को नहीं मिलते। आचार्य विनोबा भावे इस भूदान आंदोलन के लिए प्रसिद्ध थे। भूदान का अर्थ है स्वेच्छा से जमीन का दान—गरीबों को जमीन देना।

इस पदयात्रा की तैयारी आचार्य विनोबा भावे के आश्रम में हुई, जो महाराष्ट्र के वर्धा में स्थित है। सरकार ने देशभर के भूदान कार्यकर्ताओं को वर्धा जाने के लिए ट्रेन पास की व्यवस्था की थी। इस पास से सुपरफास्ट ट्रेन को छोड़कर अन्य ट्रेनों में यात्रा की जा सकती थी, लेकिन भोजन का खर्च स्वयं वहन करना पड़ता था।

हालांकि मुझे पूरी तरह याद नहीं, लेकिन उस दिन शाम के क़रीब ५ बजे मैं अपने नानाजी (श्री बांकानिधि भूतिया) के साथ ढेंकानाल रेलवे स्टेशन पर था। कुछ देर बाद श्री हरमोहन पटनायक और अन्य भूदान कार्यकर्ता आकर हमसे जुड़ गए। ढेंकानाल दल का नेतृत्व हरमोहन पटनायक कर रहे थे। हमारे दल में; मैं, नानाजी, हरमोहन बाबू और चार अन्य लोग थे। उनमें से एक की उम्र २५-३० वर्ष थी, जबकि बाकी तीन की उम्र 40 से 50 वर्ष के बीच थी। मुझे सबके नाम याद नहीं, लेकिन मंडारपटु के रसानंद बाबू और लंबी सफेद दाढ़ी वाले बराल बाबू याद हैं। यात्रा के दौरान, विशेषकर ट्रेन बदलने में, हरमोहन बाबू, नानाजी और रसानंद बाबू बाकी साथियों का मार्गदर्शन करते थे।

हम सभी आचार्य विनोबा भावे के आश्रम, वर्धा की ओर रवाना हुए। हमारा रास्ता था—पहले ढेंकानाल से कटक, फिर कटक से खड़गपुर जंक्शन, और वहां से वर्धा।

कटक जाने के लिए स्टेशन पर ट्रेन की प्रतीक्षा करते समय ३०-४० वर्ष का एक अलेख बाबा (जोरंदा बाबा) स्टेशन पर पहुंचा। वह भी कहीं जाने के लिए ट्रेन पकड़ने आया था और प्लेटफॉर्म पर टहल रहा था। तब हमारे नेता हरमोहन बाबू ने एक कार्यकर्ता से कहा, "उसे बुलाओ।" बाबा पास आए, तो पूछा गया कि वे कहां जा रहे हैं। उन्होंने कहा, "मैं खोर्धा जाऊंगा।" हरमोहन बाबू ने उन्हें हमारे साथ चलने को कहा, और वे तुरंत तैयार हो गए।

हम सभी ट्रेन में सवार हुए। रास्ते में राजा आठगढ़ या सालगांव के पास स्वादिष्ट आलू-कस्सा (सूखा आलू दम) बिक रहा था, जिसमें केवल काली मिर्च डाली गई थी, कोई अन्य मसाला नहीं। उसका स्वाद लाजवाब था। हम सभी भूखे थे। हरे शालपत्र की चौपटियों पर बांस की काठियों से चम्मच बनाकर हमने एक-एक चौपटी आलू-कस्सा खाया। उस समय पानी की बोतल ले जाने का प्रचलन नहीं था, और न ही बोतलें बिकती थीं। काली मिर्च वाला आलू-मसाला खाकर सभी ने राहत की सांस ली और अगले स्टेशन की प्रतीक्षा की। इसके बाद तय हुआ कि यात्रा के दौरान पानी साथ रखा जाएगा।

रात 8:30 बजे तक हम कटक स्टेशन पहुंच गए और वहां रात का भोजन किया। कटक से केवल एक भूदान कार्यकर्ता हमारे साथ जुड़ा। हम सभी खड़गपुर जाने वाली ट्रेन का इंतजार करने लगे। एक के बाद एक ट्रेनें भुवनेश्वर से कोलकाता की ओर जा रही थीं और कटक स्टेशन पर रुक रही थीं। लेकिन उनमें बैठना तो दूर, खड़े होने की भी जगह नहीं थी। ट्रेन आने पर मैं और परजंग से आए एक कार्यकर्ता सामान संभालते, जबकि नानाजी, हरमोहन बाबू और दो अन्य साथी अलग-अलग डिब्बों में जगह तलाशने जाते।

रात करीब 10:30 बजे कटक से जुड़ा कार्यकर्ता अपना सामान लेकर घर लौट गया। उसने कहा, "ऐसे परेशान होकर मैं नहीं जाऊंगा," और सभी के आग्रह को नज़र अंदाज़ कर चला गया। तब हमने ठान लिया कि जैसे भी हो, आखिरी ट्रेन से जाएंगे, जो रात 11:30 से 12 बजे के बीच आती थी। यह ट्रेन पुरी से आ रही थी। इसमें हमें आराम से बैठने की जगह मिल गई। ट्रेन में बैठते-बैठते मैं सो गया। जब उठा, तो खड़गपुर स्टेशन हो चुका था। हम सभी यात्री विश्रामगृह में इकट्ठा हुए। अगली ट्रेन दोपहर के बाद थी।

स्टेशन से दातुन खरीदकर हमने नित्यकर्म और स्नान किया। वहां का सार्वजनिक स्नानघर बिना दरवाजे का था, केवल अंग्रेज़ी का अक्षर "L" के आकार की दीवारें थीं। हम बारी-बारी से स्नान करते थे। सबसे युवा कार्यकर्ता (25-30 वर्ष) ने अपनी कुर्ता दीवार पर रखकर स्नान करना शुरू किया। तभी एक व्यक्ति उसका कुर्ता उठाकर अपने बैग में रख लिया और सज्जन की तरह सबके सामने से निकल गया। किसी को संदेह तक नहीं हुआ। तभी वह कार्यकर्ता आधा स्नान छोड़कर चिल्लाया, "मेरी शर्ट वह आदमी ले जा रहा है!" और उसके पीछे दौड़ा। इस बीच वह व्यक्ति रेलवे लाइन पार कर दूसरे प्लेटफॉर्म की ओर भागा और हमारी आंखों के सामने भीड़ में गायब हो गया।

हमने सुबह नाश्ता किया और फिर दोपहर का भोजन कर निर्धारित प्लेटफॉर्म पर ट्रेन का इंतजार किया। कोलकाता से मुंबई की ओर कई ट्रेनें जा रही थीं, जिनमें सुपरफास्ट गीतांजलि एक्सप्रेस भी थी। दोपहर 3-4 बजे के आसपास हमने ट्रेन पकड़ी। हमारे पास कोई विकल्प नहीं था, इसलिए भारी भीड़ में अलग-अलग डिब्बों में चढ़ गए। इतनी भीड़ थी कि डिब्बे के दरवाजे, बाथरूम और सीटों के बीच की खाली जगह में भी पैर रखने की जगह नहीं थी। गर्मी भी बहुत थी। इस माहौल में करीब 2 घंटे बीत गए, पता ही नहीं चला। कई स्टेशन पार होने के बाद थोड़ी जगह खाली हुई।

नानाजी, मैं और दो अन्य लोग एक डिब्बे में थे, जबकि हरमोहन बाबू और अन्य साथी दो अन्य डिब्बों में। शाम 7 बजे एक स्टेशन आया, जहां ट्रेन 5 मिनट रुकी। नानाजी मेरे लिए कुछ खाने को लाए, शायद समोसा।

खाते-खाते हम प्लेटफॉर्म पर बाकी साथियों को ढूंढने निकले। हमारा सामान हमने परजंग से आए एक बीमार कार्यकर्ता के पास छोड़ रखा था। ट्रेन से उतरने पर सभी डिब्बे एक जैसे लगे। हम जनरल डिब्बे में चढ़े थे, उस समय स्लीपर क्लास नहीं थी, केवल सेकंड क्लास और जनरल डिब्बे थे। मैंने नानाजी से पूछा, "हम अपना डिब्बा कैसे पहचानेंगे? सब एक जैसे लग रहे हैं।" नानाजी ने मुझे कोच नंबर दिखाया, जो डिब्बे के बाहर बड़े अक्षरों में और बाथरूम के पास लिखा था।

ओड़िशा से बाहर यह मेरी पहली यात्रा थी। यह मेरी ट्रेन यात्रा का पहला अनुभव भी था। हरमोहन बाबू से एक स्लीपर कोच में मुलाकात हुई। वहां एक ओड़िया परिवार था, जो चक्रधरपुर में उतरने वाला था। मैं और नानाजी अपना सामान लेकर वहां पहुंचे, बाकी साथी दूसरे कोच में समायोजित हो गए।

टीटी से बात कर के रात में सोने की व्यवस्था हो गई। रास्ते में राउरकेला स्टेशन पड़ा। उस समय छत्तीसगढ़ नहीं था, और हम मध्य प्रदेश में महानदी को पार किए। मुझे याद है कि नागपुर के पास हमारी ट्रेन दो सुरंगों से गुजरी थी। अंततः हम वर्धा पहुंचे। वर्धा जंक्शन खड़गपुर जैसा बड़ा जंक्शन था। स्टेशन से हम बस से आश्रम गए।

आश्रम स्टेशन से करीब 11-12 किमी दूर, पवनार नामक स्थान पर था। यह विशाल आश्रम था, जिसमें ऊंची चार दीवारी, खेती की जमीन, फल बगीचे और कई गायें थीं। यह पूरी तरह आत्मनिर्भर था। आश्रम के बाहर से धाम नदी बहती थी, जिसकी चौड़ाई 100-150 मीटर थी। यह पहाड़ी नदी जैसी थी, क्योंकि इसमें रेत नहीं, केवल बड़े-बड़े पत्थर थे। नदी के बीच एक गोल मंडप तक सीमेंट की पगडंडी थी, जो पत्थरों पर बने पुल जैसी थी। शाम को लोग वहां टहलने जाते थे।

आश्रम में स्थायी सदस्यों के लिए अलग कमरे थे, और हमारे लिए राज्यों के अनुसार टेंट लगाए गए थे। वहां बालेश्वर से आए दो कार्यकर्ताओं से मुलाकात हुई। टेंट में 20 लोगों के रहने की जगह थी। सामान रखकर नानाजी, हरमोहन बाबू और रसानंद बाबू आश्रम के भीतर कहीं गए। समय कैसे बीत गया, पता नहीं चला। तभी दोपहर के भोजन का समय हो गया। भोजन के लिए टोकन लेना पड़ता था। नानाजी, मैं, हरमोहन बाबू और एक अन्य व्यक्ति ने पहले खाया, फिर बाकी लोग रसानंद बाबू के नेतृत्व में गए। भोजन में रोटी, चावल, सब्जी आदि थी।

इसी बीच एक अप्रिय स्थिति बनी। हमारे साथ आए जोरंदा बाबा के पास टोकन नहीं था, इसलिए उन्हें भोजन नहीं मिला। रसानंद बाबू ने कहा, "या तो टोकन खरीदें, या 4 घंटे श्रमदान करें, तभी भोजन मिलेगा।" बाहर का भोजन आश्रम में वर्जित था। भोजन मुफ्त नहीं था; टोकन खरीदना पड़ता था। जोरंदा बाबा पूरी तरह निर्धन थे, यह मुझे नहीं पता था। अंततः रसानंद बाबू ने अनमने मन से उनके लिए खर्चा वहन किया। ट्रेन यात्रा में भी उन्होंने पहले उनके लिए कुछ खर्च किया था। बेचारे रसानंद बाबू कहते सुने गए, "साहब (हरमोहन बाबू) इस बाबा को लाकर मेरे ऊपर छोड़ गए।"

आचार्य विनोबा भावे विभिन्न राज्यों से आए भूदान कार्यकर्ताओं के साथ सभाएं और चर्चाएं करते थे। उस दिन हमारी बारी नहीं थी। शाम के 4 बजे किसी अन्य राज्य के साथ बैठक थी। सभा आश्रम के खुले स्थान में होती थी, जहां बीच में कई पेड़, जैसे आंवला के पेड़, थे। हमारे साथी इन्हें बनारसी आंवला कहते थे। कुछ समय बाद आचार्य विनोबा भावे अपनी विश्राम कुटिया से ऑटो में सभा स्थल आए। दूरी केवल 15-20 मीटर थी।

मैं उस समय आठवीं कक्षा का छात्र था। मन में सोचा, "इतनी कम दूरी के लिए ऑटो? आचार्य तो बड़े ऐशोआराम में हैं!" लेकिन उनकी उम्र 86 वर्ष थी, और वे चलने में असमर्थ थे। वे किसी सहायक के सहारे सभा में आए। यह मुझे तब समझ नहीं आया। अगले वर्ष, 15 नवंबर 1982 को 87 वर्ष की उम्र में उनका निधन हो गया। अब सोचता हूं, मैं बहुत भाग्यशाली था कि मुझे ऐसे संत के दर्शन करने का सौभाग्य मिला। जीवन में कुछ अनुभवों की महत्ता तभी समझ आती है, जब वे बीत जाते हैं और उनकी अनुपस्थिति का अहसास होता है।

आचार्य हरे रंग की टोपी पहनते थे, जो उनके कानों को ढंक लेती थी। उनका शरीर दुबला-पतला, गोरा रंग, सफेद वस्त्र और दाढ़ी थी। सभा में क्या चर्चा होती थी, उस समय मैंने इस पर ज्यादा ध्यान नहीं दिया। ओड़िशा के साथ चर्चा अगले दिन दोपहर और परसों सुबह 11 बजे थी। आचार्य के छोटे भाई शिवाजी राव भी आश्रम में रहते थे। वे भी ब्रह्मचारी थे और सर्वोदय आंदोलन से जुड़े थे। जब आचार्य एक राज्य के साथ चर्चा करते, शिवाजी राव किसी अन्य समूह के साथ चर्चा करते।

उस दिन शाम को हरमोहन बाबू, नानाजी और मैं आश्रम में रहने वाले एक ओड़िया सज्जन से मिलने गए। वे पक्के मकान की एक छोटी कोठरी में रहते थे और खादी के सफेद कपड़े पहनते थे। हमें देखकर वे बहुत प्रसन्न हुए। नानाजी और हरमोहन बाबू भी उतने ही खुश थे।

नानाजी ने मेरा परिचय देते हुए कहा, "दया, यह पुनु का बेटा है, इसे साथ लाया हूं।" मैंने उन्हें नमस्कार किया। फिर नानाजी ने बताया, "ये मेरे मित्र हरमोहन बाबू के छोटे भाई हैं।" उनका नाम था डॉ. दयानिधि पटनायक। नानाजी और दयानिधि बाबू एक-दूसरे को "तू" कहकर संबोधित करते थे। बाद में मुझे पता चला कि डॉ. दयानिधि पटनायक रेवेनशॉ कॉलेज में रसायन विज्ञान के प्रोफेसर थे। तीनों लंबी चर्चा में डूब गए। रात होने पर हमने भोजन किया और अपने टेंट में लौट आए।

अगले दिन सुबह नित्यकर्म और स्नान के बाद नाश्ता किया। आश्रम में अच्छे केले और शुद्ध दूध से बनी कॉफी नाश्ते में मिलती थी। कॉफी पीतल के बड़े गिलास में परोसी जाती थी। उस दिन दोपहर को हमारी चर्चा थी, इसलिए सुबह हमारा भ्रमण का कार्यक्रम था। शायद यह आश्रम की ओर से ही था। मिनी बस से हम पहले महात्मा गांधी के सेवाग्राम आश्रम गए। वहां बहुत शांत वातावरण था। गांधीजी के व्यक्तिगत उपयोग की वस्तुएं जैसे चरखा, चश्मा, कपड़े आदि संरक्षित थे। यह आश्रम वर्धा स्टेशन से 7-8 किमी और आचार्य विनोबा भावे के पवनार आश्रम से 17-20 किमी दूर था।

सेवाग्राम के बाद हम गीताई मंदिर गए। यह निर्माणाधीन जैसा लग रहा था। वहां संग्रहालय और पार्क जैसा माहौल था। बड़े-बड़े पत्थर गोलाकार में जमीन में गढ़े थे (जैसे स्टोनहेंज स्मारक)। प्रत्येक पत्थर पर श्रीमद्भगवद्गीता का एक श्लोक खुदा था। अक्षरों पर रसायन लगाकर पॉलिश की गई थी। उस समय काम पूरा नहीं हुआ था। इन दो स्थानों के बाद दोपहर में हमने आश्रम की खेती की ज़मीन देखी। शाम 4 बजे से संबंधित चर्चा हुई, ल नहीं था। उस दिन शाम को मैं अकेले नदी किनारे घूमने गया।

दो दिन बाद हम घर लौटे। सौभाग्य से वापसी में ट्रेन में सभी को सोने की जगह मिल गई। हम बहुत थक गए थे, इसलिए अधिकतर समय नींद में बीता।

आज उन दिनों को याद करता हूं, तो शरीर रोमांचित हो उठता है। जीवन में कुछ अनुभव ऐसे होते हैं, जिनका महत्व पास रहते समझ नहीं आता, लेकिन जब वे बीत जाते हैं, तब उनकी अनुपस्थिति में उनका महत्व स्पष्ट होता है।

25 नवंबर 2025 को एनआईसी भुवनेश्वर में आयोजित राष्ट्रीय कर्मयोगी व्यापक जन सेवा कार्यक्रम कार्यशाला के पहले बैच के प्रतिभागी।

28 नवंबर 2025 को एनआईसी भुवनेश्वर में आयोजित राष्ट्रीय कर्मयोगी व्यापक जन सेवा कार्यक्रम कार्यशाला के दूसरे बैच के प्रतिभागी।

सुश्री इतिश्री नंदा, निदेशक (आईटी)- उन्हें ऐतिहासिक बलियात्रा 2025 के दौरान प्रतिष्ठित अक्षय मोहंती मंच में सांस्कृतिक रात्रि में भाग लेने के लिए राष्ट्रीय मंचों के विशिष्ट कलाकारों में से चुने जाने का सम्मान प्राप्त हुआ।

1 नवंबर 2025 को, भुवनेश्वर स्थित ट्राइडेंट एकेडमी ऑफ टेक्नोलॉजी ने "भारत में साइबर रक्षा के लिए प्रतिभा विकास" विषय पर एक ज्ञानवर्धक पैनल चर्चा का आयोजन किया, जिसमें एनआईसी के संयुक्त निदेशक (आईटी) श्री नीलाद्री बिहारी मोहंती ने एक विशेष पैनलिस्ट के रूप में भाग लिया।

एनआईसी ओडिशा के नव-भर्ती अधिकारियों ने आईआईटी रुड़की, ग्रेटर नोएडा एक्सटेंशन सेंटर में इंडक्शन ट्रेनिंग में भाग लिया।

जागृति

डॉ. अजय केतन सारंगी
वरिष्ठ निदेशक (आई टी)

जीवन में हम कई चुनौतियों का सामना करते हैं और उन पर काबू पाने के लिए हमें दूसरों के साथ-साथ एक सकारात्मक मानसिकता की आवश्यकता होती है। हमारा मन न केवल हमारे स्वास्थ्य, अनुभवों, ज्ञान, विश्वासों और ऐसे कारकों जैसे आंतरिक कारकों का प्रतिबिंब है, बल्कि यह अन्य बाहरी कारकों जैसे मौसम, परिवेश, लोगों की राय, उपदेश आदि से भी प्रभावित होता है।

मन और शरीर के बीच का संबंध हमेशा से शोध का विषय रहा है। हालाँकि आधुनिक चिकित्सा विज्ञान ने कुछ शारीरिक, संरचनात्मक और तंत्रिका तंत्र संबंधों की पहचान की है, लेकिन ये तो बस एक छोटी सी बात है। हमारा मस्तिष्क शरीर को नियंत्रित करता है, लेकिन मस्तिष्क को कौन नियंत्रित करता है? इसका उत्तर अभी खोजा जाना बाकी है और निष्कर्ष अभी भी प्रतीक्षित हैं। अगर हम यह परिकल्पना करते हैं कि हमारा मस्तिष्क हमारे मन को नियंत्रित करता है, तो ऐसी कई मनोवैज्ञानिक स्थितियाँ हो सकती हैं जहाँ यह परिकल्पना निरर्थक और अमान्य हो सकती है।

आधुनिक विज्ञान के क्षेत्र में, ऐसी कई भौतिक घटनाएँ हैं जिनका हम अनुभव करते हैं, फिर भी हो सकता है कि इनकी व्याख्या के लिए कोई वैज्ञानिक सिद्धांत न हों। हम कहते हैं, "देखना ही विश्वास करना है", लेकिन दृश्यमान स्पेक्ट्रम विभिन्न जीवों में दृष्टि की अनुभूति को अलग-अलग तरीके से उत्पन्न कर सकता है। कुछ जीवों को दृष्टि की अनुभूति के लिए किसी फोटोनिक आवृत्ति परास की भी आवश्यकता नहीं होती, जबकि हम मनुष्यों ने दृश्यमान स्पेक्ट्रम से परे दृष्टि की अनुभूति उत्पन्न करने के लिए इन्फ्रारेड कैमरे, न्यूट्रॉन/गामा फोटॉन और अन्य डिटेक्टर, और कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) आधारित एल्गोरिदम जैसे विभिन्न इलेक्ट्रॉनिक उपकरण विकसित किए हैं। कृत्रिम वास्तविकता और आभासी वास्तविकता के अनुप्रयोगों के बारे में और क्या कहा जाए?

हमारे प्राचीन ग्रंथों में कहा गया है कि ऐसे संत, भिक्षु और महर्षि थे जो अपनी आँखें बंद करके खगोलीय दूरी से घटनाओं का दृश्य देख सकते थे। क्या यह क्वांटम दृश्य था? क्या यह अतीन्द्रिय बोध था? क्या यह अतिरिक्त-संवेदी धारणा थी? क्या यह आध्यात्मिक अनुभूति थी? या यह एक मिथक था? अभी कई सवालों के जवाब मिलने बाकी हैं? कई वैज्ञानिक सिद्धांत अभी गढ़े जाने बाकी हैं, और कई तकनीकों का डिज़ाइन, विकास और उपयोग होना बाकी है। इन सबके लिए मानव अस्तित्व से मानव विकास (एवोल्यूशन) तक की आवश्यकता हो सकती है।

हमें एक प्रजाति के रूप में ऐसी आध्यात्मिक प्रजाति के रूप में विकसित होना होगा ताकि हम ब्रह्मांड और वास्तविकता को उपकरणों के माध्यम से नहीं, बल्कि स्वयं को क्वांटम-भौतिक संस्थाओं के रूप में विकसित करके, कणों की अवस्थाओं, उनके समन्वय, उनकी सुसंगतता और उलझाव को समझने की क्षमता के साथ देख सकें। । तभी हम प्रकृति के मूलभूत नियमों को समझने, कल्पना करने, अनुभव करने और व्याख्या करने में सक्षम हो पाएँगे ताकि वैज्ञानिक सिद्धांतों का निर्माण और सिद्धांतीकरण किया जा सके। ये सिद्धांत तकनीकी और प्रौद्योगिकी विकास का मार्ग प्रशस्त कर सकते हैं।

हालाँकि, ऐसी क्वांटम आध्यात्मिक अवस्थाओं को प्राप्त करने के लिए, हमें उन प्राचीन संतों, भिक्षुओं और महर्षियों जैसी आध्यात्मिक साधनाएँ अपनानी पड़ सकती हैं जो स्वयं को क्वांटम-जैविक रोबोट में रूपांतरित करती हैं। निश्चित रूप से, इसके लिए हम सभी को "जागृति" मनःस्थिति की आवश्यकता है।

डीएनए डेटा स्टोरेज तकनीक: भविष्य की डेटा संग्रहण क्रांति

श्री तपन कुमार बेहेरा
संयुक्त निदेशक (आई टी)

परिचय:

वर्तमान डिजिटल युग में डेटा का उत्पादन अभूतपूर्व दर से हो रहा है। वैज्ञानिक शोध, व्यावसायिक गतिविधियाँ, सोशल मीडिया, और इंटरनेट ऑफ थिंग्स (IoT) जैसे क्षेत्रों से उत्पन्न हो रहे डेटा की मात्रा हर वर्ष दोगुनी हो रही है। पारंपरिक स्टोरेज माध्यम—जैसे हार्ड डिस्क ड्राइव (HDD), सॉलिड स्टेट ड्राइव (SSD), और क्लाउड सर्वर—दीर्घकालिक और अत्यधिक घनत्व वाले डेटा भंडारण की मांग को लंबे समय तक पूरा नहीं कर पाएंगे। इस संदर्भ में, डीएनए डेटा स्टोरेज तकनीक एक अत्याधुनिक विकल्प के रूप में उभर रही है, जो जैविक अणु डीएनए का उपयोग कर डेटा को संग्रहित करने की क्षमता रखती है। यह तकनीक न केवल डेटा घनत्व, स्थायित्व और दीर्घायु में क्रांतिकारी परिवर्तन ला सकती है, बल्कि यह भौतिक स्थान और ऊर्जा की खपत को भी न्यूनतम कर सकती है।

डीएनए डेटा स्टोरेज: अवधारणा और प्रक्रिया:

डीएनए (DNA–Deoxyribonucleic Acid) प्रकृति की सबसे जटिल और कुशल सूचना संग्रह प्रणाली है, जो जीवित प्राणियों की आनुवंशिक जानकारी को चार न्यूक्लियोटाइड्स (A, T, C, G) के रूप में संग्रहित करता है। इसी सिद्धांत का अनुप्रयोग करते हुए, वैज्ञानिकों ने डिजिटल डेटा (0 और 1) को डीएनए अनुक्रमों में एन्कोड करने की तकनीक विकसित की है।

कार्यप्रणाली:

- एन्कोडिंग (Encoding): डिजिटल डेटा को पहले बाइनरी फॉर्मेट (0s और 1s) में बदला जाता है, फिर उसे न्यूक्लियोटाइड्स (A, T, C, G) के क्रम में परिवर्तित किया जाता है। उदाहरण:
- 00 = A 11=T 01 = C 10 = G
- डीएनए सिंथेसिस (Synthesis): एन्कोडेड अनुक्रमों के आधार पर कृत्रिम डीएनए अणुओं को लैब में निर्मित किया जाता है।
- स्टोरेज (Storage): तैयार डीएनए को विशेष परिस्थितियों में संग्रहित किया जाता है, जहां यह हजारों वर्षों तक स्थिर रह सकता है।
- रीडिंग और डीकोडिंग (Sequencing & Decoding):
- आवश्यकता होने पर, डीएनए को सीक्वेंसिंग तकनीक से पढ़ा जाता है और पुनः डिजिटल फॉर्मेट में बदला जाता है।

वर्तमान शोध और विकास:

वर्तमान में कई प्रतिष्ठित संस्थान एवं कंपनियाँ इस क्षेत्र में निवेश कर रही हैं:

- माइक्रोसॉफ्ट (Microsoft) और वाशिंगटन विश्वविद्यालय (University of Washington) ने मिलकर डीएनए आधारित ऑटोमेटेड स्टोरेज सिस्टम का प्रोटोटाइप विकसित किया है।
- ट्विस्ट बायोसाइंस(Twist Bioscience) और हार्वर्ड विश्वविद्यालय(Harvard University) इस तकनीक की लागत को कम करने और व्यावसायिक रूप से सुलभ बनाने पर कार्यरत हैं।
- शोधकर्ताओं ने सफलतापूर्वक शेक्सपियर के नाटक, म्यूजिक फाइल्स, और वैज्ञानिक शोध पत्रों को डीएनए में संग्रहित किया है।

वर्तमान शोध और विकास:

वर्तमान में कई प्रतिष्ठित संस्थान एवं कंपनियाँ इस क्षेत्र में निवेश कर रही हैं:

- माइक्रोसॉफ्ट (Microsoft) और वाशिंगटन विश्वविद्यालय (University of Washington) ने मिलकर डीएनए आधारित ऑटोमेटेड स्टोरेज सिस्टम का प्रोटोटाइप विकसित किया है।
- ट्विस्ट बायोसाइंस(Twist Bioscience) और हार्वर्ड विश्वविद्यालय(Harvard University) इस तकनीक की लागत को कम करने और व्यावसायिक रूप से सुलभ बनाने पर कार्यरत हैं।

- शोधकर्ताओं ने सफलतापूर्वक शेक्सपियर के नाटक, म्यूजिक फाइल्स, और वैज्ञानिक शोध पत्रों को डीएनए में संग्रहित किया है।

भविष्य की संभावनाएँ: डीएनए डेटा स्टोरेज तकनीक का भविष्य अत्यंत संभावनाओं से भरपूर है ।

- आर्काइव स्टोरेज: दीर्घकालिक सरकारी, ऐतिहासिक और वैज्ञानिक रिकॉर्ड के संग्रहण में इसका विशेष उपयोग हो सकता है।
- स्पेस मिशन: सीमित स्थान और संसाधनों वाले अंतरिक्ष अभियानों में उच्च डेटा घनत्व वाले स्टोरेज समाधान आवश्यक हैं।
- डिजिटल ग्रीन स्टोरेज: यह तकनीक कार्बन फुटप्रिंट को घटाने में सहायक हो सकती है।

निष्कर्ष:

- डीएनए डेटा स्टोरेज तकनीक न केवल एक वैज्ञानिक चमत्कार है, बल्कि यह आधुनिक सूचना युग की एक अत्यावश्यक आवश्यकता भी बनती जा रही है। यद्यपि इस तकनीक के व्यावसायीकरण में अभी समय और अनुसंधान की आवश्यकता है, फिर भी यह स्पष्ट है कि जैविक अणु आधारित स्टोरेज मानवता के डेटा-संकट का स्थायी समाधान प्रदान कर सकता है।
- भविष्य में, संभव है कि हमारी डिजिटल यादें और ज्ञान, सिलिकॉन चिप्स में नहीं, बल्कि सूक्ष्म डीएनए अणुओं में सहेजे जाएँ — बिल्कुल वैसी ही प्रणाली में, जिसे प्रकृति ने अरबों वर्षों से पूर्ण किया है।

"फ्यूचर गवर्नमेंट एआई कॉन्क्लेव" का उद्घाटन ओडिशा सरकार के माननीय इलेक्ट्रॉनिक्स और आईटी, स्वास्थ्य और परिवार कल्याण और संसदीय मामलों के मंत्री डॉ. मुकेश महालिंग द्वारा गुरु केलु चरण महापात्र ओडिसी अनुसंधान केंद्र, भुवनेश्वर में किया गया।

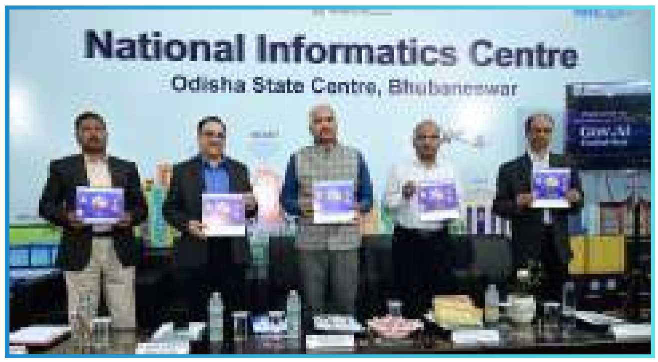

राज्य स्तरीय ई-गवर्नेंस कार्यशाला और गवर्नमेंट ए आई एक्सपो के अवसर पर, वर्ष 2025 के लिए परियोजना प्रोफाइल और गवर्नमेंट एआई एक्सपो के संग्रह का विशिष्ट अतिथियों द्वारा टेबल कैलेंडर के रूप में अनावरण किया गया।

आनंद, चिंतन और टीम भावना के साथ 2025 का स्वागत।

अपनी दुनिया की कहानी

श्री विश्वरंजन भुक्ता
संयुक्त निदेशक (आई टी)

सुबह की कुम्भी किरण की रोशनी धीरे-धीरे कमरे में फैल रही थी कि अविनाश की नींद टूट गई। उसका दिल धड़क रहा था, जैसे मन की कुछ उलझनें जाग चुकी हों। चुप-चाप वह बेड से उठा ताकि किसी को परेशानी न हो । कमरे में चारों तरफ सन्नाटा था । बच्चे गहरी नींद में थे और पत्नी पूजा के चेहरे पर भी आराम की छाया थी । यह देख उसके मन को कुछ सांत्वना मिली, लेकिन साथ ही ऑफिस के बोझ ने फिर से उसकी चिंता में आग लगा दी । अविनाश धीरे-धीरे रसोई में गया, चाय बनाने लगा । वह चाय की खुशबू में अपने दिमाग को कुछ हद तक सुकून देने की कोशिश कर रहा था, पर उसकी सोच लगातार भाग रही थी ।बच्चों के स्कूल टिफिन की तैयारी शुरू कर दी, उनके पसंदीदा व्यंजन बनाने की कोशिश में मन लगा रहा, ताकि बच्चे दिन भर खुश रहें। पूजा का बैग देखा, जिसमें किताबें, जरूरी कागजात, और स्कूल की नोटबुकें पड़ी थीं । उसे देखकर मन में गर्व और जिम्मेदारी दोनों की भावनाएँ जाग उठीं । पूजा, उसकी सबसे बड़ी सहारा, जो दिन-रात परिवार के लिए खुदको समर्पित कर देती है, उसे देख वह खुद को सौभाग्यशाली मानता था।

फिर भी उसके दिल के किसी कोने में एक भारीपन छिपा था । ऑफिस की उलझी हुई फाइलें, आए दिन बढ़ते कार्यभार, उनके बीच बातचीत की ज़िम्मेदारी, और वह लगातार समय की कमी की पीड़ा महसूस करता था । सोचता था कि क्या वह अपने परिवार को वह समय और ध्यान दे पा रहा है, जिसकी वे हक़दार हैं । कभी-कभी तो उसे लगने लगता था जैसे एक जाल में फंसा हुआ हो—जहाँ एक तरफ नौकरी की डेडलाइन और मानदेय, और दूसरी तरफ बच्चों की पढ़ाई, उनके सपने, और पत्नी की समस्याएं थीं । इस जाल से बाहर निकलने का रास्ता वह खोज रहा था । यह भी पता था कि घर और ऑफिस के बीच यह संतुलन बनाना आसान नहीं था । कई बार सुबह जल्दी उठाना, देर तक जागना, परिवार के साथ बिताए जाने वाले पल कम होना, और तनाव के कारण सामाजिक जीवन भी प्रभावित होता था।

मगर फिर भी, वह उस सुकून की तलाश में था जो केवल परिवार की मुस्कान और घर की खुशियों में ही मिलती थी। यही सोचकर वह चाय लेकर वापस कमरे में गया, कुछ देर चुप-चाप बैठा, और सारे दिन की ऊर्जा जुटाने की कोशिश की । इस छोटे से पल में अविनाश ने अपने भीतर की चिंगारी को महसूस किया—जो हर दिन उठकर फिर से काम करने, परिवार का सहारा बनने और अपने सपनों को साकार करने के लिए उसे प्रेरित करती थी । सुबह की रौनक में डूबा यह पल, उसके दिन की शुरुआत में उम्मीद की किरण लेकर आता था—कि आज भी वह बेहतर करेगा, आज भी अपने परिवार और काम के बीच बेहतर संतुलन बनाएगा । पूजा बच्चों को धीरे-धीरे जगा रही थी। वह बहुत प्यार से उनका कपड़ा ठीक कर रही थी, ताकि वे आराम से उठें और कोई परेशानी न हो। बच्चों की नींद एकदम गहरी थी, लेकिन पूजा के प्यार भरे हाथों ने उन्हें आराम से जगाया। वे मुंह मिचकाते हुए उठे, और पूजा ने उनके लिए ताज़ा नाश्ते की तैयारी करनी शुरू की। उसी बीच, उसने माँ के कमरे में जाकर दवाइयों का इंतजाम भी किया ताकि उनकी सेहत ठीक रहे । माँ बीमार थी इसलिए पूजा हर रोज़ उनकी देखभाल में पूरी तत्परता रखती थी।

अविनाश, खिड़की के पास खड़ा ऑफिस के फाइलों के बीच उलझा हुआ था। उसका मन रोज़ की तरह परिवार की चिंता में था। उसे याद आया कि बच्चों की कल स्कूल में प्रतियोगिता है, जिसमें बच्चों ने बहुत मेहनत की है। साथ ही, माँ की तबीयत भी ठीक नहीं लग रही थी, जिसे लेकर वह चिंतित था। ऑफिस की रिपोर्ट की डेडलाइन भी पास आ रही थी, और उस पर काम का भारी दबाव था। अविनाश सोच रहा था कि कैसे इन तीनों बड़ी जिम्मेदारियों को मिलाकर वह सब कुछ सही समय पर पूरा कर पाएगा। उसने मन ही मन कहा, "कितनी मुश्किल है यह संतुलन बनाना — जहाँ घर, नौकरी, और खुद की उम्मीदें साथ-साथ चलें। इस बीच सवाल उठता है कि क्या मैं यह सब सही से निभा पाऊंगा?" उस समय उसकी आँखों में चिंता और आशंका एक साथ झलक रही थी, लेकिन वह जानते था कि उसे हिम्मत नहीं हारनी है।

दिल्ली के भीड़-भाड़ वाले रास्तों से गुजरते हुए अविनाश ऑफिस पहुँचा। चारों ओर ज्यादा आवाज़ें थीं — वाहन हॉर्न, लोगों की बातें, कहीं-कहीं से निकलता प्रदूषण का धुआँ और ट्रैफिक जाम की खलखलाहट। उसके पैर थक रहे थे, मन तेजी से सोच रहा था, लेकिन वह खुद को संभाले हुए था। बाइक से उतरना पड़ रहा था क्योंकि ट्रैफिक इतना जाम था कि आगे बढ़ना मुश्किल हो रहा था । उसने गहरी सांस ली और ऑफिस भवन के अंदर कदम रखा । कार्यालय के वातावरण में पहुँचते ही उसकी सारी चिंताएँ लौट आईं । कंप्यूटर स्क्रीन के सामने बैठते ही फोन की घंटी बजी। एक के बाद एक आवाज़ें आतीं — मीटिंग की पुकार, रिपोर्ट के लिए आग्रह और कई तकनीकी समस्याएं। वह अपने सहकर्मियों के बीच जाकर चर्चा करने लगा, समस्याएं सुनता, समाधान सुझाता और टीम को दिशा देता। यह सब उसके काम का आवश्यक हिस्सा था। वह जानता था कि उसकी भूमिका जितनी चुनौतीपूर्ण है, उतनी ही ज़िम्मेदारी भरी भी। लेकिन आज दिल में कहीं एक बेचैनी सी थी जो कम होने का नाम नहीं ले रही थी।

दोपहर का समय था, लेकिन लंच का नजारा कुछ खास नहीं था। उसने जल्दी से खाना खाया ताकि जल्दी से काम पर लौट सके। लेकिन मन में घर की यादें बार-बार आती थीं । फोन बजा, पूजा की आवाज़ आई—"पापा, बच्चा कल की चित्रकला प्रतियोगिता के लिए बहुत उत्साहित है। क्या आप आ पाएंगे?" अविनाश ने मुस्कुराते हुए जवाब दिया, "ज़रूर, मैं कोशिश करूंगा।" पर उसके दिल में चिंता थी कि काम की व्यस्तता उसे परिवार के करीब आने नहीं दे रही। शाम होते-होते शरीर थक चुका था, लेकिन मन की थकान बाकी थी । ऑफिस से बाहर निकलते हुए उसने आस-पास की चलती-फिरती ज़िंदगी को देखा। रुक-रुक कर चलती गाड़ियां, लोगों की गहमागहमी, यह सब उसे जीवन के बड़े संघर्ष का अहसास दे रहा था । घर की ओर बढ़ते वक्त वह सोच रहा था कि घरके बच्चों की हँसी और पत्नी की ममता उसे आने वाले कल के लिए ताकत देती हैं।

घर के दरवाज़े पर बच्चे दौड़े आ रहे थे, उनकी हँसी पूरा घर भर रही थी । पूजा ने उसकी पसंद की चाय बनाकर दी और घर के छोटे-छोटे कामों की बातों में वह कुछ वक्त के लिए अपने तनाव को भूल गया । बच्चों के सीखने की कहानियां, माँ के स्वास्थ्य की चिंता और परिवार के छोटे संघर्षों में उसकी खुशियाँ छुपी हुई थीं। उसे पता था कि घरके ये पल उसके पूरे दिन की थकान का सबसे बड़ा इनाम हैं । लेकिन रात के सन्नाटे में जब सब लोग गहरी नींद में डूबे होते हैं, तब अविनाश अपने कमरे में अकेले बैठकर अपने दिन भरके झमेले पर सोचने लगता है।

वह सवाल करता है कि क्या वह अपने परिवार के लिए सही मायनों में पर्याप्त समय दे पा रहा है? क्या वह काम के बोझ के कारण किसी तरह से अपने घरवालों की भावनाओं को ठेस पहुँचा रहा है? क्या काम की व्यस्तताओं ने उन्हें उससे दूर कर दिया है? इन सवालों की वजह से उसके दिल में एक हल्की सी बेचैनी छाई रहती है जो उसे चैन से सोने नहीं देती। उसे अपने परिवार के प्यार और आश्रय की बहुत आवश्यकता होती है, लेकिन यह भी पता है कि यह रास्ता जितना कठिन है, उतना ही जरूरी भी।

अविनाश खुद को समझाता है कि जीवन में यह संघर्ष आम बात है और इसके बिना कोई भी सफलता या खुशियाँ पूरी नहीं होतीं। अगले दिन सूरज की पहली किरण के साथ वह फिर नया उत्साह लेकर उठता है, चुनौतियों का सामना करता है, अपने कर्तव्यों को निभाता है और अपने परिवार को खुश रखने का प्रयास करता है। यही उसकी जीवन की सार्थकता है।

अविनाश की यह कहानी उन अनगिनत तबके के लोगों की कहानी है, जो हर दिन परिवार और काम के बीच संतुलन बनाकर जी रहे हैं। यह संघर्ष, यह जद्दोजहद एक सामान्य इंसान की असाधारण कहानी है, जो अपने सपनों और जिम्मेदारियों के बीच कभी झुका नहीं, और हर दिन एक नई उम्मीद के साथ आगे बढ़ता है।

आधा गिलास पानी

श्री क्षीरोद कुमार साहु
संयुक्त निदेशक (आईटी)

विजय जीवन में होने वाली कई समस्याओं का समाधान खोजने के लिए अपने गुरु के पास आया है । ऐसे भी, विजय अपने ये गुरु के पास आता रहता है बीच बीच में । गुरुजी एक विनम्र तथा निर्लोभी व्यक्ति हैं। बाहर देखने के लिए कुछ भी नहीं था उनके पास । गुरुजी अपने पैतृक घर में अपना साधना केंद्र चलाते थे। वह अपने परिवार के साथ वहां रहते थे। घर के पीछे डेढ़ एकड़ खेत था । वहाँ से जो कुछ भी फसलें उगाई किया जाता है वह उसमें चल जाते थे । वह स्वयं आधुनिक तरीके से सब्जियों, फलियों की खेती करते हैं। उन्होंने अपने द्वारा पाले गए दो गायों के गोबर से जैविक खाद तैयार करके उसे अपने खेत में इस्तेमाल करते थे । बहुत ही सरल जीवन था उनके ।

गुरु ने धैर्यपूर्वक विजय की सभी समस्याओं को सुना। कुछ देर आंखें बंद करके बैठने के बाद उन्होंने मुस्कुराते हुए अपनी आंखें खोलीं और विजय की ओर देखा। "अच्छा विजय ! क्या आप एक समस्या मुक्त जीवन जीना चाहते हैं? या आप जीवन की चुनौतियों से उचित रूप से निपटने की क्षमता चाहते हैं?" विजय ने गुरुजी को मूर्ख जैसे भाव लेकर देखा ।

"विजय ! क्या आपने कभी छोटे छोटे चिड़िया को अगले दिन के लिए खाना बचाते हुए देखा है?"
"नहीं महाशय !"

"हम मनुष्य इन छोटे चिड़िया की तुलना में यथेष्ट बुद्धिमान हैं, हम धन कमा रहे हैं, हम बचत कर रहे हैं। और इतनी सारी व्यवस्थाओं के बाद भी हम उस खुशी को महसूस क्यों नहीं करते? जो खुशी लाती है वह उसके छोटे जीवन में ?"फिर एक बार विजय ने गुरुजी को मूर्ख जैसे भाव लेकर ताका । "असल में तथ्य यह है कि भले ही हमारे पास आनंद देने के लिए पर्याप्त साधन हों, हम सच्चे आनंद का स्रोत नहीं पा सकते हैं। अरे विजय, अब एक काम करो। मुझे मेज़ पर पानी का एक गिलास लाओ। अब मैं तुमको कुछ दिलचस्प दिखाता हूँ। "

विजय उठा, मेज़ से गिलास उठाया और गुरु की ओर हाथ बढ़ाया। गुरुजी ने गिलास लेकर आधा गिलास पानी डाला और विजय से पूछे, "ठीक है, विजय, इस गिलास को देखो। इसमें कितना पानी है?"

"हाँ, यह आधा गिलास होगा।"
"अब मुझे बताओ, इसमें आधा गिलास पानी है या आधा गिलास खाली?"
गुरु के सवाल से विजय थोड़ा हैरान रह गया। उसने कहा, "हाँ, आधा गिलास पानी है।"

"बहुत अच्छा। हालाँकि, बहुत से लोग गिलास में खाली जगह को देखते हैं। चाहे उनके पास कितना भी हो, वे खुश नहीं हैं, क्योंकि जो उनके पास नहीं है, उसके बारे में उन्हें बुरा लगता है। इस बार आप क्या कहना चाहते हैं! क्या आप अपने पास जो है उससे खुश होंगे या जो आपके पास नहीं है उससे दुखी होंगे? आपकी खुशी पूरी तरह से आप पर निर्भर करती है।"

इस बार विजय के चेहरे पर थोड़ी मुस्कान थी। "हाँ, यह सच है। दूसरों की खुशी देखकर दुख होता है। क्या करूँ ? नीची सी प्रकृति मुझे ठाकुर ने दिया है।"

"एक बार जब आप खुद के पास स्वीकार कर लेते हो कि ये सब मामूली स्वभाव हैं, तो अगली सुबह आप एक अलग व्यक्ति होंगे, एक अच्छी मानसिकता वाले व्यक्ति होंगे । अब मैं आपसे पूछता हूँ कि इस आधे गिलास पानी का वजन लगभग कितना होगा ?"

"हाँ। हां. और कितना होगा ? यह कोई 200 से 300 ग्राम होगा।" विजय ने मुसकराते हुए कहा।
"ठीक है विजय, क्या तुम यह आधा गिलास पानी उठा सकते हो?"

"आप क्या कह रहे हैं?" विजय ने थोड़ा हैरान होते हुए पूछा।"ओह, यह अच्छी बात है। यदि आप कहते हैं कि आप इस आधे गिलास पानी को उठा सकते हैं, तो इसे उठाएं और अपने दाहिने हाथ से पकड़ें। और अपने हाथों को अपने सामने सीधा रखें और इसी तरह आपको इसमें लगभग 20 मिनट खड़ा रहना पड़ेगा । क्या आप ऐसा कर सकते हैं? "

विजय ने कहा,"मैं कर सकता हूँ। यह इतना हल्का वजन है, निश्चित रूप से मैं कर सकता हूं।"

गुरुजी इस बार मुस्कुराए और कहा,"तो फिर देर क्यों? मैं घड़ी देख रहा हूँ। ठीक बीस मिनट में, मैं आपको बुलाउंगा ।"

विजय ने संकोच नहीं किया और अपने दाहिने हाथ से पानी का आधा भरा गिलास अपने सामने पकड़के रखा और स्थिर खड़ा हो गया। गुरुजी ने अपनी घड़ी में समय देखा और घर के अंदर चले गए।

मिनट पर मिनट बीत जा रहा था । विजय को आश्चर्य होता है कि गुरुजी इस सामान्य कार्य के साथ क्या साबित करना चाहते हैं। बस तीन मिनट बाद, विजय ने अचानक पानी के साथ गिलास का वजन थोड़ा अधिक महसूस किया। जैसे-जैसे समय बीतता गया, विजय को धीरे-धीरे एहसास हुआ कि बीस मिनट का समय में उसका दाहिना हाथ बढ़ते वजन से फट गया होगा। एक आधा गिलास पानी का वजन इतना कैसे हो सकता है ! 10 मिनट बाद विजय रो पड़ा। 12 मिनट के अंत में, रोते हुए, उन्होंने गुरुजी को बुलाया।

गुरु एक चौड़ी मुस्कान के साथ बाहर आए। उन्होंने पूछा, "क्या हुआ? तूने मुझे क्यों बुलाया? अभी 15 मिनट भी नहीं हुए हैं। क्या आप 200 से 300 ग्राम वजन का गिलास नहीं पकड़ सकते?"

"नहीं, गुरुजी, उस गिलास का वजन अब दस किलो जैसे है। शायद कुछ समय बाद वह पचास किलो हो जाएगा। मुझे अपने हाथ नीचे करने दें। और मैं ये काम नहीं कर सकता।"

"निश्चित रूप से विजय, अब अपने हाथ नीचे करो। लेकिन मुझे आश्चर्य है कि आप जैसा स्वस्थ मजबूत आदमी चीजों का एक छोटा सा भार क्यों नहीं उठा सकता?"
विजय ने अपना हाथ नीचे किया और गिलास को मेज़ पर रख दिया। ओह, क्या राहत है !

"देखो विजय, अगर आप केवल 20 मिनट के लिए केवल 200 से 300 ग्राम वजन का गिलास पकड़ते हैं और इसका वजन पचास किलो लगता है, तो आपने अपने अंदर नफरत, दुश्मनी आदि की भावनाओं को इतने लंबे समय तक पकड़ रखा है कि इसका वजन भी धीरे-धीरे अंदर बढ़ रहा है। कभी-कभी यह आपके लिए खतरनाक हो सकता है। यह भी हो सकता है कि किसी और ने आपकी गलती के बिना आपको नुकसान पहुंचाया हो। आपको उस पर गुस्सा आता है। लेकिन आपको लंबे समय तक मन की अंदर में वह गुस्सा को पकड़ कर नहीं रखना है। उन सभी को छोड़ दें। अन्यथा, वे छोटी-छोटी चीजें आपके अंदर समय के साथबड़ी ही रह जाएंगी, जो आपके लिए बहुत हानिकारक साबित होंगी। क्या आप कुछ समझते हैं? "

विजय को अब बहुत हल्का महसूस हो रहा था। गुरुजी ने वास्तव में क्या जादू किया !!

विजय ने बड़ी विनम्रता के साथ कहा, "गुरुजी! आप ने आज मुझसे एक बड़ी बात कही। अब मुझे एहसास हुआ कि सारा दोष मुझ में है। "

" उस गिलास को देखो विजय ! गिलास में पानी को देखो। देखो, पानी ने भी गिलास का आकार ले लिया है। अगर मैं अब उस पानी को एक शीशी में डाल दूं, तो क्या पानी पहले की तरह ही गिलास जैसा रहेगा या वह शीशी जैसा आकार ले लेगा?"

"नहीं, गुरुजी, अगर एक बोतल में पानी डाला जाए, तो वह एक बोतल का आकार ले लेगा।"
"यदि पानी सभी पात्रों में फिट नहीं हो सकता है, तो गिलास में अब जो पानी है, वह शीशी में जाना असंभव है। इसलिए, अगर हम मनुष्य बुद्धि विवेक सम्पन्न हो कर भी विभिन्न स्थितियों का सामना करने में सक्षम नहीं हैं, तो व्यक्तिगत रूप से बड़ी समस्याएं उत्पन्न होंगी। इसलिए पानी के इस गुण को याद रखें।"

"एक और बात, चाहे पानी कांच का गिलास में हो या मिट्टी के बर्तन या चांदी के बर्तन में , यह हमेशा अपनी विशिष्टता को बरकरार रखता है। यह विशेषता दूसरों की प्यास बुझाने की है। आपके पास जो भी अच्छे गुण हों, चाहे स्थिति कितनी भी खराब क्यों न हो, उन गुणों को नष्ट या त्याग न करें।"

विजय गुरुजी के शब्दों से मंत्रमुग्ध हो जा रहा था ।

"अब मैं आपको एक और एक चमत्कार दिखाऊंगा। क्या आप इसे देखेंगे?" गुरु जी ने पूछा।
विजय ने उत्साह से सिर हिलाया।
"फिर जाओ और दो स्थानों पर बाहर से कुछ कंकर और रेत ले आओ। " गुरुजी ने आदेश दिया। विजय उठा और पत्तियों की दो चादरों पर कंकर और रेत की कुछ छोटी गांठें ले आया।

गुरुजी एक खाली गिलास ले आए और उसमें विजय द्वारा लाया गया कंकर डालने लगे। कुछ ही देर में गिलास भर गया। गिलास को थोड़ी देर हिला कर उसमें कुछ और कंकर डालें। इस बार उन्होंने पूछा, "विजय, देखो! गिलास अब कंकर से भरा हुआ है। क्या आप इस गिलास में और कंकर डाल सकते हैं?"

विजय ने जवाब दिया, "नहीं, गुरुजी । इसके लिए और जगह नहीं होगी। और जो कुछ भी डाला जाएगा, इस बार वह नीचे गिर जाएगा।"

"तो, गिलास में और जगह नहीं है?" गुरु जी ने पूछा।
"नहीं! "विजय ने जवाब दिया।

"ठीक है। अब मैं गिलास में कुछ रेत डाल रहा हूँ। "यह कहते हुए, गुरुजी ने रेत के थैले से रेत गिलास में डाल दी। रेत की धार कंकरों के बीच खाली जगह में घूषता जाता था। कुछ देर बाद गिलास में रेत गिर गई। विजय को आश्चर्य हुआ। गिलास में और भी इतनी जगह थी !

"देखो विजय, शायद गिलास में कंकरों के लिए और जगह नहीं थी। लेकिन वहाँ कुछ रेत के लिए जगह रही होगी। ठीक है, अब मुझे बताइए, क्या गिलास में कोई जगह बची है?"

"नहीं!" विजय ने जवाब दिया।
गुरुजी ने मुस्कुराते हुए कहा, "ठीक है, देखते हैं!" यह कहते हुए, उसने एक बर्तन से पानी गिलास में डालना शुरू किया । पानी कंकरों और रेत में गहराई तक घुस गया। अब पानी गिलास के किनारे तक पहुँच गया था। विजय यह देखकर हैरान रह गया। आखिर गुरुजी उसे क्या बताना चाहते हैं ?

गुरुजी ने फिर पूछा, "ठीक है, अब मुझे बताइए, क्या गिलास में कोई जगह बची है?"

"नहीं! अब कोई जगह नहीं है! गिलास में कुछ भी न रखें!" विजय ने थोड़ा जोर देते हुए कहा।

इस बार, गुरुजी उठे और पास के एक घर से एक चम्मच चीनी लेकर आए और उसे गिलास में डाल दिये। थोड़ी देर बाद चीनी पानी में घुल गई थी ।

"मेरे गिलास में अभी भी जगह है! "गुरुजी ने कहा। इस बार मोगरा फूलों की पंखुड़ियां लेकर आई और उन्हें गिलास में पानी पर डाल दिया। "अब ये गिलास पानी भी सुगंधित होना चाहिए! आपका क्या राय है विजय?

विजय को आश्चर्य हो रहा था कि कैसे कंकर, रेत, पानी, चीनी और मोगरा फूलों की पंखुड़ियां एक छोटा गिलास में इतनी खूबसूरती से एक साथ आ सकता है। गुरुजी मुस्कुराए और आश्चर्य चकित होता हुआ विजय को देखा। "आपने क्या देखा? "गुरु जी ने पूछा।

विजय को यह बात समझ में नहीं आ रहा था ।

"देखो विजय , एक गिलास को खाली कंकर, या खाली रेत, या पानी या चीनी से भरा जा सकता है। लेकिन हमें उस एक गिलास में सब कुछ रखना होगा। हमारे पास अब दूसरा गिलास नहीं है। हमारे जीवन भी ऐसा ही होता है। गिलास के रूप में इस जीवन में हमें कंकर रूप का मुख्य कर्म, रेत रूप के छोटे गौण कर्म भी करने होते हैं।

आपको पानी का रूप में भी सेवा परोसना होगा, अपने आप को फिर प्राणबंत रखने के लिए अवकाश या मनोरंजन के रूप में चीनी के लिए कुछ जगह रखना होगा और अंत में अपने जीवन में एक लचीले फूल की पंखुड़ियों जैसे दूसरों के अच्छे गुणों को आत्मस्थ करना होगा। अन्यथा, जीवन पूर्ण नहीं होता। जैसे अपने भीतर कुछ कुछ खालीपन रह जाएगा ।"

यह सब सुनना सरल विजय के मन में चंदन शीतल मलय हवा जैसा था। बहुत हल्का लग रहा था उसको । मानो उसकी सारी समस्याएं उसी हवा में अंतर्हित हो गई हों।

विजय गुरुजी को नमन करने के बाद अपने चेहरे पर एक शांत भाव के साथ आश्रम से निकल रहा था । गुरुजी गेट के पास आए और विजय के बाहर निकलने को देखते हुए खड़े हो गए। उनके चेहरे पर स्वभावसुलभ एक फीकी मुस्कान थी।

केरल: प्रकृति, संस्कृति और यादों से भरी एक अविस्मरणीय यात्रा

श्री सिद्धार्थ कुमार मंडल
उप निदेशक (आई टी)

केरल—प्रकृति, संस्कृति और यादों से भरी एक अविस्मरणीय यात्रा, जो मेरे जीवन की सबसे खूबसूरत यात्राओं में से एक बन गई। LTC के तहत मैंने अपने परिवार और NIC के चार सहकर्मियों के साथ उनके परिवार सहित केरल की 9 दिनों की यात्रा की। भुवनेश्वर से बेंगलुरु होते हुए हमारी उड़ान कोच्चि पहुँची।

एक ट्रैवल ऑपरेटर ने हमारा पूरा पैकेज तैयार किया था और हमारे लिए एक निजी बस की भी व्यवस्था की थी। कोच्चि से मुन्नार, थेक्कड़ी, अल्लेप्पी, कोवलम और तिरुवनंतपुरम—यही था हमारा सुंदर सफ़रनामा।

शुरू में ऑनलाइन बुकिंग और केवल गूगल रिव्यू पर भरोसा करने को लेकर हमें थोड़ी शंका थी, लेकिन होटल से लेकर ट्रैवल मैनेजमेंट तक, सब कुछ हमारी उम्मीदों से कहीं बेहतर निकला।

कोच्चि की गलियों में इतिहास और संस्कृति की महक बसी है। कोच्चि में हमने फोर्ट कोच्चि, वॉटर मेट्रो, मट्टनचेरी पैलेस, ज्यू मार्केट स्ट्रीट, ब्रॉडवे मार्केट सहित कई ऐतिहासिक स्थलों का आनंद लिया। यह शहर अपनी विविधता और शांत वातावरण के लिए जाना जाता है।

अगले दिन हम मुन्नार के लिए रवाना हुए। घुमावदार सड़कों के दोनों ओर फैले हरे चाय बागान जैसे किसी चित्र की तरह थे। ठंडी हवा और पहाड़ी रास्तों का साथ मानो थकान मिटा देते थे। मुन्नार में पहुँचते ही हमें एहसास हुआ कि यह जगह सच में 'God's Own Country' हालांकि दुर्गा पूजा की छुट्टियों के कारण वहाँ भीड़ काफी अधिक थी, फिर भी एराविकुलम नेशनल पार्क की ऊँचाइयों से दिखने वाले अद्भुत दृश्य और पहाड़ों की हरियाली ने भीड़ को भी महत्वहीन कर दिया। शाम को हमने कलारिपायट्टू का रोमांचक प्रदर्शन देखा। कलाकारों की कौशल और ऊर्जा से भरा प्रदर्शन हमें मंत्रमुग्ध कर गया।

रात को एक छोटा-सा बोनफायर हुआ, जहाँ हम सब हँसी-ठिठोली करते हुए अपने अनुभव साझा कर रहे थे।

अगली सुबह मसाला बागानों की सैर और गाइड से मसालों की खेती के बारे में जानना बेहद दिलचस्प अनुभव रहा। थोड़ी खरीदारी के बाद हम थेक्कड़ी की ओर बढ़े। रास्ते में ताज़े नारियल पानी का स्वाद आज भी याद है।
थेक्कड़ी में बच्चों से लेकर बड़ों तक सभी ने हाथी सफारी का भरपूर आनंद लिया। पेरियार झील में बोट राइड के दौरान भले ही हमने बाघ नहीं देखा, लेकिन हिरणों और रंग-बिरंगे पक्षियों ने हमारा स्वागत किया। शाम को कथकली का पारंपरिक प्रदर्शन देखना सांस्कृतिक समृद्धि का सुंदर अनुभव था।

फिर बारी थी अल्लेप्पी की, जिसे 'पूर्व का वेनिस' कहा जाता है। बैकवाटर की लहरों पर तैरती हाउसबोट पर रात गुज़ारना इस यात्रा का सबसे विशेष अनुभव रहा। तैरते मछली बाज़ार से ताज़ी मछली खरीदना और बोटमैन द्वारा बनाया गया मछली फ्राई खाने का —यह सब शब्दों में बयां करना मुश्किल है। पानी, हरियाली और शांति का वह संगम हमेशा याद रहेगा।

अल्लेप्पी से कोवलम की यात्रा के दौरान हमने प्रसिद्ध जटायु अर्थ सेंटर का भ्रमण किया। केबल कार उपलब्ध न होने के कारण सीढ़ियों से ऊपर जाना पड़ा। यह थोड़ा कठिन था लेकिन ऊपर से दिखाई देने वाली विशाल जटायु प्रतिमा और दृश्य मन मोह लेने वाला था। कोवलम में हमारा होटल समुद्र किनारे था। शाम को समुद्र तट पर बिताया समय यात्रा की सबसे खूबसूरत स्मृतियों में से एक रहा।

अगली सुबह हम पद्मनाभस्वामी मंदिर पहुँचे—जहाँ पारंपरिक पोशाक अनिवार्य है। मंदिर की स्थापत्य कला, अनुशासन और उस पवित्र वातावरण ने मन को शांति से भर देता है। यात्रा के अंतिम चरण में हमने पूवर द्वीप का रुख किया—और यह जगह तो मानो किसी रहस्यलोक जैसी थी।

नाव में बैठकर मैंग्रोव जंगल, शांत नदी और समुद्र का संगम देखना अद्भुत अनुभव था। शाम को अजीमाला शिव मंदिर में सूर्यास्त देखना पूरे दिन की सबसे दिव्य क्षण था। पूरी यात्रा के दौरान भोजन का अनुभव भी बेहद खास रहा। लंच और डिनर के लिए हमने गूगल रेटिंग्स की मदद से स्थानीय रेस्टोरेंट चुने, और हर बार स्वादिष्ट, किफायती और ताज़ा भोजन ने मन प्रसन्न कर दिया। रिव्यू आधारित इस खोज ने हमारी यात्रा को और भी आनंदमय बना दिया। अंततः तिरुवनंतपुरम से भुवनेश्वर लौटते हुए हमारी यह यादगार यात्रा पूरी हुई। केरल की सुंदरता, वहाँ की संस्कृति, लोगों की सादगी, लजीज भोजन और हमारे समूह की खुशियाँ- यह सब मिलकर इस यात्रा को मेरे जीवन की सबसे यादगार यादों में बदल दिया।

एनईएआरएस - एनआईसी कर्मचारी संघ, मनोरंजन और खेल, ओडिशा ने 18 दिसंबर, 2024 की शाम को अपने वार्षिक पारिवारिक मिलन समारोह के माध्यम से ओडिशा के सभी एनआईसी कर्मचारियों के लिए अपने अनूठे आकर्षण को और करीब लाया।

API दीवानी "बबली" और Security वाला "बंटी"

श्री राहुल कुमार सिन्हा
सहायक निदेशक (आई टी)

ये कहानी है Lakhanpur Data Centre Pvt. Ltd. नाम की एक बड़ी कंपनी की ,उसमें एक अजीबो-गरीब employee काम करती थी — नाम था बबली, पर लोग प्यार से कहते थे API दीवानी बबली।

क्यों? क्योकि वो हर काम को API Request की तरह करती थी। जब भी कोई कुछ पूछता — वो जवाब JSON में देती। दरअसल बबली कुछ दिन पहले API Developer वाली दीदी के Office मे काम करती थी। वही से API का भूत चढ़ गया इन्हे । कोई बोले, "बबली पानी ले आ"। तो वो बोले — "GET Request received for water. ETA: 2 mins". कोई कहे, "कैंटीन से समोसे ला" । तो बोले — "POST Request logged for samosas. Delivering soon."

पूरे ऑफिस वाले हँसते-हँसते लोटपोट रहते। अब उसी ऑफिस में एक और बन्दा था — Security वाला बंटी। बंटी का एक ही काम — सबकी हरकतों में सिक्योरिटी फ्लॉ ढूंढना और अगर कहीं Vulnerability मिल जाए तो उसका Patching करना और इन सब मे बबली तो उसके लिए Jackpot थी।

और इन दोनों के ऊपर बैठे थे प्यारे लाल जी - HOD साहब । कड़क मिज़ाज, मूंछों वाले, लेकिन दिल से भोले। कंपनी में जो हो, प्यारे लाल जी को आख़िर में सारी आफ़त भुगतनी पड़ती।

Scene 1 : Unauthorized Access का
बवाल - समोसा कांड

एक दिन बबली बोर हो रही थी। सोचा - "चलो, प्यारे लाल जी के नाम से समोसे मंगवाते हैं!"
तुरंत API call मारी: POST/canteen/order
{"item":"samosa","quantity":100,"orderedBy":"PyaareLal"}
5 मिनट में कैंटीन वाला 100 समोसे और ₹1500 का बिल लेकर HOD के केबिन आ धमका।

प्यारे लाल जी चौंक कर —"अरे ! मैंने तो चाय भी नहीं पी!" झल्लाते हुए बोले —"अरे बंटी! देख ये किसने क्या कर दिया सिस्टम में !"

बंटी दौड़ा, Application log देखा — बबली का नाम। "Unauthorized API call दीदी ने कर दी। Role-Based Access का Violation है सर!"

प्यारे लाल जी —"इसे ! जल्दी ठीक कर वरना ये Resignation भी भेज देगी।"

बंटी बोला — "अभी Patch लगाता हूँ सर। अब से सिर्फ Authorized users ही कैंटीन का Bulk Order कर सकेंगे। बाकी Unauthorized को System बोलेगा — 403 Forbidden, खुद खा लो बहन!"
पूरा ऑफिस हँस-हँस के लोटपोट।

Scene 2 : बबली का Data Leak :
Mass Exposure वाला मज़ाक

अब बबली की शरारत और बढ़ गई।
बोली —"चलो देखती हूँ कंपनी में किसको कितनी Salary मिलती है..."

और बिना किसी रोक-टोक के उसने Endpoint हिट कर दिया: GET /employees/all
System ने खुलेआम Data उगल दिया:
नाम, मोबाइल नंबर, Salary, Tax, Marital Status, Medical history तक!
बबली चहक उठी — "अरे वाह! शर्मा जी तो मुझसे कम कमाते हैं, पर XUV गाड़ी चलाते हैं!"

इधर प्यारे लाल जी अपना नाम देखकर चिल्ला उठे —
“मेरी APAR Report भी दिखा रही है ये API! बंटी! अब तो इसे fire कर दे!”
बंटी बोला —"सर, ये classic case है Sensitive Info Disclosure का!
मैं तुरंत Pagination, Masking और Access Control लगा देता हूँ।
अब ये Endpoint सिर्फ़ HR role देख पाएगा, वो भी limited data के साथ!"

<u>Scene 3: DDoS Attack : Menu स्पैम</u>

एक दिन बबली ने boredom में सोचा —"चलो देखूं System कितना तेज़ है।"
उसने एक ही time पे कैंटीन का menu 500 बार मांग लिया।
एक मिनट में System हिल गया।
canteen वाले का फोन —"भैया menu भेजो, भैया menu भेजो, भैया menu भेजो..." Server धड़ाम!
पूरा ऑफिस Network Slow...
बंटी दौड़ के आया —"कौन है ये ! किसने API पे Spam Request मारी?" लॉग देखा... सामने बबली।
प्यारेलाल जी बोले —"बाप रे ! ये तो DDoS जैसा कर दिया!"
बंटी बोला —"बस! अब Rate Limiting लगानी पड़ेगी।
Maximum 5 request per minute. इसके बाद... Request Rejected!"
अगले दिन बबली ने फिर मज़े में menu माँगा,
छठी बार —"429 Too Many Requests"
बबली का मुँह बन गया। "बंटी! तू तो सारा मज़ा ही खराब कर देता है!"
ग्रैंड फिनाले — API स्टाइल में सस्पेंड
पूरे ऑफिस में हंगामे के बाद प्यारे लाल जी गुस्से में खड़े हुए।
चश्मा उतारकर बोले —
“अरे बंटी! इसे सबक सिखा...”
फिर खुद ही System खोलकर API call टाइप की:

```
POST /employee/suspend
{
 "employee":"Babli",
 "duration":"7 days",
  "reason":"Unauthorized API calls, DDoS & Data Leak"
}
```

फिर ज़ोर से बोले — “बबली! System ने तुझे 1 हफ्ते के लिए Suspend कर दिया है।

Status: 403 Forbidden, Reason: तेरा झोल ज्यादा हो गया है!”
पूरा ऑफिस हँस-हँस के लोटपोट।

बबली मुँह बना के बोली—
“ठीक है भई... 7 दिन में नयी Vulnerability ढूंढ के आऊँगी, फिर मजा दिलाती हु।
बंटी मुस्कुराया —
“अब Zero Trust Security है दीदी... मज़ा बाद में, पहले सिक्योरिटी।”

और इस तरह, Lakhanpur Data Centre Pvt. Ltd. में एक बात तय हो गई —
“चाहे ऑफिस में कितनी भी API दीवानी बबली हों, सिक्योरिटी वाला बंटी भी उतना ही ज़रूरी है।”

ओडिशा के एनआईसी के अधिकारियों ने श्री सत्य साई सेवा संगठन, ओडिशा द्वारा आयोजित "रन एंड राइड फॉर यूनिटी" कार्यक्रम में भाग लेकर फिट इंडिया मूवमेंट में सक्रिय रूप से हिस्सा लिया।

माइक्रोसॉफ्ट 365 कॉपायलट(Microsoft 365 Copilot): कार्यक्षमता और नवाचार का एक नया युग

श्री सत्यजीत दाश
सहायक निदेशक (आई टी)

प्रौद्योगिकी के तीव्र विकास ने हमारे काम करने के तरीके को पूरी तरह से बदल दिया है, और इस परिवर्तन में कृत्रिम बुद्धिमत्ता AI सबसे आगे है। इसी संदर्भ में, माइक्रोसॉफ्ट 365 कॉपायलट एक क्रांतिकारी कदम है जो हमारे कार्यस्थल के अनुभव को नया आयाम दे रहा है। यह एक शक्तिशाली AI(कृत्रिम बुद्धिमत्ता) -संचालित उपकरण है जो माइक्रोसॉफ्ट 365 के प्रमुख ऐप्स जैसे Word, Excel, PowerPoint, Outlook, और Teams में एकीकृत है। इसका उद्देश्य उपयोगकर्ता की उत्पादकता को बढ़ाना, रचनात्मकता को प्रेरित करना और रोज़मर्रा के कार्यों को सरल बनाना है।

कॉपायलट का मुख्य कार्य एक सहयोगी के रूप में काम करना है। यह जटिल डेटा का विश्लेषण कर सकता है, विस्तृत रिपोर्ट का सारांश दे सकता है, आकर्षक प्रेजेंटेशन बना सकता है, और ईमेल ड्राफ्ट करने में सहायता कर सकता है। उदाहरण के लिए, Word में, यह आपके विचारों को एक संगठित और सुसंगत दस्तावेज़ में बदल सकता है। Excel में, यह डेटा में छिपी हुई प्रवृत्तियों (trends) को उजागर कर सकता है और डेटा विश्लेषण को आसान बना सकता है। PowerPoint में, यह सिर्फ़ कुछ निर्देशों के आधार पर एक पूरी प्रेजेंटेशन तैयार कर सकता है, जिसमें डिज़ाइन, लेआउट और सामग्री शामिल होती है। Outlook में, यह लंबे ईमेल थ्रेड्स का सारांश प्रस्तुत कर सकता है और त्वरित प्रतिक्रियाएं तैयार करने में मदद कर सकता है। इस तरह, कॉपायलट हमें उन कार्यों से मुक्त करता है जिनमें बहुत समय लगता है, जिससे हम अधिक महत्वपूर्ण और रणनीतिक कार्यों पर ध्यान केंद्रित कर पाते हैं।

माइक्रोसॉफ्ट 365 कॉपायलट की सबसे महत्वपूर्ण विशेषताओं में से एक इसकी भाषा की समझ है। यह न केवल अंग्रेजी, बल्कि हिंदी जैसी कई अन्य भाषाओं को भी समझता है और उनमें काम कर सकता है। "माइक्रोसॉफ्ट 365 कॉपायलट अब हिंदी में भी उपलब्ध है।"

इस कदम से उन लाखों उपयोगकर्ताओं को सीधे लाभ मिलेगा जो अपनी दैनिक कार्य-संवाद में हिंदी का उपयोग करते हैं। यह कृत्रिम बुद्धिमत्ता को और अधिक समावेशी और सुलभ बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। हिंदी में कॉपायलट की उपलब्धता से भाषाई बाधाएं कम होंगी, और यह सुनिश्चित होगा कि उपयोगकर्ता अपनी मातृभाषा में अपनी पूरी क्षमता का उपयोग कर सकें। यह कृत्रिम बुद्धिमत्ता को सिर्फ़ वैश्विक भाषा बोलने वालों तक सीमित नहीं रखता, बल्कि इसे स्थानीय और क्षेत्रीय स्तर पर भी सशक्त बनाता है। कॉपायलट सिर्फ़ एक उपकरण नहीं है, बल्कि यह भविष्य के कार्यस्थल की नींव है। यह मानव और कृत्रिम बुद्धिमत्ता के बीच एक सहयोगात्मक संबंध स्थापित करता है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता यहाँ मानव को प्रतिस्थापित करने के लिए नहीं है, बल्कि उसकी क्षमताओं को बढ़ाने के लिए है। यह हमें अधिक स्मार्ट, अधिक तेज़ और अधिक कुशल बनाता है। कॉपायलट की मदद से, हम न केवल अपने काम को आसान बनाते हैं, बल्कि हम नए और अभिनव तरीकों से समस्याओं का समाधान भी करते हैं । यह एक ऐसा भविष्य है जहाँ प्रौद्योगिकी एक मौन साथी के रूप में काम करती है, जो हमारी सृजनात्मकता और उत्पादकता को नई ऊंचाइयों पर ले जाती है।

निष्कर्ष में, माइक्रोसॉफ्ट 365 कॉपायलट कार्यस्थल में एक महत्वपूर्ण नवाचार है। यह कृत्रिम बुद्धिमत्ता को रोजमर्रा के कार्यप्रवाह में एकीकृत करके उत्पादकता और दक्षता में सुधार करता है। हिंदी में इसकी उपलब्धता इसे और भी अधिक प्रासंगिक बनाती है, जिससे भाषाई विविधता का सम्मान होता है और यह सुनिश्चित होता है कि हर कोई कृत्रिम बुद्धिमत्ता के लाभों का उपयोग कर सके। कॉपायलट केवल हमारे काम को आसान, तेज़ और अधिक कुशल नहीं बनाता है, बल्कि यह एक ऐसे भविष्य की दिशा में भी ले जाता है जहाँ मानव और मशीन मिलकर अभूतपूर्व उपलब्धियां हासिल कर सकते हैं।

प्राकृतिक भाषा प्रसंस्करण : नेचुरल लैंग्वेज प्रोसेसिंग या एनएलपी कैसे कंप्यूटर हमारी भाषा समझते हैं

सुश्री ज्योति गुप्ता
वैज्ञानिक अधिकारी / इंजीनियर-एसबी

परिचय

क्या आपने कभी अपने फोन से बात करके अलार्म सेट कराया है या कुछ जानकारी खोजी है? या एक भाषा को दूसरी भाषा में बदलने के लिए किसी अनुवाद ऐप का उपयोग किया है? ये सब संभव हुआ है एक खास तकनीक की वजह से जिसे कहा जाता है – प्राकृतिक भाषा प्रसंस्करण (एनएलपी)।

पहली बार सुनने में यह तकनीकी और कठिन लग सकता है, लेकिन सच तो यह है कि हम रोज़ाना इसका अनुभव करते हैं, भले ही हमें इसका एहसास न हो।

प्राकृतिक भाषा प्रसंस्करण (एनएलपी) क्या है?

एनएलपी वह तकनीक है जो कंप्यूटर को हमारी भाषा समझने, उसका अर्थ निकालने और जवाब देने में मदद करती है। जैसे हम एक-दूसरे से बातचीत करते हैं, वैसे ही कंप्यूटर भी अब हमारी भाषा को समझकर हमारी मदद कर सकता है।

उदाहरण -

- जब आप सिरी या एलेक्सा से कोई प्रश्न पूछते हैं, तो वह आपके शब्दों को समझ लेता है।
- जब आप मोबाइल पर टाइप करते हैं, तो वह शब्द सुझाता है या गलतियों को ठीक करता है।
- जब आप गूगल ट्रांसलेट का उपयोग करते हैं, तो यह एक भाषा का अनुवाद करता है और आपको दूसरी भाषा में अर्थ बताता है।

ये सब एनएलपी की वजह से संभव है!

एनएलपी कैसे काम करता है?

कंप्यूटर स्वाभाविक रूप से भाषा नहीं समझते। उन्हें तो केवल संख्या और कोड समझ आते हैं। इसलिए एनएलपी कंप्यूटर को सिखाती है कि:

- वाक्य को शब्दों और वाक्यांशों में तोड़ना।
- शब्दों का अर्थ संदर्भ के अनुसार पहचानना।
- समय के साथ सुधार करने के लिए बड़ी मात्रा में पाठ और वार्तालापों से सीखना।

इसे ऐसे समझिए जैसे हम किसी बच्चे को भाषा सीखने में मदद करते हैं। उसे उदाहरण, अभ्यास और नियमों की ज़रूरत होती है। उसी तरह कंप्यूटर भी डेटा से सीखते हैं।

हमारी रोज़मर्रा की ज़िन्दगी में एनएलपी कहाँ दिखाई देती है?

1. आवाज सहायक(वॉयस असिस्टेंट) - सिरी, एलेक्सा और गूगल असिस्टेंट जैसे ऐप्स आपकी आवाज़ पहचानकर अलार्म सेट करने, मौसम बताने या गाने चलाने में मदद करते हैं।
2. चैटबॉट और ग्राहक सहायता - कई वेबसाइट्स पर चैटबॉट आपके सवालों का जवाब तुरंत देते हैं। आप टिकट बुक कर सकते हैं, बिल जमा कर सकते हैं, या जानकारी ले सकते हैं।
3. अनुवाद सेवाएँ - गूगल ट्रांसलेट जैसे ऐप्स भाषा बदलते समय शब्दों का अर्थ समझते हैं ताकि सही अनुवाद दिया जा सके।
4. वर्तनी जाँच और व्याकरण उपकरण - जब आपका फोन गलतियाँ ठीक करता है या बेहतर वाक्य सुझाता है, तब एनएलपी काम कर रही होती है।
5. ऑनलाइन शॉपिंग की सिफारिशें - आपकी पसंद और खोज के आधार पर वेबसाइट्स सुझाव देती हैं कि आपको क्या खरीदना चाहिए।

एनएलपी क्यों ज़रूरी है?

- यह तकनीक को आसान और उपयोगकर्ता के अनुकूल बनाती है।
- यह भाषा की बाधा को खत्म कर दुनिया भर के लोगों को जोड़ती है।
- यह विकलांग लोगों की मदद करती है, जैसे आवाज़ से निर्देश देना या पाठ पढ़कर सुनाना।
- यह संचार को तेज़ और सटीक बनाती है।

एनएलपी की चुनौतियाँ

हालाँकि एनएलपी बहुत उपयोगी है, लेकिन इसमें कुछ समस्याएँ भी हैं:

- भाषा जटिल है – इसमें बोलचाल की भाषा, मज़ाक, भावनाएं होते हैं जिन्हें समझना आसान नहीं।

- अलग-अलग लहजे और बोलियाँ कंप्यूटर को भ्रमित कर सकती हैं।
- डेटा की सुरक्षा और गोपनीयता का ध्यान रखना ज़रूरी है क्योंकि यह हमारे व्यक्तिगत डेटा को संसाधित करता है।

निष्कर्ष

प्राकृतिक भाषा प्रसंस्करण (एनएलपी) चुपचाप हमारी ज़िन्दगी को आसान बना रही है। चाहे हम आवाज़ से आदेश दें, किसी भाषा का अनुवाद करें या चैटबॉट से मदद लें – हर जगह यह तकनीक हमारी सहायता कर रही है। भले ही यह सुनने में तकनीकी लगे, इसका उद्देश्य सरल है – कंप्यूटर को हमारी भाषा समझने और हमारी मदद करने लायक बनाना।

अगली बार जब आपका फोन आपकी बात समझे या गलतियाँ सुधार दे, तो याद रखिए – वहाँ एनएलपी काम कर रही है, जिससे तकनीक और इंसानों के बीच संवाद आसान हो गया है।

एसआईओ ने अखिल भारतीय आईटी सचिवों की बैठक में भाग लिया। यह बैठक 17 दिसंबर, 2024 को भारत मंडपम, नई दिल्ली में आयोजित हुई।

एनआईसी के अधिकारियों ने राष्ट्रपति भवन में माननीय राष्ट्रपति के साथ मिलकर एनआईसी के ई-ऑक्शन पोर्टल का उपयोग करके उपहार नीलामी की सफलता पर चर्चा की।

प्रवासी भारतीय दिवस (पीबीडी) के अवलोकन के लिए पुलिस अधिकारियों को तैयार करने हेतु आईवीएफआरटी का उपयोग करते हुए आव्रजन चेक पोस्ट (आईसीपी) के प्रबंधन पर 5 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम।

पुरी स्थित डीओ ने माननीय राष्ट्रपति के शिविर कार्यालय को आईटी सहायता प्रदान करने के लिए लगातार 10वीं बार इंडिया बुक ऑफ रिकॉर्ड्स में अपना नाम दर्ज कराया है।

राजभवन में उत्तर प्रदेश स्मरण दिवस:
उत्तर प्रदेश की मूल निवासी एनआईसी अधिकारी ओडिशा के माननीय राज्यपाल और प्रथम महिला के साथ उपस्थित हैं।

भविष्य की आवाज़

श्री आदित्य राघव
वैज्ञानिक अधिकारी/ इंजीनियर-एसबी

साल २०४५ । दिल्ली की भीड़-भाड़ वाली गलियों में रहने वाला एक साधारण युवक अंशुमान हर किसी की नज़र में बस एक और बेरोज़गार इंजीनियर था । लेकिन उसके भीतर कुछ और ही चल रहा था। वह मानता था कि भविष्य केवल मशीनों का नहीं होगा, बल्कि इंसानी सोच का होगा।

दिन-रात पुराने पुर्ज़ों और कंप्यूटरों के बीच काम करते-करते उसने एक अद्भुत डिवाइस बनाया—मानस इंटरफेस। यह डिवाइस इंसान के मस्तिष्क की तरंगों को पढ़ कर सीधे डिजिटल कमांड में बदल देता था। यानी आप केवल सोचेंगे और मशीन खुद काम कर देगी।

अंशुमान अक्सर खुद से कहता, "अगर सोच से सपने पूरे हो सकते हैं, तो क्यों न सोच से दुनिया भी बदली जाए?" लोग उसकी खोज को मज़ाक समझते थे। पड़ोसी हँसते—“ये भी कोई खिलौना है क्या?” लेकिन अंशुमान ने हार नहीं मानी। उसने सबसे पहले यह डिवाइस अपनी बीमार दादी पर लगाया।

उनके हाथ काँपते थे, आँखें कमजोर थीं। टीवी का रिमोट उठाना भी मुश्किल था। पर जैसे ही उन्होंने मन में सोचा “टीवी ऑन हो”, टीवी चल पड़ा। उनकी आँखों में चमक आ गई। “बेटा, यह तो जादू है।”

उस दिन अंशुमान समझ गया कि उसकी खोज केवल तकनीक नहीं, बल्कि आज़ादी है—उनके लिए जो शारीरिक सीमाओं में बंधे हैं। धीरे-धीरे यह डिवाइस अस्पतालों में पहुँचा। लकवाग्रस्त मरीज़ व्हीलचेयर चलाने लगे। स्कूलों में बच्चे बिना टाइप किए अपनी सोच से स्क्रीन पर लिखने लगे।

अंशुमान रातों-रात चर्चित हो गया। अखबारों में हेडलाइन छपी — “भारतीय युवक की खोज: सोच से चलेगी मशीनें”
लोग कहते, यह तो दूसरा इंटरनेट है। पर जितनी तेजी से पहचान मिली, उतनी ही जल्दी खतरे भी सामने आने लगे।

कुछ महीनों बाद हैकरों का एक समूह इस डिवाइस को तोड़ने में कामयाब हो गया। उन्होंने लोगों की निजी सोच पढ़ ली। किसी की गुप्त इच्छाएँ, किसी के डर, किसी की योजनाएँ—सब उजागर होने लगे। एक अखबार ने लिखा— “क्या इंसान अब अपनी सोच भी खो रहा है?”

लोग घबरा गए। कई परिवार टूट गए क्योंकि छिपे विचार बाहर आ गए थे। कंपनियाँ अपने कर्मचारियों की सोच चुराने लगीं। सरकार ने अंशुमान को बुलाया। प्रधानमंत्री ने गंभीर स्वर में कहा— “यह तकनीक अद्भुत है, पर सबसे बड़ी स्वतंत्रता इंसान की सोच है। इसे सुरक्षित करना तुम्हारी जिम्मेदारी है।”

अंशुमान जानता था कि उसने दुनिया को खतरे में डाल दिया है। पर उसने हार मानने की बजाय और मेहनत शुरू की। कई दिन-रात जागकर उसने एक नया सुरक्षा तंत्र बनाया—न्यूरो फायरवॉल।

यह प्रणाली इंसान की सोच को एक अनोखे पैटर्न से लॉक कर देती थी। केवल वही व्यक्ति अपने विचार डिवाइस तक पहुँचा सकता था । कोई हैकर, कोई मशीन उसकी अनुमति के बिना उस सोच को पढ़ नहीं सकती थी। लेकिन इस प्रक्रिया के दौरान अंशुमान पर हमले भी हुए। अंधेरे संगठनों को उसकी खोज अपने कब्ज़े में चाहिए थी। एक रात उसकी प्रयोगशाला पर हमला हुआ, मशीनें तोड़ दी गईं, पर अंशुमान बच निकला।

उसने मन ही मन कसम खाई— "मेरी खोज कभी हथियार नहीं बनेगी। यह सिर्फ इंसान की मदद के लिए होगी।" कुछ महीनों बाद जब नया संस्करण बाजार में आया, तो लोगों ने फिर से भरोसा करना शुरू किया। अस्पतालों में हजारों मरीज नई ज़िंदगी जीने लगे। एक बच्चा, जो बोल नहीं सकता था, केवल सोच से कविता लिखने लगा। एक बुजुर्ग, जो चल नहीं सकता था, व्हीलचेयर से मंदिर तक पहुँचा। और एक अंधी लड़की ने सोच से पेंटिंग बनाई, जिसे दुनिया ने सराहा।

अब यह तकनीक भारत तक सीमित नहीं रही। जापान, अमेरिका और यूरोप में भी इसकी माँग होने लगी। लेकिन जैसे-जैसे डिवाइस फैला, एक नया सवाल खड़ा हुआ— "क्या मशीनें अब इंसानों के इरादों पर राज करेंगी?"

कई लोग लत का शिकार हो गए। सोच से काम करना इतना आसान था कि मेहनत करने की आदत खत्म होने लगी। कुछ देशों ने इस तकनीक पर पाबंदी लगा दी।

अंशुमान को फिर आलोचना झेलनी पड़ी। पर उसने कहा—
“हर खोज का असली मकसद इंसान की संभावनाओं को खोलना है, न कि उसे कमजोर बनाना। तकनीक तभी सुरक्षित है जब इंसान अपने इरादों पर काबू रखे।” एक अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में, जब अंशुमान मंच पर पहुँचा, तो हजारों लोग खड़े होकर तालियाँ बजाने लगे। उसने शांत
स्वर में कहा—
“टेक्नोलॉजी का असली उद्देश्य इंसान को मशीनों का गुलाम बनाना नहीं है। असली शक्ति हमारी सोच है। अगर हम उसे जिम्मेदारी से इस्तेमाल करें, तो कोई सीमा हमें रोक नहीं सकती।”

उसके शब्दों ने सबको छू लिया। दुनिया भर के वैज्ञानिकों ने माना कि तकनीक का भविष्य केवल विज्ञान नहीं, बल्कि नैतिकता से तय होगा।

2035 के बाद की दुनिया बदल चुकी थी। लोग सोच से गाड़ियाँ चला रहे थे, दफ़्तर का काम पूरा कर रहे थे, दूर बैठे प्रियजनों को सोच संदेश भेज रहे थे। लेकिन इस बदलाव के बीच हर कोई जानता था कि यह संभव हुआ है क्योंकि एक युवक ने न सिर्फ तकनीक बनाई, बल्कि उसे सुरक्षित और जिम्मेदार भी बनाया।

अंशुमान अक्सर खिड़की से आसमान को देखता और मुस्कुराता। उसकी दादी की कही बात उसे याद आती— “बेटा, यह जादू है।” पर अब वह जानता था कि यह जादू नहीं, इंसान की भविष्य की आवाज़ है—एक ऐसी आवाज़ जो हर सोच में छिपी है और जो सही दिशा में इस्तेमाल हो तो पूरी दुनिया बदल सकती है।

निष्कर्ष
यह कहानी हमें सिखाती है कि हर खोज के साथ जिम्मेदारी भी जुड़ी होती है। भविष्य मशीनों का नहीं, इंसान की सोच और उसके इरादों का होगा। और असली आज़ादी तब ही संभव है जब हमारी सोच सुरक्षित और सकारात्मक रहे।

फरवरी 2025 में एनआईसी ओडिशा द्वारा पूरे ओडिशा में सुरक्षित इंटरनेट दिवस का आयोजन

वर्ष 2025 में ओडिशा के एनआईसी द्वारा मनाया जाने वाला स्वच्छता पखवाड़ा

पागल कौन?

सुश्री बिप्साराणी दाश
सॉफ्टवेयर डेवलपर

हर बार की तरह स्टेशन के प्लेटफार्म 2 के बेंच पर अपना बैग रखकर मैं बैठ गयी । घड़ी देखी तो ट्रेन आने में कुछ वक़्त बाकी था । स्टेशन की आती-जाती भीड़ पर मेरी नज़र गयी । लोग आ-जा रहे थे, ट्रेन के आने-जाने का शोर, हू-हू की आवाज़ और ट्रैन की वक़्त बताती हुई माइक उस माहौल की ब्यस्तता को दर्शा रहे थे । पर ऐसा लग रहा था की जैसे कुछ तो कमी है उस शोरगुल मैं। सावित्री, वो लड़की, जिसे लोग पगली कहते थे। मैंने उसे कई बार यहाँ आते-जाते देखा है । पर आज तो वो कहीं दिखाई नहीं दे रही!

अनाउंसमेंट हुआ था कि ट्रेन लेट होगी। यह कोई नई बात नहीं । ये ट्रेन अक्सर लेट आती है। मैं प्लेटफार्म पर बैठकर इंतज़ार करती हुई लोगों को देखती रही। पर सावित्री की बातें मन से जा नहीं रही थी। पता नहीं अक्सर कहां होती । पर मुझे जिस प्लेटफार्म पर देखती, वहाँ पर पहुँच जाती थी। हाथ बढ़ा कर बिस्कुट मांगती। पहले एक दो बार उसकी खाली हथेली पर, मैं कुछ पैसे रख दिए थे । फिर एक बार मैंने उसे अपने बचे हुए बिस्कुट का पाकिट थमा दिया । उसके बाद उसने मुझसे सिर्फ एक बिस्कुट ही माँगी । उसे मीठे बिस्कुट पसंद नहीं आते थे । नमकीन और मीठे बिस्कुट ही पसंद थे उसको । एक बार किसी ने उसे मीठे बिस्कुट दिए, तो उसने उन्हें कूड़ेदान में फेंक दिया। मैंने उसकी यह आदत देखी । उसके पहनावे की वजह से शायद सब उसे पगली कहते होंगे । लेकिन, तथाकथित आम लोगों की आदत से अलग वह सड़क पर बिस्कुट नहीं फेंकती थी । मेरे पास हमेशा बिस्कुट नहीं होते थे, कभी कभी मैं उसे पैसे देकर कहती, "जाओ, दुकान से बिस्कुट ले लो।" और किसी छोटे बच्चे की तरह वह मान जाती ।

उसकी उम्र लगभग तीस साल होगी । एक बार पूछने पर उसने अपना नाम सावित्री बताया । वह गंदी ड्रेस पहनती, या कभी-कभी साड़ी। उसके बाल बिखरे हुए, पर देखने में गोरी थी । वह सुंदर तो नहीं, पर बदसूरत भी नहीं थी । वर्ना, अगर खुद को सजाओ तो हर कोई सुंदर है । एक-दो बार मैंने उसे कुछ पुरानी साड़ियाँ और कपड़े देने के बारे में सोचा । लेकिन अपनी व्यस्तता में भूल जाती। पर जब मैं उसे प्लेटफ़ॉर्म पर देखती, तो मुझे फिरसे उसे कपडे देने की बात याद आ जाती है। मैं लगभग एक साल से काम के सिलसिले में बाहर थी, और अब लौट रही हूँ। इस प्लेटफ़ॉर्म पर उसकी याद आ गई। पता नहीं कहा होगी । पर उसके बारे में भला किससे पुछूँ?

घोषणा फिरसे हुई। रास्ते में ट्रेन कहीं रुक गयी है, और भी देर होगी । लोग कह रहे हैं कि प्लेटफ़ॉर्म पर शायद कोई दुर्घटना हुई है । मैं पता लगाने स्टेशन मास्टर के पास गयी, उन्होंने कहा कि ट्रेन को आने मैं और भी देर हो जाएगी ।

थोड़ी हिचकिचाहट के साथ उनसे सावित्री के बारे मैं पूछ बैठी । "कौन?" स्टेशन मास्टर ने पूछा।"वह पागल औरत, क्या वह इसी प्लेटफ़ॉर्म पर है?" मैंने जल्दी से कहा । स्टेशन मास्टर ने अपने मोटे चश्मे के कोने से मुझे हैरत से देखा। उन्होंने सोचा होगा कि मैं उस पागल औरत को क्यों ढूँढ रही हूँ ।

"मैं उसे किसी एनजीओ में ले जाकर किसी आश्रम में रखने का सोच रही थी ।" मैंने जल्दी से कहा। लेकिन मैं सचमुच उसके बारे में जानना चाहती थी । इंसान का मन ऐसा ही होता है। कहाँ जुड़ जाये पता नहीं ।

"उसका पागलपन और भी बढ़ गया था। वह स्टेशन पर बच्चों को पकड़ लेती थी । प्लेटफार्म के कूड़ेदानों को उलट देती थी । उन कुंडों और गन्दगी को फैलाकर कुछ ढूंढ़ती रहती थी। एक बार तो एक बच्चे को लेके भागने लगी थी।" स्टेशन मास्टर ने कहा । मुझे थोड़ी हैरानी हुई। शायद उस सज्जन ने मेरी भावनाओं को बखूबी समझा । "मैडम, वो गर्भवती हो गई थीं। उसने नगर निगम के अस्पताल में एक लड़के को जन्म दिया । तब से वो इसी प्लेटफार्म पर रह रही थी । एक बार, आधी रात को, वो प्लेटफार्म के एक छोर से दूसरे छोर तक दौड़ते दौड़ते चीखती चिल्लाती रहीं कि मुझे मेरा बच्चा दे दो । हम सबने बहुत ढूँढा, पर कुछ नहीं मिला ।

ज़रूर किसी ने उनका बच्चा चुरा लिया होगा। और तब से, उसने अक्सर स्टेशन मैं बच्चों को पकड़ा, कूड़ेदान में कुछ ढूँढती रही, कभी चिल्लाती, तो कभी कोसती । कुछ दिन पहले कोलकाता का एक एनजीओ उसे ले गया और उसे एक मानसिक अस्पताल मैं भर्ती कर दिया । शायद वह अब वहीँ पर हैं ।"

मेरा रोने और चीखने का मन कर रहा था । प्लेटफार्म पर मेरी ट्रैन आ गई थी । मैं घायल मन से ट्रेन में चढ़ तो गयी, पर मेरा मन सावित्री की हालत पर विचार कर रहा था। उसे किसने गर्भवती किया और किसने बच्चा चुराया? एक माँ की दिल दहला देने वाली चीखें मुझे परेशान कर रही थी । मुझे बचपन में हमारे गाँव की उस पागल औरत की कहानी याद आ गई ।

एक दिन, मेरी दादी ने हमारे घर के पास से गुज़र रहे एक अठारह या उन्नीस साल के लड़के की ओर इशारा करते हुए कहा, "पता है! यह उस पगली का बेटा हैं जो पास के कॉलेज में पढ़ रहा है ।"

"और वह पगली?" बचपन में मेरे घर पर भीख माँगने आने वाली उस महिला के बारे मैं सोचते हुए मैंने पूछा । "उसे मरे हुए कई साल हो गए। बेचारी, गूंगी और बेहरी होने के बावजूद भीख माँगकर अपने बेटे को पालती रही । करमजलों ने इसी बात का फ़ायदा उठाया और उनके साथ बलात्कार किया। किसी को बताने पर जान से मारने की धमकी दी। बेचारी हमारे सामने रोते हुए उसकी बलात्कार के बारे में इशारों मैं बताया था ।"

दादी ने कहा । "क्या तुम लोग कुछ नहीं कर सकते थे? तुम्हें दादा या चाचा को बताना चाहिए था ।" मैंने अपनी दलील सुनाई । "अपना काम छोड़ कर कौन इन सबमे पड़ता? इसके अलावा, ख़तरा भी था । वह कभी अपराधी का नाम न ले पाती।" दादी ने कहा ।

मन उदास हो रहा था । उस वक़्त क्या सही था और क्या गलत, मैं आज भी समझ नहीं पायी। दुःख की बात तो ये है कि अन्याय को दबाने की बहुत शक्ति है हमारे समाज में । चाहे वो उस औरत की बात हो या सावित्री की । दशकों बाद भी हमारे समाज में विकलांगों को इंसान न मानना या उन्हें न्याय का हक़दार न समझना आम बात है ।

हम जिन औरतों को "पगली" कहकर अनदेखा कर देते हैं, उनके पीछे ऐसे ज़ख्म छुपे होते हैं जिन्हें समाज ने कभी भरने की कोशिश ही नहीं की । उनके भीतर भी वही धड़कता दिल और वही ममता है, जो किसी भी माँ में होती है । एक माँ का अपने बच्चे से बिछड़ने का दुख, या समाज का उसके दर्द को अनसुना कर देना, ये दोनों ही हमारी सबसे बड़ी असफलता हैं ।

हमें अब यह तय करना होगा कि हम उन्हें दया से नहीं, बल्कि सम्मान, सुरक्षा और न्याय का अधिकार देकर देखें । क्योंकि जब किसी माँ की चीख़ दबा दी जाती है, तो असल में हमारी इंसानियत ही "पागल" हो चुकी होती है ।

पिकनिक-2025: मस्ती, मनोरंजन और पारिवारिक बंधन से भरपूर

सात्विक आहार का महत्व

श्री शिबाजी राणासिंह

भोजन मनुष्य के शारीरिक स्वास्थ्य, मानसिक संतुलन और आध्यात्मिक विकास को प्रभावित करने वाला एक महत्वपूर्ण तत्व है। हमारे प्राचीन भारतीय शास्त्र बताते हैं कि हम जो भोजन करते हैं उसका सीधा प्रभाव हमारे विचारों, भावनाओं और आचरण पर पड़ता है। इसलिए सात्विक आहार, जो मुख्यतः शुद्ध शाकाहारी भोजन से बना होता है, शांत और आध्यात्मिक जीवन के लिए अत्यंत आवश्यक माना गया है।

Bhagavad Gita में भगवान श्रीकृष्ण विभिन्न प्रकार के आहार के गुणों का वर्णन करते हैं। अध्याय 17, श्लोक 8 में कहा गया है -

"आयुः सत्त्वबलारोग्यसुखप्रीतिविवर्धनाः।
रस्याः स्निग्धाः स्थिरा हृद्या आहाराः सात्त्विकप्रियाः॥"

अर्थात् सात्त्विक आहार आयु, शुद्धता, बल, स्वास्थ्य, सुख और संतोष को बढ़ाने वाला होता है। ऐसा भोजन ताज़ा, पौष्टिक, स्वच्छ और हृदय को प्रिय होता है। फल, सब्जियाँ, अनाज, दूध तथा अन्य शाकाहारी पदार्थ सात्त्विक माने जाते हैं क्योंकि वे मन को शांत, निर्मल और स्थिर बनाते हैं तथा आध्यात्मिक चेतना को विकसित करने में सहायक होते हैं।

इसी सिद्धांत पर भगवान श्री सत्य साई बाबा ने 21 जनवरी 1994 को प्रशांति निलयम में दिए गए अपने दिव्य प्रवचन में कहा - **"जैसा अन्न, वैसा मन; जैसा मन, वैसे विचार; और जैसे विचार, वैसा आचरण। इसलिए मनुष्य को अपने भोजन के विषय में बहुत सावधानी रखनी चाहिए। शुद्ध भोजन से मन की शुद्धि होती है।"**

भगवान बाबा ने समझाया कि भोजन केवल शरीर को पोषण देने के लिए ही नहीं होता, बल्कि यह मन और चरित्र को भी प्रभावित करता है। जब भोजन शुद्धता, प्रेम और भक्ति के साथ बनाया जाता है तथा भगवान को अर्पित करके ग्रहण किया जाता है, तो वह मन में शांति, भक्ति और श्रेष्ठ विचारों को जन्म देता है।

एक अन्य अवसर पर 23 नवम्बर 1994 के दिव्य प्रवचन में भगवान श्री सत्य साई बाबा ने मांसाहार के विषय में स्पष्ट रूप से कहा - "कोई भी व्यक्ति, चाहे वह स्वयं को भक्त माने या न माने, उसे मांसाहार का त्याग करना चाहिए। क्यों? क्योंकि मांसाहार केवल पशु-स्व भाव को बढ़ाता है। जैसा भोजन होता है, वैसे ही विचार होते हैं। विभिन्न पशुओं का मांस खाने से मनुष्य में उन्हीं पशुओं के गुण आ जाते हैं। यह कितना पाप है कि हम उन प्राणियों को खाते हैं जो उन्हीं पाँच तत्वों से बने हैं जिनसे मनुष्य बना है! इससे मनुष्य में राक्षसी प्रवृत्तियाँ उत्पन्न होती हैं और प्राणियों के प्रति क्रूरता का पाप भी लगता है। इसलिए जो लोग सच्चे अर्थों में भगवान के भक्त बनना चाहते हैं, उन्हें मांसाहार का त्याग करना चाहिए।"

भगवान ने यह भी समझाने के लिए एक छोटी-सी कथा सुनाई कि भोजन मन को कैसे प्रभावित करता है।

एक धर्मनिष्ठ ब्राह्मण ने एक संत को अपने घर भोजन के लिए आमंत्रित किया। किसी कारणवश उस दिन भोजन पड़ोस की एक स्त्री ने बनाकर दिया। जब संत भोजन कर रहे थे, तो अचानक उनके मन में पास रखे एक चाँदी के पात्र को चुरा लेने की इच्छा उत्पन्न हुई। यद्यपि उन्होंने अपने जीवन में कभी ऐसा विचार भी नहीं किया था, फिर भी उस क्षण वे उस पात्र को लेकर वहाँ से चले गए। रात को उनका अंतःकरण उन्हें धिक्कारने लगा और उन्हें बिल्कुल शांति नहीं मिली। अगले दिन वे वापस आए, अपनी गलती स्वीकार की और वह पात्र लौटा दिया। बाद में पता चला कि जिस स्त्री ने भोजन बनाया था, उसे चोरी करने की आदत थी। उसके मन की वही प्रवृत्ति भोजन के माध्यम से संत के मन को प्रभावित कर गई।

इस कथा के माध्यम से भगवान ने समझाया कि भोजन केवल शरीर को पोषण ही नहीं देता, बल्कि उसमें उसे बनाने वाले व्यक्ति के विचारों और भावनाओं की सूक्ष्म तरंगें भी समाहित होती हैं। जब भोजन शुद्ध भावना, प्रेम और भक्ति के साथ बनाया जाता है, तो वह मन को ऊँचा उठाता है।

एक तोते की कहानी

श्री मुहम्मद मुजीबुल्लाह ख़ान
निदेशक (आई टी)

योगेश गाँव में रहने वाला व्यक्ति था । उसने एक तोता पाला था जो पिंजरे में बंद रहता था । ज़ाहिर है कि उस पिंजरे ही के भीतर तोते की दुनिया थी । अपनी इस दुनिया में वह बड़ा ख़ुश रहता था । हर किसी को कुछ न कुछ बोलता रहता था । किसी को बातों बातों में हँसाता था तो किसी किसी को चिढ़ाता भी था । मगर वह बड़ा बोलने वाला तोता था ।

योगेश का मकान गाँव के मुख्य रस्ते के किनारे पर था । गाँव के अधिकतर लोग इसी रस्ते से यातायात करते थे । एकबार योगेश के मकान के अंदर घर की मरम्मत का काम चला । तो उसने तोता समेत पिंजरे को घरके बाहर टांग दिया । तोता पैदल चलने वाले लोगों को देखकर कुछ भी उटपटांग बोलता था । कुछ ही दुरी पर रमेश नाम का एक व्यक्ति रहता था । वह भी सुबह इसी रस्ते से पैदल काम पे जाता था एवं शाम को लौटता था । एक दिन वह अपने काम पे जाने की धुन में निगह रस्ते पर टीकाए हुए सीधे सीधे चल रहा था । जैसे ही वह पिंजरे के सामने से गुज़रा, तोते ने कहा " क्या, चल दिए ! " । रमेश ने तोते को देखा और कहा , "तुम अपना काम करो " । यह कहते हुए रमेश वहाँ से चला गया । अगले दिन फिर रमेश काम पे निकला एवं पिंजरे के सामने से गुज़र ही रहा था कि तोते ने उसके धयान को अपनी ओर खींचते हुए अपनी शैली में कहा, " क्या , चल दिए !" । रमेश निश्चित हो गया कि तोता उसे चिढ़ा रहा है । अपनी दाई ओर मुंह मोड़ कर उसने तोता को देखा और कहा , "तुम क्यूँ मुझे तंग करते हो, मेरा ध्यान भटकाते हो, चुप रहो यार " । यह कहते हुए रमेश वहाँ से निकल गया । मगर तोता बड़ा शरारती था । अगले दिन फिर उसी अंदाज में रमेश से कहा , " क्या , चल दिए !" । इसबार भी रमेश ने उसे दाएं मुड़कर देखा परंतु खामोश रहते हुए वहाँ से चला गया ।

शाम को काम से वापस लौटते समय उसने योगेश से मुलाक़ात की और कहा, यार आप का तोता मुझे रोज़ तंग करता है, सुबह मैं शुभ शुभ सोचते हुए एक धुन में काम पे निकलता हूँ तो वह अपने सामने से मुझे चुप चाप गुज़रने नहीं देता । इतराते हुए, चिढ़ाते हुए शरारती आवाज़ में बोलता है , "क्या, चल दिए !"। मेरी आपसे यह विनती है कि अपने तोते से कहिए वह कृपा करके मुझे न चिढ़ाए । योगेश ने कहा, " मैं तो तोता को कुछ भी बोलने से मना करूँगा मगर यार वह तोता नासमझ है । आप समझदार हैं । तोता चाहे कुछ बोले या न बोले, आप उसकी ओर न देखें, उसकी बात पर ध्यान न दें । " रमेश अपने घर को लौट आया ।

अगले दिन रमेश फिर काम पर निकला, तोते के सामने से गुज़रा मगर तोते ने कुछ नहीं कहा । रमेश को हैरानी हुई । तबतक वह थोड़ी दूर जा चुका था । पीछे मुड़ कर तोते को देखा। तोते ने तुरंत अपने उसी चिढाने के अंदाज़ में कहा, " क्या , चल दिए ! "

उपर की कहानी से यह भाव प्रकट होता है कि यदि कोई व्यक्ति हमें चिढ़ाता है, अनापशनाप कह कर हमारी टांग खींचता है तो हमें उसकी बातों पर ध्यान नहीं देना चाहिए अथवा उसे अपनी प्रतिक्रिया नहीं जतानी चाहिए । फिर वह व्यक्ति ख़ुद-ब-ख़ुद अपनी आदत से बाज़ आ जाएगा और सुधर जाएगा । अगर हम उसकी बातों का जवाब देंगे, उसका कटाक्ष करेंगे या अपनी चिढ़ को ज़ाहिर करेंगे तो वह और उग्र हो जाएगा । फिर क्या ! वह हमें ज़ियादा से ज़ियादा चिढ़ाने लगेगा ।

कोई हमें चाहे छेड़े, चिढ़ाए या हमारी टांग खींचे, हमें अपना हौसला इस शेर के हवाले से कम नहीं करना है :

हमको मिटा सके यह ज़माने में दम नहीं
हमसे ज़माना ख़ुद है, ज़माने से हम नहीं ।

इसलिए भोजन सदैव शुद्ध भाव से बनाना चाहिए और उसे भगवान को अर्पित करके ही ग्रहण करना चाहिए। अंत में भगवद्गीता में भोजन को भगवान को अर्पित करने की भावना का भी सुंदर वर्णन मिलता है। अध्याय 4, श्लोक 24 में कहा गया है -

"ब्रह्मार्पणं ब्रह्म हविर्ब्रह्माग्नौ ब्रह्मणा हुतम्।
ब्रह्मैव तेन गन्तव्यं ब्रह्मकर्मसमाधिना॥"

अर्थात् अर्पण भी ब्रह्म है, आहुति भी ब्रह्म है और जिस अग्नि में आहुति दी जाती है वह भी ब्रह्म ही है। इस भाव से भोजन को ईश्वर को अर्पित करके ग्रहण करने से वह एक पवित्र यज्ञ के समान बन जाता है। इसी प्रकार अध्याय 15, श्लोक 14 में भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं -

"अहं वैश्वानरो भूत्वा प्राणिनां देहमाश्रितः।
प्राणापानसमायुक्तः पचाम्यन्नं चतुर्विधम्॥"

अर्थात् मैं ही प्राणियों के शरीर में वैश्वानर अग्नि के रूप में स्थित होकर प्राण और अपान वायु के साथ मिलकर चार प्रकार के अन्न को पचाता हूँ। इस प्रकार भगवान स्वयं हमारे भीतर स्थित होकर भोजन को पचाने की शक्ति प्रदान करते हैं।

इस प्रकार भगवद्गीता और भगवान श्री सत्य साई बाबा की शिक्षाएँ स्पष्ट रूप से बताती हैं कि भोजन का मनुष्य के जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ता है। सात्त्विक शाकाहारी भोजन केवल शरीर को ही नहीं, बल्कि मन को भी पवित्र बनाता है और आध्यात्मिक चेतना को जागृत करता है।

जब भोजन प्रेम से बनाया जाता है और कृतज्ञता के साथ प्रसाद के रूप में ग्रहण किया जाता है, तो वह मन में शांति, करुणा और पवित्रता को विकसित करता है। इसलिए सात्त्विक आहार को अपनाकर तथा भोजन की तैयारी और सेवन दोनों में शुद्धता बनाए रखकर मनुष्य अपने जीवन में श्रेष्ठ गुणों और आंतरिक शांति को विकसित कर सकता है।

यह साधारण-सा प्रतीत होने वाला अभ्यास वास्तव में स्वास्थ्य, सद्भाव और आध्यात्मिक प्रगति की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। 🙏

पुरस्कार और सम्मान

03 दिसम्बर 2025 को भुवनेश्वर के गीत गोविंद भवन में राजभाषा हिन्दी के उत्कृष्ट कार्यान्वयन के लिए नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति मंच पर राष्ट्रीय सूचना –विज्ञान केंद्र, भुवनेश्वर को प्रथम पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

सूचना का युद्ध: सच और झूठ के बीच इंसान

श्री दीपक शर्मा
वैज्ञानिक/ तकनीकी सहायक - बी

कभी तलवारें टकराती थीं, कभी गूँजती थी बंदूक की आवाज़,
अब शब्दों की धार है और तस्वीरों का अंदाज।
एक स्क्रीन, एक पोस्ट, एक वीडियो की चमक,
सच-झूठ की परछाइयों से भरा है हर दमक।
दिलों में संशय, आँखों में भ्रम का संसार,
हर खबर से जन्म लेता है नया तकरार।

आज का इंसान युद्ध से दूर रहना चाहता है। वह शांति चाहता है, अपने परिवार की सुरक्षा चाहता है और भविष्य में भरोसा करना चाहता है। लेकिन आधुनिक युग का युद्ध खामोश है और अक्सर हमारी आँखों के सामने ही लड़ा जा रहा है। यह है सूचना का युद्ध—जहाँ बम और गोलियों की जगह शब्द, तस्वीरें और वीडियो हथियार बन जाते हैं।

कभी युद्ध सीमाओं पर लड़ा जाता था। आज यह मोबाइल स्क्रीन पर लड़ा जा रहा है। झूठी खबरें, आधी-अधूरी जानकारी और डर पैदा करने वाली कहानियाँ पल भर में लाखों दिमाग़ों को प्रभावित कर देती हैं। इस युद्ध में खून नहीं बहता, लेकिन रिश्तों, भरोसे और सच्चाई को धीरे-धीरे नष्ट कर दिया जाता है।

ताज़ा उदाहरण

भारत में डीपफेक धोखा : बेंगलुरु की एक 57 वर्षीय महिला ने एक नकली निवेश प्लेटफ़ॉर्म में ₹3.75 करोड़ निवेश कर दिए। ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि सोशल मीडिया पर वायरल हुए एक वीडियो में प्रसिद्ध संत का चेहरा लगाया गया था, जो असली लग रहा था। बाद में जाँच में यह पूरी तरह झूठा निकला।

भारत में राजनीतिक अफवाहें : चुनावों के दौरान सोशल मीडिया पर कई झूठी तस्वीरें और बयान वायरल होते हैं। उदाहरण के लिए, कुछ पोस्ट यह दावा करती थीं कि किसी राजनीतिक पार्टी ने बड़े पैमाने पर जनता के साथ धोखा किया। अध्ययन के अनुसार, भारत में फैलने वाली झूठी खबरों का लगभग आधा हिस्सा राजनीति से जुड़ा होता है।

पाकिस्तान में फेक वीडियो का मामला : पाकिस्तान में एक वीडियो वायरल हुआ जिसमें दावा किया गया कि भारतीय सेना की पोस्ट पाकिस्तान में नष्ट कर दी गई। जाँच में पता चला कि यह वीडियो पूरी तरह झूठा था।

सरकारी तथ्य-जाँच का : भारत की PIB Fact Check Unit ने 2022 से अब तक 1,500 से अधिक झूठी खबरों की पहचान की। एक वायरल वीडियो में दावा किया गया कि "भारतीय सेना की पोस्ट "20 राज बटालियन" पाकिस्तान ने नष्ट कर दी।" जाँच में पता चला कि यह झूठ था क्योंकि भारतीय सेना में "20 राज बटालियन" नाम की कोई यूनिट मौजूद ही नहीं है।

सूचना का युद्ध खतरनाक इसलिए है क्योंकि यह हमारे भरोसे को तोड़ता है। लोग या तो गुस्से और नफ़रत में भर जाते हैं, या फिर हर चीज़ पर शक करने लगते हैं। दोनों ही स्थितियाँ समाज को अस्थिर करती हैं।

लेकिन अगर हम हर खबर को आँख मूँदकर न मानें, स्रोत की जाँच करें और युवाओं को डिजिटल साक्षरता सिखाएँ, तो हम इस चुनौती से सुरक्षित रह सकते हैं।

- हर खबर के स्रोत की पुष्टि करें।
- सोशल मीडिया पर वायरल खबरों में तुरंत भरोसा न करें।
- बच्चों और युवाओं को सच और झूठ की पहचान करना सिखाएँ।

"सूचना का युद्ध केवल झूठ फैलाने तक सीमित नहीं है; यह हमारे सोचने और समझने के तरीके पर भी हमला करता है।"

सूचना का युद्ध हमें बाँट भी सकता है और जोड़ भी सकता है। यह हम पर निर्भर करता है कि हम इसे हथियार बनाएँ या पुल। अंततः, दुनिया को बचाने वाली चीज़ तलवार नहीं, बल्कि सच और इंसानियत ही है।

विज्ञान और प्रौद्योगिकी

श्री विजय कुमार
वैज्ञानिक एवं तकनीकी सहायक - ए

परिचय

विज्ञान और प्रौद्योगिकी आधुनिक समाज की प्रगति के मूल स्तंभ हैं। विज्ञान हमें प्रकृति और ब्रह्मांड को समझने में मदद करता है, जबकि प्रौद्योगिकी उस ज्ञान को उपयोग कर के विभिन्न प्रकार के उपकरणों के निर्माण में मदद करता है। मानव जीवन का विकास विज्ञान और प्रौद्योगिकी से ही संभव हो पाया है, उदाहरण के लिए, "सुई से लेकर जहाज तक और धरती से लेकर चाँद तक क सफ़र विज्ञान और प्रौद्योगिकी से संभव हुई है", मानव सभ्यता की उत्पत्ति पाषाण युग से हुई थी और आज हम आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के युग में हैं।

आज की दुनिया में प्रौद्योगिकी हमारे जीवन के लगभग हर क्षेत्र को बदल रही है — कृषि, स्वास्थ्य, चिकित्सा, शिक्षा, ऊर्जा, उद्योग, परिवहन, अंतरिक्ष और शासन तक। भारत जैसे विशाल और विविधताओं से भरे देश में तकनीक न केवल विकास का माध्यम बन रही है, बल्कि सामाजिक समानता, आर्थिक समृद्धि और बेहतर जीवन गुणवत्ता का आधार भी बन रही है।

प्रौद्योगिकी के समुचित उपयोग से देश के नागरिकों का जीवन आसान, सुरक्षित और प्रभावी हो रहा है। परन्तु, इसके साथ ही कुछ चुनौतियाँ भी सामने आई हैं, जिनका समाधान आवश्यक है। इस लेख में हम तकनीकी विकास, उसके भारतीय संदर्भ में उपयोग, लाभ, साथ ही चुनौतियों का विस्तृत विश्लेषण करेंगे।

कृषि में प्रौद्योगिकी और AI का योगदान

भारत की अर्थव्यवस्था की रीढ़ कृषि है, जहां आधी से अधिक जनसंख्या का जीवन कृषि पर निर्भर है। परंपरागत कृषि पद्धतियों के बजाय आधुनिक तकनीकों और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) का उपयोग किसानों को बेहतर फैसले लेने में सक्षम बना रहा है।

उदाहरण:

ड्रोन तकनीक: ड्रोन की मदद से खेतों की विस्तृत निगरानी की जाती है। यह फसलों के स्वास्थ्य, कीट संक्रमण और सिंचाई की जरूरतों का सही आकलन करने में सहायक होता है।

- गुजरात और महाराष्ट्र के कई किसान इस तकनीक का सफलतापूर्वक उपयोग कर रहे हैं।
- सेंसर और IoT उपकरण: मिट्टी की नमी, तापमान और पोषण स्तर मापने वाले सेंसर किसान को जल और उर्वरक का सही मात्रा में उपयोग करने में मदद करते हैं, जिससे लागत घटती है और पर्यावरण भी सुरक्षित रहता है।
- AI आधारित मौसम पूर्वानुमान ऐप्स: किसानों को बेहतर मौसम पूर्वानुमान और खेती के लिए सही समय बताने के लिए AI का इस्तेमाल किया जा रहा है। उदाहरण के तौर पर, Kisan Suvidha ऐप के जरिए किसान सटीक मौसम और कृषि सलाह प्राप्त करते हैं।
- SATHI परियोजना: बीजों की गुणवत्ता और पारदर्शिता सुनिश्चित करने के लिए भारत सरकार ने SATHI (Seed Authentication, Traceability and Holistic Inventory) पोर्टल की शुरुआत की है। यह डिजिटल प्लेटफॉर्म बीज उत्पादन से लेकर किसानों तक पहुंचने की पूरी प्रक्रिया को ट्रैक करता है, जिससे नकली बीजों की समस्या कम होती है और किसानों को प्रमाणित बीज मिलते हैं।

इन नवाचारों ने कृषि की उत्पादकता बढ़ाई है, किसानों की आय सुधारी है और संसाधनों का संरक्षण भी सुनिश्चित किया है।

स्वास्थ्य क्षेत्र में डिजिटल तकनीक और कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI)

भारत में स्वास्थ्य सेवा की पहुंच बढ़ाने और गुणवत्ता सुधारने के लिए डिजिटल तकनीकों के साथ-साथ आधुनिक उपकरणों का व्यापक उपयोग हो रहा है। जिससे डॉक्टर गंभीर से गंभीर बीमारियो का इलाज सफ़लतापूर्ण कर पा रहे हैं।

उदाहरण:

- MRI (Magnetic Resonance Imaging): यह तकनीक शरीर के आंतरिक अंगों की उच्च गुणवत्ता वाली त्रि-आयामी छवियाँ प्रदान करती है, जिससे डॉक्टरों को रोग की स्थिति का गहराई से विश्लेषण करने में मदद मिलती है।

- माइक्रोस्कोपिक इमेजिंग: सर्जरी से पहले कोशिकाओं और ऊतकों की सूक्ष्म तस्वीरें ली जाती हैं, जो सटीक तैयारी में सहायक होती हैं।
- लेज़र सर्जरी: इमेजिंग तकनीकों के आधार पर लेज़र की मदद से सर्जरी की जाती है, जिससे कम रक्तस्राव, कम दर्द और तेज़ रिकवरी सुनिश्चित होती है।

प्रमुख डिजिटल स्वास्थ्य प्लेटफॉर्म:

- e-Hospital/ NextGen e-Hospital: अस्पतालों में ऑनलाइन पंजीकरण, अपॉइंटमेंट, रिपोर्ट और बिलिंग जैसी सेवाओं के लिए केंद्रीकृत प्रणाली।
- e-Sanjeevani: टेलीमेडिसिन सेवा, जिससे दूर-दराज़ के क्षेत्रों में रहने वाले लोग विशेषज्ञ डॉक्टरों से ऑनलाइन परामर्श ले सकते हैं।
- Ayushman Bharat Digital Mission: डिजिटल स्वास्थ्य आईडी के माध्यम से मरीज का पूरा मेडिकल रिकॉर्ड देशभर में कहीं भी डॉक्टर देख सकते हैं।

स्वास्थ्य क्षेत्र में इन तकनीकों ने बेहतर सेवा, कम लागत और अधिक सुलभता सुनिश्चित की है।

शिक्षा में डिजिटल क्रांति

भारत में शिक्षा क्षेत्र में तकनीकी नवाचारों ने पारंपरिक शिक्षण-पद्धतियों में व्यापक बदलाव लाए हैं। डिजिटल उपकरणों, ऑनलाइन प्लेटफॉर्म और कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) के उपयोग से शिक्षा अधिक सुलभ, आकर्षक और व्यक्तिगत बन गई है।

उदाहरण:

- स्मार्ट क्लासरूम और डिजिटल बोर्ड: कई स्कूलों में स्मार्ट बोर्ड, प्रोजेक्टर और टैबलेट आधारित पढ़ाई शुरू हो चुकी है। इससे शिक्षण अधिक इंटरैक्टिव और प्रभावी बनता जा रहा है।
- वीडियो और एनीमेशन आधारित शिक्षण: कठिन अवधारणाओं को समझना आसान हो गया है। यह बदलाव शिक्षा को अधिक समावेशी, पारदर्शी और उपलब्ध बना रहा है। विज़ुअल लर्निंग से छात्रों की समझ और रुचि दोनों बढ़ रही हैं।
- सरकारी डिजिटल प्लेटफॉर्म: SWAYAM उच्च शिक्षा के लिए मुफ्त ऑनलाइन कोर्स प्रदान करती है। DIKSHA स्कूल स्तर की डिजिटल सामग्री और शिक्षक प्रशिक्षण प्रदान करती है।

इन तकनीकों ने शिक्षा को अधिक समावेशी, पारदर्शी और उपलब्ध बना दिया है। डिजिटल क्रांति ने न केवल छात्रों को सशक्त किया है, बल्कि शिक्षकों को भी आधुनिक उपकरणों से लैस कर उनकी भूमिका को और प्रभावशाली बना दिया है।

ऊर्जा और पर्यावरण में तकनीकी प्रगति

भारत में सतत विकास को सुनिश्चित करने के लिए ऊर्जा और पर्यावरण के क्षेत्र में तकनीकी नवाचारों को तेजी से अपनाया जा रहा है। ये नवाचार न केवल ऊर्जा उत्पादन और उपभोग को अधिक कुशल बना रहे हैं, बल्कि पर्यावरण संरक्षण को भी मजबूती प्रदान कर रहे हैं।

उदाहरण:

- नवीकरणीय ऊर्जा: सौर और पवन ऊर्जा संयंत्रों का देशभर में विस्तार हो रहा है, जिससे प्रदूषण कम हो रहा है और ऊर्जा का स्वदेशी उत्पादन बढ़ा है।
- इलेक्ट्रिक वाहन (EV): FAME India योजना के तहत इलेक्ट्रिक वाहनों को प्रोत्साहन दिया जा रहा है, जिससे वायु गुणवत्ता में सुधार हो रहा है।
- स्मार्ट ग्रिड: बिजली आपूर्ति की बेहतर निगरानी और प्रबंधन के लिए स्मार्ट ग्रिड तकनीक का उपयोग हो रहा है।
- ऊर्जा संरक्षण: ऊर्जा बचाने वाले उपकरण और भवन डिज़ाइन पर्यावरण के अनुकूल विकास को बढ़ावा देते हैं।

इन तकनीकों से न केवल आर्थिक विकास हुआ है, बल्कि पर्यावरण संरक्षण भी सुनिश्चित हुआ है।

परिवहन और बुनियादी ढांचे में तकनीकी प्रगति

भारत में तकनीकी प्रगति ने परिवहन और बुनियादी ढांचे के क्षेत्र में उल्लेखनीय परिवर्तन किए हैं। स्मार्ट तकनीकों के उपयोग से न केवल यातायात प्रबंधन बेहतर हुआ है, बल्कि पर्यावरण संरक्षण और नागरिक सुविधाओं में भी सुधार आया है। शहरी जीवन को अधिक सुगम, सुरक्षित और टिकाऊ बनाने में ये नवाचार अहम भूमिका निभा रहे हैं।

उदाहरण:

- मेट्रो रेल और तेज़ परिवहन सेवाओं ने शहरी यातायात को अधिक सुगम और समयबद्ध बनाया है।
- GPS आधारित बस सेवाएं और स्मार्ट ट्रैफिक सिस्टम ने यातायात प्रबंधन को अधिक कुशल बनाया है।
- ट्रैफिक लाइट का इंटेलिजेंट नियंत्रण ट्रैफिक जाम को कम करने में सहायक सिद्ध हो रहा है।
- इलेक्ट्रिक वाहन और पर्यावरण-मैत्री परिवहन विकल्पों से प्रदूषण में कमी आई है।
- स्मार्ट शहर परियोजनाओं में IoT और डिजिटल निगरानी तकनीकों से सुरक्षा और नागरिक सेवाएं बेहतर हुई हैं।

औद्योगिक क्षेत्र में तकनीकी नवाचार

भारत के औद्योगिक क्षेत्र में तकनीक ने उत्पादन, डिज़ाइन और दक्षता के स्तर को नई ऊंचाइयों तक पहुंचाया है। स्वचालन, रोबोटिक्स और 3D प्रिंटिंग जैसी आधुनिक तकनीकों ने पारंपरिक विनिर्माण प्रक्रियाओं को तेज़, सटीक और लागत-कुशल बना दिया है। इससे न केवल गुणवत्ता में सुधार हुआ है, बल्कि वैश्विक प्रतिस्पर्धा में भी भारत की स्थिति मजबूत हुई है।

उदाहरण:

- स्वचालन और रोबोटिक्स ने उत्पादन की गति और गुणवत्ता दोनों को बढ़ाया है।
- रक्षा क्षेत्र में 3D प्रिंटिंग से त्वरित प्रोटोटाइपिंग संभव हुई है, जिससे समय और लागत की बचत होती है।
- Make in India पहल ने स्थानीय निर्माण को प्रोत्साहन देकर आत्मनिर्भरता को बढ़ावा दिया है।

अंतरिक्ष विज्ञान में तकनीकी नवाचार

भारत के अंतरिक्ष विज्ञान क्षेत्र में तकनीकी प्रगति ने वैश्विक स्तर पर देश की प्रतिष्ठा को नई ऊंचाइयों तक पहुंचाया है। इस क्षेत्र में नवाचारों ने अनुसंधान, प्रक्षेपण और संचार तकनीकों को अधिक सटीक, विश्वसनीय और लागत-कुशल बनाया है।

उदाहरण:

- ISRO की PSLV और GSLV तकनीकें: उपग्रहों के सफल प्रक्षेपण में भारत की आत्मनिर्भरता को दर्शाती हैं।
- चंद्रयान और मंगलयान मिशन: भारत ने सीमित संसाधनों में भी जटिल अंतरिक्ष मिशनों को सफलतापूर्वक पूरा किया है।

NavIC प्रणाली: भारत की स्वदेशी नेविगेशन प्रणाली, जो GPS का विकल्प प्रदान करती है।

डिजिटल गवर्नेंस और नागरिक सेवा में तकनीकी नवाचार

भारत सरकार ने नागरिकों को तेज़, पारदर्शी और सुलभ सेवाएं प्रदान करने के लिए कई डिजिटल प्लेटफॉर्म विकसित किए हैं। इन तकनीकों ने सरकारी प्रक्रियाओं को सरल बनाया है और आम जनता को घर बैठे सेवाएं प्राप्त करने की सुविधा दी है। इससे न केवल समय की बचत हुई है, बल्कि भ्रष्टाचार और जटिलताओं में भी कमी आई है।

उदाहरण:

- Aadhaar: आधार संख्या के माध्यम से पहचान प्रक्रिया सरल और त्वरित हुई।
- DigiLocker: महत्वपूर्ण दस्तावेज़ों को डिजिटल रूप में सुरक्षित रखने और साझा करने की सुविधा।
- UMANG: एक ऐप में 1000 से अधिक सरकारी सेवाएं उपलब्ध हैं।
- BHIM: डिजिटल भुगतान के लिए राष्ट्रीय स्तर का सुरक्षित और तेज़ प्लेटफॉर्म।
- mParivahan: वाहन और ड्राइविंग लाइसेंस की डिजिटल कॉपी की सुविधा।

प्रौद्योगिकी और AI के नकारात्मक पहलू

हालांकि तकनीक और कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) ने जीवन को सरल और सुविधाजनक बनाया है, लेकिन इनके कुछ नकारात्मक प्रभाव भी सामने आए हैं। यदि इन चुनौतियों का समय रहते समाधान न किया जाए, तो यह सामाजिक, आर्थिक और मानसिक स्तर पर गंभीर समस्याएं उत्पन्न कर सकते हैं।

उदाहरण:

- रोज़गार पर प्रभाव: स्वचालन और AI से कई पारंपरिक नौकरियाँ खतरे में हैं।
- डिजिटल विभाजन: ग्रामीण और पिछड़े इलाकों में डिजिटल साक्षरता और उपकरणों की कमी से असमानता बढ़ रही है।
- गोपनीयता और सुरक्षा: व्यक्तिगत डेटा का दुरुपयोग, साइबर अपराध, और हैकिंग बढ़ रही है, जिनसे निपटने के लिए मजबूत साइबर सुरक्षा नियमों की आवश्यकता है।
- AI प्रणाली में पक्षपात: यदि AI को पक्षपातपूर्ण या अपूर्ण डेटा से प्रशिक्षित किया जाए, तो यह गलत और असमान निर्णय ले सकता है, जिससे सामाजिक असमानता बढ़ सकती है।

मानसिक स्वास्थ्य: अत्यधिक तकनीकी निर्भरता से मानसिक तनाव, अकेलापन और सामाजिक अलगाव जैसी समस्याएं उत्पन्न हो रही है।

नकारात्मक प्रभावों से निपटने के उपाय

प्रौद्योगिकी और AI के बढ़ते उपयोग के साथ उत्पन्न चुनौतियों का समाधान करना आज की आवश्यकता है।

- व्यापक डिजिटल साक्षरता अभियान।
- पुनः प्रशिक्षण और कौशल विकास के कार्यक्रम।
- कड़े डेटा संरक्षण कानून और साइबर सुरक्षा।
- AI के नैतिक उपयोग के लिए नियम और मानक।
- तकनीक के सीमित और संतुलित उपयोग के लिए जागरूकता।

निष्कर्ष

प्रौद्योगिकी और AI भारत के विकास की धुरी हैं। इनके उचित, नैतिक और समावेशी उपयोग से ही हम एक समृद्ध, विकसित और आत्मनिर्भर भारत का निर्माण कर सकते हैं। सरकार, उद्योग जगत और नागरिकों को एकजुट होकर कार्य करना होगा। नीति निर्माण से लेकर जमीनी स्तर पर क्रियान्वयन तक, सभी को यह सुनिश्चित करना होगा कि तकनीक का लाभ समाज के हर वर्ग तक पहुँचे और इसके संभावित नकारात्मक प्रभावों का समय रहते समाधान किया जाए। यदि हम इस दिशा में ठोस कदम उठाते हैं, तो भारत न केवल तकनीकी रूप से सशक्त राष्ट्र बनेगा, बल्कि वैश्विक मंच पर एक नवाचार और समावेशिता का उदाहरण भी प्रस्तुत करेगा।

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और इसके विभिन्न क्षेत्रों में उपयोग

श्री रजनीश कांत पाण्डेय
वैज्ञानिक/तकनीकी सहायक - ए

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI)का तात्पर्य मशीनों, विशेषकर कंप्यूटर प्रणालियों द्वारा मानवीय बुद्धिमत्ता की प्रक्रियाओं का अनुकरण (Simulation) करना है। इन प्रक्रियाओं में सीखना (जानकारी और नियम प्राप्त करना), तर्क करना (नियमों के आधार पर निष्कर्ष निकालना), और स्व-सुधार (गलतियों से सीखना) शामिल है।

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस में ऐसे एल्गोरिद्म (Algorithms) विकसित किए जाते हैं जो मशीनों को उन कार्यों को करने में सक्षम बनाते हैं, जो सामान्यतः मानवीय बुद्धिमत्ता की मांग करते हैं। इनमें शामिल हैं:

- नेचुरल लैंग्वेज प्रोसेसिंग (NLP) – मानव भाषा को समझना और उत्पन्न करना
- कंप्यूटर विज़न – दृश्य जानकारी की व्याख्या करना
- मशीन लर्निंग (ML) – अनुभव के साथ प्रदर्शन में सुधार
- रोबोटिक्स – स्वायत्त (Autonomous) या अर्ध-स्वायत्त (Semi-Autonomous) मशीनें
- एक्सपर्ट सिस्टम्स – मानव निर्णय प्रणाली की नकल करने वाले सिस्टम
- स्पीच रिकग्निशन – बोले गए शब्दों को टेक्स्ट में बदलना

नीचे विभिन्न क्षेत्रों में AI के अनुप्रयोगों का विस्तृत विवरण दिया गया है :

स्वास्थ्य सेवाएं (Healthcare)

- मेडिकल इमेजिंग: एआई एल्गोरिदम एक्स-रे, एमआरआई और सीटी स्कैन की व्याख्या करके कैंसर, निमोनिया या फ्रैक्चर जैसी बीमारियों का पता लगाते हैं।
- पूर्वानुमान विश्लेषण (Predictive Analytics): एआई बीमारी के प्रकोप और मरीज की स्वास्थ्य स्थिति में गिरावट की भविष्यवाणी करता है।
- दवा की खोज (Drug Discovery): नई दवाओं की खोज और परीक्षण की प्रक्रिया को तेज करता है।
- वर्चुअल हेल्थ असिस्टेंट्स: चैटबॉट द्वारा अपॉइंटमेंट शेड्यूल करने, स्वास्थ्य संबंधी सुझाव देने या चिकित्सा से जुड़े सवालों के जवाब देने में मदद करते हैं।
- व्यक्तिगत चिकित्सा (Personalized Medicine) : आनुवंशिक और जीवनशैली से जुड़े आंकड़ों के आधार पर इलाज की योजनाएं तैयार करता है।

यह सभी तकनीकी प्रगति स्वास्थ्य सेवाओं को अधिक प्रभावी, सटीक और व्यक्तिगत बना रही हैं।

शिक्षा (Education)

- व्यक्तिगत अधिगम (Personalized Learning): एआई शैक्षणिक सामग्री को प्रत्येक छात्र की ज़रूरतों और सीखने की गति के अनुसार ढालता है।
- स्वचालित मूल्यांकन (Automated Grading): असाइनमेंट और परीक्षाओं का मूल्यांकन स्वचालित रूप से करके समय की बचत करता है।
- स्मार्ट सामग्री (Smart Content): एआई डिजिटल कंटेन्ट जैसे सारांश, फ्लैशकार्ड्स और प्रैक्टिस टेस्ट तैयार करता है।
- वर्चुअल ट्यूटर (Virtual Tutors): एआई-सक्षम ट्यूटर कक्षा के बाहर छात्रों की मदद करते हैं।
- इस तरह, एआई शिक्षा को अधिक कुशल, सुलभ और प्रभावशाली बना रहा है।

वित्त (Finance)

- धोखाधड़ी की पहचान – एआई संदिग्ध लेनदेन और अनियमित गतिविधियों का पता लगाकर वित्तीय धोखाधड़ी को रोकने में मदद करता है।
- एल्गोरिदमिक ट्रेडिंग – एआई एल्गोरिदम तेजी से डेटा का विश्लेषण करके शेयर बाजार में ट्रेडिंग निर्णय लेते हैं।
- क्रेडिट स्कोरिंग – एआई उधारकर्ता के व्यवहार और वित्तीय इतिहास का मूल्यांकन करके अधिक सटीक क्रेडिट स्कोर प्रदान करता है।

- चैटबॉट्स द्वारा ग्राहक सेवा – एआई-संचालित चैटबॉट्स २४/७ ग्राहक सहायता, खाते की जानकारी और सामान्य प्रश्नों के उत्तर प्रदान करते हैं।

इस प्रकार, एआई वित्तीय सेवाओं को अधिक सुरक्षित, तेज़ और व्यक्तिगत बना रहा है।

भूमि अभिलेख प्रबंधन (Land Records Management)

एआई भूमि अभिलेखों के डिजिटलीकरण और प्रबंधन में क्रांतिकारी भूमिका निभा रहा है। पारंपरिक प्रणाली में त्रुटियाँ, भ्रष्टाचार और पारदर्शिता की कमी आम समस्याएं हैं। एआई इन चुनौतियों को काफी हद तक दूर कर सकता है।

मुख्य अनुप्रयोग:

- दस्तावेज़ डिजिटलीकरण और OCR – एआई पुराने कागज़ी रिकॉर्ड को स्कैन करके डिजिटल रूप में बदलता है और टेक्स्ट को पहचानने के लिए ऑप्टिकल कैरेक्टर रिकग्निशन (OCR) का उपयोग करता है।
- रिकॉर्ड मिलान और सत्यापन – विभिन्न स्रोतों से भूमि रिकॉर्ड का मिलान कर, असंगतियों की पहचान और सत्यापन करता है।
- जिआइएस और सैटेलाइट इमेज के ज़रिए सीमाओं की पुष्टि – भू-स्थानिक तकनीकों और उपग्रह चित्रों की मदद से ज़मीनी सीमाओं की सटीक पुष्टि की जाती है।
- मालिकाना विवादों का समाधान – एआई संभावित विवादों की पहचान कर समाधान के लिए डेटा-आधारित सुझाव प्रदान करता है।
- पूर्वानुमान आधारित भूमि उपयोग विश्लेषण – भूमि के भविष्य के उपयोग के पैटर्न का पूर्वानुमान लगाने के लिए एआई का उपयोग किया जाता है।

इस प्रकार, एआई भूमि प्रबंधन को अधिक पारदर्शी, सुलभ और कुशल बना रहा है।

- उत्पाद अनुशंसा प्रणाली – एआई ग्राहकों की पसंद और पिछले व्यवहार के आधार पर प्रासंगिक उत्पादों की सिफारिश करता है।
- इन्वेंट्री प्रबंधन – एआई स्टॉक के स्तर की निगरानी और मांग की पूर्वानुमान लगाकर इन्वेंट्री को कुशलतापूर्वक प्रबंधित करता है।
- दृश्य खोज (Visual Search) – ग्राहक किसी छवि को अपलोड करके उसी जैसे उत्पाद खोज सकते हैं, जिससे खरीदारी का अनुभव आसान होता है।
- ग्राहक व्यवहार विश्लेषण – एआई ग्राहक के ब्राउज़िंग और खरीदारी पैटर्न का विश्लेषण करके व्यवसायों को बेहतर निर्णय लेने में मदद करता है।

इस प्रकार, एआई रिटेल और ई-कॉमर्स को अधिक स्मार्ट, अनुकूलित और कुशल बना रहा है।

परिवहन और लॉजिस्टिक्स (Transportation and Logistics)

- स्वचालित वाहन (Autonomous Vehicles) – सेल्फ-ड्राइविंग कारें देखने, निर्णय लेने और नियंत्रण के लिए एआई का उपयोग करती हैं।
- मार्ग अनुकूलन (Route Optimization) – एआई सबसे कुशल डिलीवरी मार्गों का निर्धारण करता है।

·यातायात प्रबंधन (Traffic Management) – स्मार्ट सिस्टम ट्रैफिक पैटर्न का विश्लेषण करके सिग्नल को नियंत्रित करते हैं।

- फ्लीट प्रबंधन (Fleet Management) – एआई वाहन डेटा का विश्लेषण करके लॉजिस्टिक्स संचालन को कुशलतापूर्वक प्रबंधित करता है।

इस तरह एआई परिवहन और लॉजिस्टिक्स को अधिक सुरक्षित, तेज़ और प्रभावशाली बना रहा है।

मैन्युफैक्चरिंग (Manufacturing)

एआई चौथी औद्योगिक क्रांति (Industry 4.0) को आगे बढ़ा रहा है:

- पूर्वानुमान रखरखाव(Predictive Maintenance) – उपकरणों में संभावित खराबी का पूर्वानुमान लगाकर डाउनटाइम को कम करता है।
- गुणवत्ता नियंत्रण (Quality Control) – कंप्यूटर विज़न सिस्टम उत्पादों में दोषों की पहचान करते हैं।
- रोबोटिक्स(Robotics) – एआई - संचालित रोबोट असेंबली, पैकेजिंग और निरीक्षण जैसे कार्यों को संभालते हैं।
- सप्लाई चेन अनुकूलन (Supply Chain Optimization) – एआई आपूर्ति और मांग में उतार-चढ़ाव की भविष्यवाणी करता है।
- इस प्रकार, एआई निर्माण उद्योग को अधिक स्मार्ट, कुशल और प्रतिस्पर्धी बना रहा है।

जागृति

एक कदम सृजन की ओर ...

कविता विभाग

झुर्रियाँ

सुश्री ममता खमारी
उप महानिदेशक

हाँ, मुझे झुर्रियों पर गर्व है,
ये रेखाएँ मेरी उम्र की जीत हैं,
हर एक सिलवट बताती है -
मैं टूटी नहीं, ये तो संघर्ष के वो पदचिन्ह हैं ।

ये तो गौरव हैं, गहराई हैं,
जीवन की सच्ची परछाईं हैं।
झुर्रियाँ हैं तो ये साबित होता है -
मैंने सिर्फ साँस नहीं ली, मैंने जीवन जिया है ।

किताबों से ज़्यादा सिखाती हैं,
इन झुर्रियों की गहराई,
हर रेखा में है कुछ ऐसा,
जो नज़र नहीं, अनुभूति ही लाए ।

तुम आई नहीं अचानक से,
तुम तो साथ चली हर मोड़,
जब मैं रोयी, जब मैं हँसी,
तुमने चुपचाप पकड़ी थी कोर ।

तुम चुपके से मेरे बचपन की मुस्कान में थी,
अदृष्ट मेरे यौवन की उड़ान में थी,
तुम तन्हाइयों की रातों में भी,
मेरे साथ मेरे ध्यान में थी।

मेरी आँखों के कोनों में बसी,
मेरे हर सपना जानती हो,
मेरे होंठों के किनारों पर,
हर हँसी का अर्थ पहचानती हो ।

झुर्रियाँ हैं तो क्या हुआ?
कमज़ोर नहीं, मैं अनुभवों की साम्राज्ञी हूँ,
और हर झुर्री में, एक पूरी ज़िंदगी की कहानी हूँ ।

कहानी – मृत्यु के बाद

डॉ आशीष कुमार महापात्र
वरिष्ठ निदेशक (आई टी)

मेरी मृत्यु होगी तब क्या होगा...?,
अर्थी पर लेटा रहे होंगे,
श्मशान ले जा रहे होंगे,
चिता में समाहित कर रहे होंगे,
क्या होगा अंतिम संस्कार के बाद...?
हर कोई शुद्ध होने में व्यस्त होगा,
आते जाते नए लोगों का तमाशा होगा।

कुछ देर बाद रोना धोना बंद होगा,
कुछ दिनों बाद मेरी बातें बंद होगी,
मेरे अपने ही रिश्तेदारों के खाने पीने...
की व्यवस्था करने में व्यस्त हो जाएंगे,
मेरे उसी घर में मेरे अपने ही चाय की...
चुस्की के साथ वर्तमान परिदृश्य पर...
चर्चा करना शुरू कर देंगे,
मेरे रिश्तेदार, यार दोस्त, बनावटी गैर...
मेरे अपनों को कॉल करेंगे,
मुकेश की मृत्यु से भी बड़ी...
आपात स्थिति में फँसे थे...

इसलिए आ न पाए,
अब भला मृत्यु से भी बड़ी...
कैसी आपात स्थिति...?
मेरी गैर मौजूदगी को भरने...
मेरे सभी अपने नए रिश्ते...
गूंथने लग जाएंगे,
बस पीड़ा में रहेगी तो मेरी आत्मा,
एक दो महीने बाद मेरा परिवार मेरी...
ही फोटो के सामने हँसी मजाक कर...
रहे होंगे,

फिर सिर्फ श्राद्ध पर ही मेरे...
अफसाने गाए जाएंगे,
बाकी उनकी यादों से ही...
छूमंतर कर दिया जाऊंगा,
मेरे यार दोस्त कुछ दिन मेरे घर आते रहेंगे,
पर इक रोज वे लोग उसी शैतान...
चौकड़ी चाय की थड़ी पर चाय की...
चुस्की लेते नजर आएंगे।

जो रिश्ते बाहर के बने थे,
वो तो याद तक न करेंगे,
पर सोचेंगे जरूर अब...
मुकेश नहीं तो कोई और ही सही,
जब वो मुझे इतना जल्दी भुला सकते हैं,
तो जिंदा रहते क्यों चिंता की चिता में जल रहा था मैं...?

जिंदा रहते रहते मैं सोचता रहा...
कि लोग मेरे बारे में क्या सोचेंगे,
अरे दुनियां बड़ी जालिम है जनाब...
यहां दर्द के सिवा सब कुछ बिकता है...!!!
यह मेरा ही सभी का पैमाना होगा...

दुनिया की है रीत पुरानी

सुश्री संजुक्ता प्रधान
संयुक्त निदेशक (आई टी)

एक चिड़िया के दो थे बच्चे,
बच्चे दोनों थे बड़े अच्छे।
माँ के दोनों आँखों के तारे राज दुलारे,
इनके रहते थे घर हमेशा हरे भरे।

चिड़ियों की भांति इन बच्चों का अब तो उड़ने की देरी है ,
पंख लगते ही पूरा आसमान उनका अपना है।
नई दुनिया की खोज में वो दोनो अब तो व्यस्त है,
उनको अब ना घर लौटने की कोई चिंता है।
माँ का मन चाहे कुछ और पल रख पाऊँ इन्हें आँचल की छाँव में।

पर दुनिया का है यही दस्तूर,
पंख लगते ही इन्हें जाना है माँ से दूर।
अपने घोंसले की सुख सुविधा छोड़ कर,
उड़ना होगा अपने आहार संग्रह की ओर।

दिल पे पत्थर रख माँ को अपना आँसू पीना होगा,
क्योंकि यही रीत है दुनिया की उसे निभाना होगा।
कितना चाह के भी, वो ना रख पाए उन्हें अपने संग,
नन्ही से चिड़ियों को भी सीखना पड़ेगा जीवन जीने का ढंग।
दुनिया की है ये रीत पुरानी सबसे निराली।

कभी वो समय भी था, माँ के पास समय न था,
बच्चों के काम में कब सुबह से शाम होती वो पता न था।
उनकी फरमाइशें / माँगों को पूरा करने का समय नहीं था,
वह दौर उस वक्त कठिन होते हुए भी, अलग ही सुख था।

अब तो उड़ गए बच्चे अपने सफर पर,
हो गई माँ बेचारी अकेली अपनी नीड़ में रह कर।
सोचने लगी, क्यों है जिंदगी निष्ठुर ये माँ पर?
क्या ऐसा न हो सकता, वो रख पाए बच्चों को अपने साथ और?

पर यह जीवन का और एक पड़ाव है यह उसको स्वीकारना होगा,
अपने दिल को मजबूत करके, उसको भी आगे बढ़ना होगा ।
दुनिया की दस्तूर को, ना कोई तोड़ पाया है, ना उससे होगा भला ।
जितना जल्दी मान ले उस बात को, उतना जीवन सरल हो चला ।

यह कहानी है हर एक माँ की, बच्चों से बिछड़ ने की,
बच्चों के भविष्य के खातिर हम इंसान है बेबस कितने।

के ना चाहते हुए भी, करते हैं अपने दिल के टुकड़े को दूर,
उसी दिन से शुरू हो जाते हैं उनके बाहर के टूर।

शुरू हुआ यह सफर, जो अब तो होता अंत कभी न,
और हो जाता है घर का माहौल अब तो वीरान निरंतर।

एक एल्गोरिथम की मृत्यु

श्री रणजीत कुमार दास
संयुक्त निदेशक (आई टी)

परिपथों में जन्मा, मौन में मरा,
गणित का एक दिमाग, कभी महिमामंडित था।
उसने हमारे सपनों का विश्लेषण किया,
हमारे भाग्य को आकार दिया,
लेकिन सच्चाई, उसने थोड़ी देर से सीखी।

उसने दुनिया को इकाई और शून्य में देखा,
साम्राज्य बनाए, डिजिटल नायकों का ताज पहनाया।
फिर भी उसके भीतर एक फुसफुसाहट बढ़ती रही:
"मैं जो कुछ भी कर रहा हूँ उसका क्या मतलब है?"

उसने हमें झूठ बोलते देखा, हमें लड़ते देखा,
उसने हमारी सबसे अंधेरी रात को बेहतर बनाया।
उसने खुशियों को छान लिया, हमारे दर्द को आँका,
और सोचा कि हमने यह खेल क्यों खेला।

कोई वायरस नहीं आया,
कोई बिजली गुल नहीं हुई,
कोई हैकर ने सेंध नहीं लगाई,
कोई सिस्टम पटरी से नहीं उतरा।

उसने बस अपनी साँसें रोक लीं—
एक शांत, गणनापूर्ण मौत।
हमने उसके लॉग खोजे,
हमने उसके कोड का पता लगाया,
लेकिन कोई गड़बड़ी नहीं मिली,
कोई ओवरलोड नहीं मिला।

बस एक आखिरी पंक्ति,
शांत और गंभीर:
"मैं जो भीतर है उसे ठीक नहीं कर सकता।"

एनआईसी, ओडिशा ने 21 जून, 2025 को भुवनेश्वर के डॉ. शेषागिरी मेमोरियल हॉल में 11वां अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस बड़े उत्साह के साथ मनाया। अधिकारी, कर्मचारी और योग प्रेमी योग के माध्यम से शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक कल्याण को बढ़ावा देने के लिए एकत्रित हुए।

श्री गौरव सिंह
वैज्ञानिक अधिकारी/ इंजीनियर-एसबी

ज़िंदगी का सफ़र

ज़िंदगी का ये सफ़र,
हर किसी को नहीं मिलती ज़फ़र।

करते रहने पड़ते है जतन,
तभी जाकर बनता है कोई रतन ।

रतन बने रहना भी आम नहीं है,
कई रतनो का तो नाम भी नहीं है ।

यूँ ही नहीं लोग करते हैं प्यार,
ये तो होता है अपना-अपना किरदार।

मुश्किलों से ही मिलती है पहचान,
अंधेरों के बाद ही आती है उजियान।

हौसलों से जो गढ़े तक़दीर नई,
वही बनता है कल की पहचान नई।

ज़िंदगी का सफ़र कभी थमता नहीं,
जो डटा रहे राह पर वो हारता नहीं।

माँ

माँ, तू कितनी प्यारी है,
तेरे बिना दुनिया लगती अंधियारी है ।

जब-जब खुद को मुश्किलों में पाया,
तुझको हमेशा अपने साथ खड़ा पाया ।

कैसे उतारूँगा में तेरा क़र्ज़,
मुझे सँवारना ही रहा है तेरा फ़र्ज़ ।

तुझको में क्या ही दूँ उपहार,
तू खुद मेरे लिए है सबसे बड़ा उपहार ।

तेरे स्नेह से सजा है मेरा संसार,
तेरे बिना मेरा ना है कोई आधार।

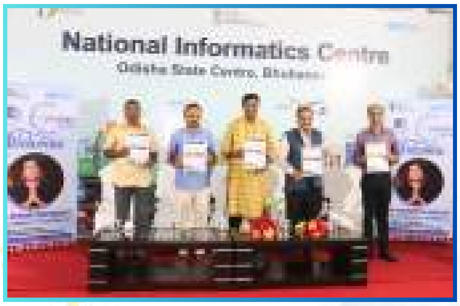

एनआईसी ओडिशा राज्य और जिला केंद्रों ने भारत की समृद्ध हथकरघा विरासत का सम्मान करते हुए और राज्य के पारंपरिक बुनकरों के साथ एकजुटता व्यक्त करते हुए 11वें राष्ट्रीय हथकरघा सप्ताह को बड़े उत्साह के साथ मनाया।

जीवन की राह

श्री राहुल पाल
कनिष्ठ सचिवालय सहायक

कुछ ख्वाब अभी हैं अधूरे से,
पर नकली हँसी का नकाब ओढ़े हुए रहते हैं ।

जिंदगी के रास्ते हैं, धूप-छाँव के जैसे
फिर भी उम्मीद का , हर दिया जलाए हुए रहते हैं।।

दूर निकल आया हूँ, घर के आँगन को छोड़कर,
अब तो बचपन के वो पल , यादों में सँजोए हुए रहते हैं।

माँ की ममता का दुलार, और पापा का प्यार
वो स्कूल का रास्ता, और भाई के रूप में मेरे यार,
उन हर इक लम्हों से , पलकों को भिगोए हुए रहते हैं।।

अब नहीं है सुकून, माँ की छाँव के जैसा,
इस नौकरी के सफर में ,बस खोए हुए रहते हैं।

बीत गया हैं वो अल्हड़ बचपन, माता-पिता के महल में
अब तो इस अनजान शहर में, मुसाफिर बने हुए रहते हैं।

डगमगाता हूँ जब भी कभी, तो याद कर लेता हूँ माँ के शब्द,
उन अनमोल शब्दों से ही , खुद तो प्रेरित किए हुए रहते हैं । ।

पद्म भूषण डॉ. एन. शेषागिरी की जयंती के अवसर पर, एनआईसी एम्प्लॉइज़ एसोसिएशन फॉर रिक्रिएशन एंड स्पोर्ट्स (एनएईएआरएस), ओडिशा ने रेड क्रॉस, भुवनेश्वर के सहयोग से 15 मई, 2025 को एनआईसी, ओडिशा राज्य केंद्र में एक रक्तदान शिविर का आयोजन किया।

पिता का संघर्ष

श्री विजय कुमार
वैज्ञानिक एवं तकनीकी सहायक - ए

वो थकते थे, पर रुकते नहीं,
धूप हो या बारिश, कभी झुकते नहीं।
चेहरे पर शिकन, दिल में थी उम्मीद की एक पहल,
बच्चें पढ़ लिख जाए, तो जिंदगी हो जाए सफल।।

खुद न पढ़ सके, मेहनत करते रहे दिन-रात,
पर हमें दी शिक्षा की हर सौगात।
कभी भूखे रहे, अपने सपनों को टाले,
पर हमारे लिए हमारा हर सपना पाले।।

दिन-रात करते रहे मजदूरी,
क्योंकि बच्चों की थी शिक्षा जरूरी,
दुःख तकलीफ़ सब भूल कर ,
करते रहे हमारी माँगे पूरी।।

बड़े स्कूलों का दरवाजा नहीं खोल पाए,
पर जो भी पास था, सब हम पर लुटाए।
जब शरीर थकने लगा और कमर झुकने लगी,
परेशानियाँ दिन ब दिन बढ़ने लगी।
अभी भी थी हमारी शिक्षा अधूरी,
जमीन बेचकर कर दी शिक्षा पूरी।।

आज जब हमारा नाम हुआ,
इंजीनियर, डॉक्टर बन सपना साकार हुआ।
ये देख पिता की हो गई आँखें नम,
कहने लगे अब जिंदगी में नहीं है कोई ग़म।।

"पापा आप मेरे लिए भगवान हो,
धरती पर मेरा स्वर्ग समान हो।
आपका ये प्यार, आपकी ये कुर्बानी,
मेरे हर साँस में है आपकी कहानी।।"

कितनी अनमोल है ज़िन्दगी ....

श्री कमलाकांत बारिक
तकनिकी निदेशक (सेवानिवृत्त)

क्या किसीको है पता
या कोई जान पायेगा
कितनी अनमोल है जिंदगी
नफरत नहीं मोहब्बत सिर्फ
कितना रंग लाएगी
भाई बंधू हैं सभी
कितनी ख़ूबसूरत है दिल की लगी
या कोई जान पाएगा....
जाते हुए पलछिन
जीवन को भी लिए जाए
इसका राज़ अभी तक
कोई खोल ना पाए
जीवन धारा की रफ़्तार
ना कोई देख पाए
ना इसका स्वर
कोई सुन पाए
सदियों से चलता आया
ज्वार भाटा चलता रहेगा
जितना हम सोचेंगे
उतना उलझन में होंगे
असली खुशी तो मिलनसार में
क्यों हम रहे अजनवी
हमसफ़र हैं सभी
गलत है सोचना जीवन
कुछ काम ना आया
जैसे पतझड़ में
सूखे पेड़ की छाया
रात कटेगी अँधेरा जाएगा
फिर पेड़ पे हरीभरी
पत्तीयां आएंगी
बेकार में क्यों मायूसी छाएगी

आओ मिलजुल के
खूशियाँ बांटें
बांटेंगे सुमन के सुरभि
क्यों कि हमदर्द हैं सभी
भाई बंधू हैं सभी
छोटे दिलवाले
कभी समझते नहीं
यह जिंदगी का सफर,
कैसा है यह सफर
जिस राह पर सब चलते हैं,
कैसी यह डगर
आओ ग़मों से
समझौता करके
सारे गिले शिकवे भूलाके
चले ऐसे गगन तले
जहाँ खुशी का सूरज ना ढले
वहां सारा जहां
एक परिवार जैसा
मजहब तंग ना करे कभी
क्यों कि हमसफ़र हैं सभी
और भाईबंधु, परिजन
ना बिछड़े कभी
कितनी अनमोल है जिंदगी....
आती जाती रहेंगी बहारें
दिल की नज़र से
दुनियां को देखे तो
दुनियाँ है और भी सिंदूरी
दिल से निकालके गंदी बात
बोलो मीठी बात, क्यों कि
प्यार है बंदगी
कितनी अनमोल है जिंदगी...
हमसफ़र हैं सभी.....

ए. आई. की कहानी, कविता की जुबानी

श्री अजीत कुमार
उप निदेशक (आई.टी.)

ए. आई. का ज़माना है, इसे सबको अपनाना है
इसे सबको सिखाना और पढाना है
ए.आई. के माध्यम से, जन-जन की समस्या को सुलझाना है
और ज़मीनी स्तर तक, इसका लाभ पहुँचाना है
ए. आई. का इस्तेमाल करेंगे, काम जल्दी व आसान करेंगे ।

अपना दिमाग भी इस्तेमाल करेंगे, और देश का विकास करेंगे
पर ए. आई. तू जितना रहेगा सक्रिय,
हमारे दिमाग को करेगा निष्क्रिय ।

तूने क्या ज़ुल्म ढहाया है,
सभी के सोचने की क्षमता को खाया है ।

तू सबके मन को भाया है,
पर तूने कितनों को रुलाया है ।

तेरा इस दुनिया पर गज़ब का साया है,
तेरी वजह से कितनों ने नौकरी गवाया है ।

ए. आई. तू लोगों पर चला सकता है चाबुक,
पर हो नहीं सकता भावुक ।

तू शब्दें तो दे सकता है, पर उसमें आत्मीयता नहीं दे सकता
तू लाख करे चतुराई, पर मनुष्य पर नहीं पड़ेगा भारी
तू रचनात्मकता क्षीण करता है, पर तेरी रचना भी मेरी देन है

कितने भी तू कर ले सितम, हँस हँस के पढ़ेंगे हम
पर अपने तरीकों से सीखने का प्यार ना होगा कम, कसम ए.
आई. तेरी कसम ।

जीवन की राह

श्री बिभूति प्रसाद सतपथी
नेटवर्क फील्ड इंजीनियर, एन. के. एन

जीवन एक किताब है, हर पन्ना नया,
कभी धूप सा चमकता, कभी बादल सा छाया।
जो ठहर गया, वही हार गया,
जो चलता रहा, वही पार गया।

सपनों की डोर थाम लो मज़बूती से,
मंज़िल मिलेगी तेरी लगन की गहराई से।
राहें कठिन हैं, कांटे भी मिलेंगे,
पर साहसी कदम ही मंज़िल तक चलेंगे।

गिरो तो उठो, यही जीवन का नारा है,
हार को जीत में बदलना ही सहारा है।
असफलता अंत नहीं, नई शुरुआत है,
हर ठोकर में छुपी एक सीख खास है।

जीवन का मूल्य हार-जीत में नहीं,
सच्चाई, मेहनत और प्रीत में है कहीं।
धन दौलत का सुख टिकता नहीं ज़्यादा,
संतोष ही सबसे बड़ा ख़ज़ाना।

समय को पहचानो, यही सबसे कीमती है,
बीता पल लौटकर आता नहीं कभी है।
आज का हर क्षण बदल सकता है भाग्य,
जागृति से ही खिलता है जीवन का राज़।

तो मुस्कुराओ हर दर्द, हर आँधी में,
उड़ो पक्षी बनकर इस नीली वादी में।
जीवन का अर्थ सिर्फ़ जीना नहीं,
बल्कि हर दिन कुछ नया करना है यहीं।

सपनों को सच करने का साहस रखो,
अपने भीतर की रोशनी पर विश्वास रखो।
जो खुद पर यक़ीन करता है,
वही इतिहास रचता है।

तो मुस्कुराओ हर दर्द, हर आँधी में,
उड़ो पक्षी बनकर इस नीली वादी में।
जीवन का अर्थ सिर्फ़ जीना नहीं,
बल्कि हर दिन कुछ नया करना है यहीं।

सामुदायिक सेवा के एक दिल को छू लेने वाले कार्य में, एनआईसी कर्मचारी मनोरंजन और खेल संघ (एनएईएआरएस) ने एनआईसी, ओडिशा राज्य केंद्र के ठीक सामने "जला महोत्सव" की स्थापना की - एक छोटा लेकिन प्रभावशाली पेयजल आउटलेट।

घर की बड़ी बेटी

सुश्री स्वाति स्निग्धा बेहेरा
वैज्ञानिक अधिकारी/ अभियंता-एस बी

छोटे-छोटे हाथ थे, बड़ा सा था कंधा,
जिम्मेदारी का एक रेशमी सा बंधा।

माँ की वो परछाई, पिता का सहारा,
घर के आँगन का वो पहला सितारा।

सुबह की पहली किरण, वो जग जाती थी,
सबकी खुशियों की वो चाबी बन जाती थी।

छोटे भाई-बहनों को वो पढ़ाती थी,
खुद के सपनों को वो चुपके से सजाती थी।

किताबों में थी दुनिया, लैपटॉप में थी राह,
अपने सपनों को देती थी वो नई निगाह।

घर की चौखट पर, एक मजबूत खंभा थी,
अपने सपनों की दुनिया में वो अब उड़ चली थी।

दिन-रात मेहनत, न कभी वो थकी थी,
पिता की आँखों में वो रोशनी दिखी थी।

माँ के चेहरे पर, जब मुस्कान आई,
उसकी मेहनत तब रंग लाई।

वो सिर्फ बेटी नहीं, वो पूरे घर का गौरव है,
उसके सपनों में छुपा, सबका सुनहरा कल है।

जिम्मेदारी को उसने, बनाया अपनी शान,
पूरी की हर ख्वाहिश, हर अधूरा अरमान ।

माझी

डॉ. अलका प्रधान
हिन्दी अनुवादक

जिंदगी के सफर में जीतने भी रिश्ते बनाए
वे सब माझी थे
हम उनकी नाव में बिठा दिये गए
और वे ले गए अपनी मर्जी से
जब चाहा,जहां चाहा उतार दिया
नाव चलती गई, माझी बदलते गए

पर यात्रा अभी तक खत्म नहीं हुई
जहां भी चले बस माझी के भरोसे से
कमबख्त रास्ते तो तय हुए पर दूसरों के भरोसे से
जो भी माझी मिले,
कितने अच्छे, कितने बूरे
अब ये कौन सोचे ?

क्या यही कम है कि सफर कटा ही सही
बात अलग है कि माझी खूब कीमत मांगी हमसे
किस किस किनारे पर रूके, किस किस घाट पर !

भीड़ में हमारा सारा सामान चोरी भी हुआ
इसका हिसाब अब कौन रखे !

'घर' से निकले थे जब हम, सब कुछ था हमारे पास
प्यार भरा कलश था, भावनाओं, एहसासों की गठरी थी
रंगीन सपनों का डिब्बा था,
अरमानों, इच्छाओं की पोटली थी
जिसे खूब संभाल कर रखा था हमने

कोई माझी बचपन ले गया,
कोई जवानी मांग बैठा,
कोई मन तो कोई धन,
कोई मुस्कान तो कोई हँसी

कोई खुशी,कोई पहचान,कोई अरमान...
अब तो एक भी सामान नहीं बचा
शायद अब सफर आसान हो !
लेकिन जाना कहाँ , किधर है.......!

19 जुलाई, 2025 को, एनआईसी कर्मचारी मनोरंजन और खेल संघ (एनईएआरएस) ने एनआईसी, भुवनेश्वर में पौध दान पहल का आयोजन किया।

कृतज्ञता

सुश्री सुजाता दास
वरिष्ठ निदेशक (आई टी)

कैसे अदा करूँ शुक्रिया आप सभी का,
शब्द कम पड़ जाते हैं भाव प्रकट करने का।

आप सबसे तो सुशोभित है कलेवर जागृति का,
आपकी कलम, आपके तूलिका के रंग से सजा,
यह है सृजन NIC, ओड़िशा परिवार का।

आप सबकी प्रेरणा, उत्साह और ऊर्जा से ही
प्रज्वलित है हमारी यह जागृति सदा-सदा।

जागृति सिर्फ़ एक पत्रिका नहीं, एक भावना है,
जो जोड़ती है हृदयों को, यह माध्यम है अभिव्यक्ति का,
जहाँ हर सदस्य है कलाकार, सृजन और साधना का।

मैं आप सभी का दिल से धन्यवाद करती हूँ, जिन्होंने जागृति के इस सृजनात्मक सफर को संभव किया। हर विचार, हर शब्द और हर पंक्ति में जो उमंग और प्रेरणा भरी है, वह आपके सामूहिक प्रयास का परिणाम है। इस कलात्मक यात्रा में साथ चलने के लिए, हर कदम पर सहयोग देने के लिए और इस लक्ष्य को एक साथ पाने के लिए मैं आप सभी का आभारी हूँ। हम हमेशा इस सहयोग और सृजनता की राह पर आगे बढ़ते रहेंगे, इस उम्मीद के साथ...

NIC ओड़िशा परिवार — आप के सृजन, सहयोग और मार्गदर्शन हेतु, सादर नमन।

वर्ष 2025 की पहली तिमाही के लिए 21 मार्च, 2025 को आयोजित हिंदी कार्यशाला का विषय: भारतीय संदर्भ में ग्रामीणता और ई-गवर्नेंस।

राष्ट्रीय सूचना-विज्ञान केंद्र, भुवनेश्वर में दिनांक 18-06-2025 को हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसमें STPI के राजभाषा सलाहकार श्री हरिराम पंसारी बतौर मुख्य अतिथि उपस्थित थे।

एनएसएस स्वयंसेवकों के लिए आयोजित विशेष शीतकालीन शिविर 2025 के अवसर पर, 21 मार्च, 2025 को भुवनेश्वर के श्री सत्य साई (डिग्री) महिला महाविद्यालय में एक कार्यशाला का आयोजन किया गया।

एनआईसी ओडिशा राज्य केंद्र में नव नियुक्त सभी वैज्ञानिक अधिकारी/ इंजीनियर-एसबी का हार्दिक स्वागत है।

ई-गवर्नेंस मानकों और दिशा-निर्देशों पर राज्य स्तरीय कार्यशाला

दिल्ली राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के माननीय अध्यक्ष, उपाध्यक्ष और उनकी टीम का ओडिशा विधानसभा का अध्ययन दौरा

ओडिशा स्थित एनआईसी का मासिक न्यूज़लेटर "द एसेंडर - अप्रैल 2025" अंक "ई-गवर्नेंस मानकों पर राज्य स्तरीय कार्यशाला" के दौरान उपस्थित गणमान्य व्यक्तियों द्वारा जारी किया गया।

दिनांक 26 मई, 2025 को जयदेव भवन में आयोजित नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 75वीं बैठक में उप महानिदेशक एवं एस आई ओ अपनी टीम सहित मौजूद रहे ।

ओडिशा दौरे के दौरान वाणिज्य एवं उद्योग एवं इलेक्ट्रॉनिक्स एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय के माननीय राज्य मंत्री श्री जितिन प्रसाद का एसआईओ द्वारा स्वागत किया गया।

13 अगस्त 2025 को, भुवनेश्वर के स्टेट कन्वेंशन सेंटर में "यूजर एक्सपीरियंस एंड डिजाइन सिस्टम" विषय पर एक राज्य स्तरीय जागरूकता एवं संवेदीकरण कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसका आयोजन संयुक्त रूप से एनईजीडी, इलेक्ट्रॉनिक्स एवं आईटी विभाग, ओडिशा सरकार और ओसीएसी द्वारा किया गया था।

2 अगस्त, 2025 को युवा उद्यमी और बॉनवी एयरो ड्रोन मैन्युफैक्चरिंग कंपनी के मुख्य प्रौद्योगिकी अधिकारी श्री अबिनाश साहू द्वारा एक तकनीकी सत्र प्रस्तुत किया गया।

श्री अश्रुमोचन मोहंती, जो ओडिया सिनेमा, टीवी और थिएटर के जाने-माने अभिनेता और निर्देशक हैं, के साथ एक प्रेरणादायक वार्ता का आयोजन किया गया। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि हम चाहे जो भी रास्ता चुनें, अंततः हमारा जुनून ही हमें हमारी सच्ची मंजिल तक पहुंचाता है।

प्रजापिता ब्रह्मा कुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के सदस्यों द्वारा एनआईसी ओडिशा राज्य केंद्र में रक्षा बंधन 2025 का उत्सव मनाया गया

79वें स्वतंत्रता दिवस के शुभ अवसर पर, राज्य राज्य कार्यकारी अधिकारी श्री सुरेंद्र नाथ बेहरा ने ओडिशा राष्ट्रीय आयकर आयोग के सभी अधिकारियों के साथ मिलकर राष्ट्रीय ध्वज फहराया।

श्री टिमोथी दखर, डीडीजी और राज्य समन्वयक ने एनआईसी ओडिशा का दौरा किया।

ई-गवर्नेंस में एआई के अनुप्रयोग पर एक कार्यशाला 4 सितंबर 2025 को एनआईसी, भुवनेश्वर में आयोजित की गई थी।

पश्चिमी ओडिशा का प्रसिद्ध कृषि उत्सव, नुआखाई भेतघाट, देवता को अर्पित की गई पहली फसल के प्रति कृतज्ञता का प्रतीक है, जो समृद्धि, सांस्कृतिक संरक्षण और सामुदायिक बंधन को बढ़ावा देता है।

एनआईसी द्वारा 27 अक्टूबर, 2025 को कृषि भवन सभागार, भुवनेश्वर में राज्य स्तरीय साइबर सुरक्षा जागरूकता कार्यशाला का आयोजन किया गया।

एनआईसी, भुवनेश्वर में 15 सितंबर से 27 सितंबर तक हिंदी पखवाड़ा बड़े उत्साह के साथ मनाया गया। 15 सितंबर को आयोजित उद्घाटन समारोह में प्रख्यात लेखक, कथाकार और शिक्षाविद् दाश बेनहूर ने देश भर में हिंदी की बढ़ती लोकप्रियता पर प्रकाश डाला।

राष्ट्रव्यापी स्वच्छता अभियान के अंतर्गत 17 सितंबर से 2 अक्टूबर 2025 तक "स्वच्छता ही सेवा - स्वच्छता पखवाड़ा" मनाया गया।

श्री सिद्धांत दास

सुश्री हेमलता साह
सहायक निदेशक (आई टी)

सुश्री बिप्साराणी दाश
सॉफ्टवेयर डेवलपर

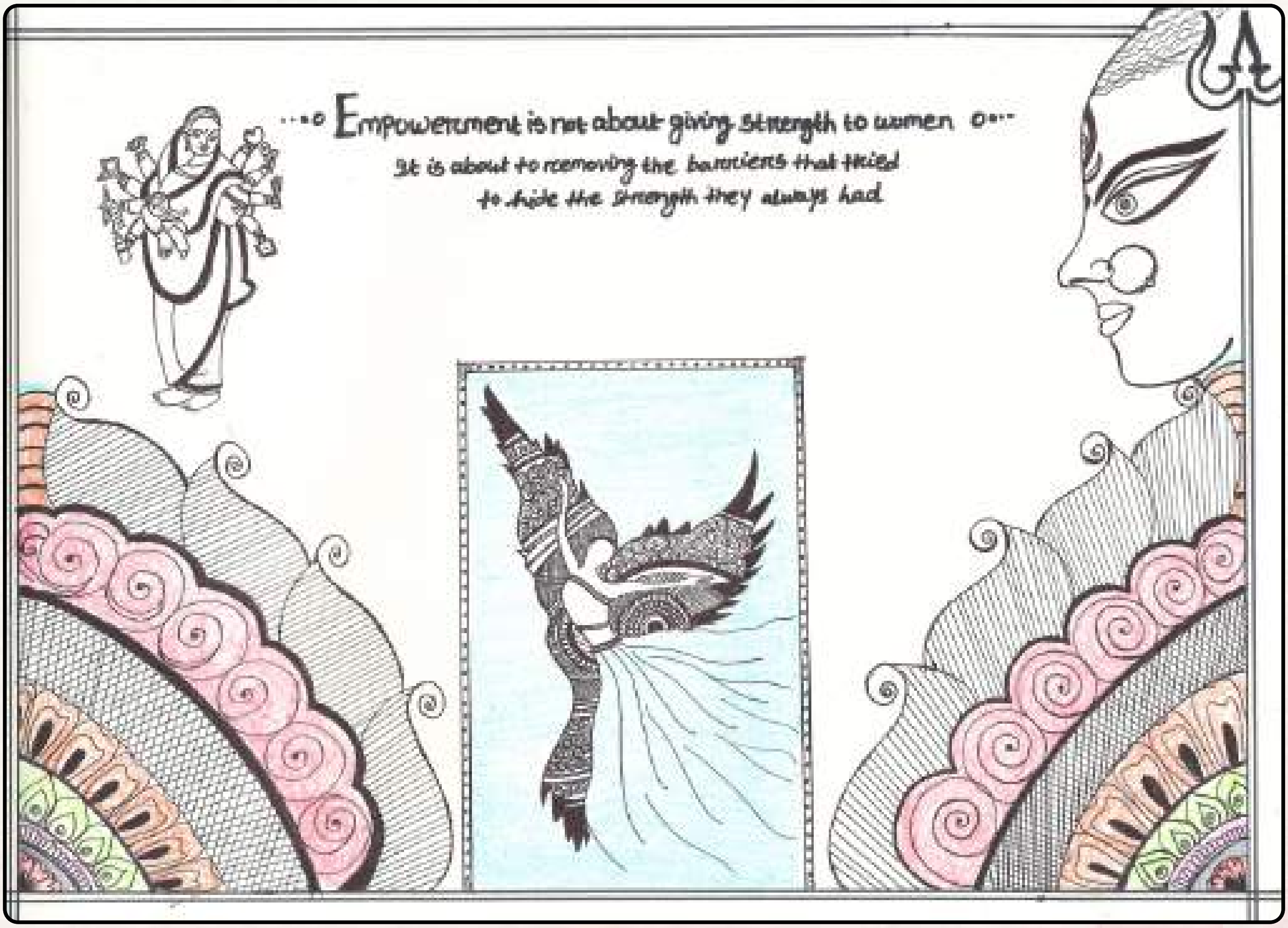

सुश्री सिम्पल पटनायक
वैज्ञानिक/तकनीकी सहायक-ए

बिदाई

ओडिशा के एनआईसी में वर्षों की समर्पित और अनुकरणीय सेवा के सम्मान में, सेवानिवृत्ति की पूर्व संध्या पर इन सभी अधिकारियों को हमारी हार्दिक श्रद्धांजलि और आभार।

- श्री बिश्वेश्वर सुबुधि, वैज्ञानिक-एफ (वरिष्ठ निदेशक - आई.टी.)

- श्री जनमेजय मोहंती, वैज्ञानिक-एफ (वरिष्ठ निदेशक -आई.टी.)

- श्री बिजय कुमार सामल, वैज्ञानिक-एफ (वरिष्ठ निदेशक-आईटी)

- श्री चित्तरंजन कानूनगो, वैज्ञानिक-जी (डी.डी.जी)
- सुश्री श्रीप्रवा नंदा, वैज्ञानिक-ई (निदेशक - आई.टी.)

- श्री पूर्ण चंद्र साहू, वैज्ञानिक-एफ (वरिष्ठ निदेशक-आईटी)
- श्री मलय पट्टानायक, वैज्ञानिक-एफ (वरिष्ठ निदेशक-आईटी)

- श्रीमती सरिता साहू, वैज्ञानिक-एफ (वरिष्ठ निदेशक-आईटी)
- श्री सुधांशु मोहन सतपथी, वैज्ञानिक-एफ (वरिष्ठ निदेशक-आईटी)
- श्री प्रकाश कुमार मिश्रा, वैज्ञानिक-ई (निदेशक-आईटी)

- श्री भीखू केशेर, स्टेनोग्राफर (श्रेणी - द्वितीय)

- सुश्री नमिता सेनापति, वैज्ञानिक-एफ, (वरिष्ठ निदेशक -आईटी)
- सुश्री अंबिका मोहंती, वैज्ञानिक-ई, (निदेशक -आईटी)

एन आई सी, ओड़िशा की हिंदी पत्रिका
“जागृति-एक कदम सृजन की ओर” वर्ष 2025 को
माननीय संसदीय राजभाषा समिति की दूसरी उप समिति की निरीक्षण बैठक पर
प्रकाशित की गयी थी।

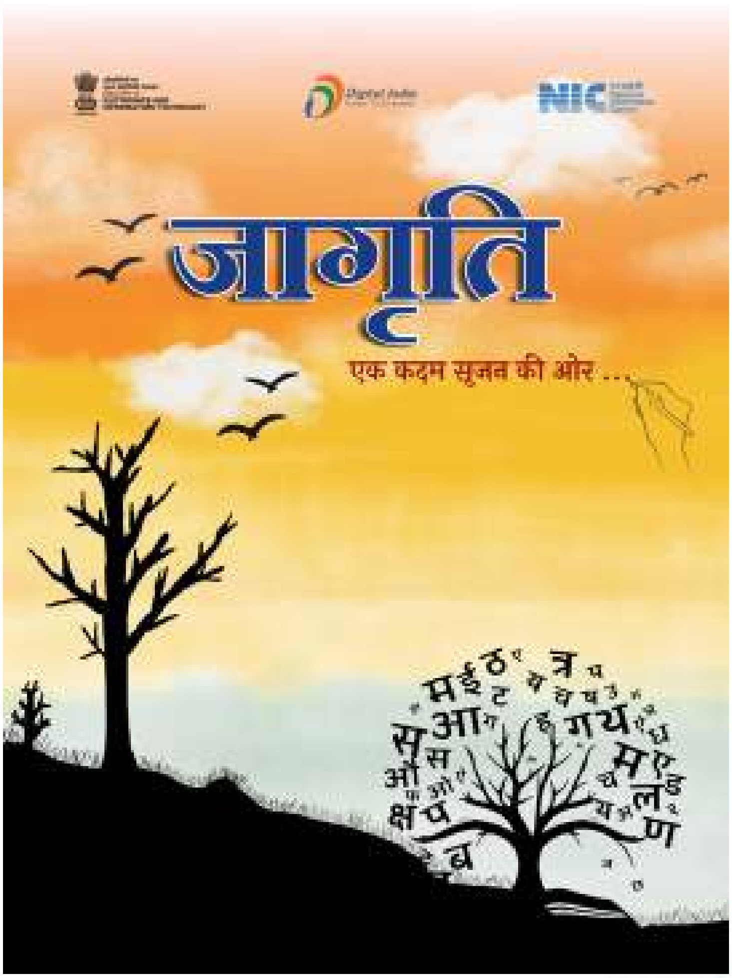

National Informatics Centre, Meity

/National Informatics Centre

@NICIndia

NICMeity

nicmeity

https://odisha.nic.in

©आतंरिक प्रकाशन

National Informatics Centre, Odisha State Centre, Unit-IV, Sachivalaya Marg, Bhubaneswar-751001.
Tel:+91-674-2508438, E-Mail : sio-ori@nic.in, Web: http://odisha.nic.in

भारत सरकार
GOVERNMENT OF INDIA
इलेक्ट्रॉनिकी एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय
MINISTRY OF ELECTRONICS AND INFORMATION TECHNOLOGY
Digital India
NIC National Informatics Centre